



# रुपए की कहानी

लेखक

धनश्यामदास बिडला

पारसनाथ सिंह

१९४६

मस्ता माडित्य मण्डल

नई दिल्ली

प्रकाशक

मातण्ड उपाध्याय, मंत्री

सस्ता साहित्य मण्डल नई दिल्ली।

दूसरी बार १९४६

मूल्य

तीन रुपए

मुद्रक

अमरघट्ट

राजहंस प्रेस, दिल्ली।

## समर्पण

काई तान माल की बान ह गाधीजी न मूलस कहा 'हिन्दी में हूँ ही और चलण पर एक एमी मरन पुस्तक लिखी जा हर काई भासानी स समझ सके । उमा भाणा का फल यह पुस्तक ह ।

सारी कहानी ११ हिस्सा में मुताई गई ह । जब लिखना गुरु किया था तब ता साचा था कि पूव भाग भीमासा का होगा और उत्तर भाग रुपए की हूँ ही का इतिहास होगा, और मारा-का-मारा स्वयं म ही लिखूंगा । पर मामामा भाग समाप्त करते-करत जब इतिहास भाग के लिए मसासा इकट्ठा करन लगा तब स्मरण आय कि 'पत्रेशन आफ इंडियन चेम्बर्स आफ कामस एण्ड इंडस्ट्री' क नत्वावधान में श्री पारसनाथजी ने कुछ साल पहले रुपए की हूँ ही का एक अच्छा इतिहास अग्रजी में लिखा था । इसलिए उपयुक्त यही लगा कि म श्री पारसनाथजी स कहूँ कि हम ग्रथ का इतिहास भाग भा वही लिख द और उसमें यथासम्भव आज तक की बाता का समावेश कर दें ।

इस तरह भीमामा भाग मन लिखा और इतिहास भाग श्री पारसनाथजी न ।

जिनकी भाणा स यह सब कुछ हुआ व ता पाठक क भीतर बल ह, इसलिए छपन क पहले इस गाधीजी की दिशा देना असम्भव था । उह बिना दिनाण ही यह छापाखान में जा रहा ह ।

गाधीजी की भाणा था कि इस जटिल विषय को सरल भाषा म लिखा जाय । हम दानो ने कोशिश ता यही की ह पर कहा तक सफलता मिलता ह यह ता पाठक ही बता सकेंग ।

जिनका भाणा स यह पुस्तक लिखी गई उन्ही महापुरुष क चरणों में यह समर्पित की जाती ह ।



## विषय-सूची

### पूर्व भाग : भीमामा

- |    |  |       |
|----|--|-------|
| १  | सिक्के की आवश्यकता—घटना-वर्षा की व्यवस्था से अनुविधा—सिक्का राजा न क्या चलाया ?—सिक्का सोन चादी का क्यों ? | १—१०  |
| २  | नोट क्यों आया ?—चक्र क्यों चला ?—नोट मलाम—नोट से हानि—राज-दुराजी में भरगिजना                               | ११—१८ |
| ३  | फुलावट और गिरावट—विस्तार और संकोच  | १९—२६ |
| ४  | द्रव्य-परिमाण-मन—द्रव्य की पगुता   | २५—३१ |
| ५  | बहु फुलावट क नतीज—फुलावट का कज पर असर—साम और हानि  | ३२—३७ |
| ६  | प्रतीक की कीमत और विष्णु बाजार—विष्णु में कीमत कैसे बनती है ?  | ३८—४४ |
| ७  | हुडी की दर और उद्योग-व्यवहार गिरन से साम स्यायी या अस्यायी ?—फुलावट-नियंत्रित और अनियंत्रित                | ४५—५६ |
| ८  | यूजक एक चलन की कीमत गिरती आई है  | ५५—५९ |
| ९  | इस कर से बचना असम्भव-सा है   | ६०—६३ |
| १० | उधार की फुलावट   | ६४—६६ |
| ११ | गिरावट अब वाछनीय है ?  | ६७—६९ |
| १२ | दामा की साम्यावस्था—नियंत्रण   | ७०—७३ |

### उत्तर भाग : इतिहास

- |   |                  |    |
|---|------------------|----|
| १ | घनेक की जगह एक   | ७७ |
| २ | बागी का परिष्कार | ९० |

३ सोने का ग्रहण	११२
४ आड से शिकार	१३२
५ लेन के देन	१५६
६ १८ पस का रुपया	१७७
७ इतिहास की पुनरावृत्ति	१९०
८ म ली की मार	२१०
९ स्टालिंग से गठबन्धन	२१७
१० गठबन्धन के बाद	२३१
११ रिजर्व बैंक की स्थापना	२४४
१२ साहूकार की समस्या	२५७
१३ सिंहावलोकन	२७७
परिशिष्ट	२८६

---

( पूर्व भाग )

मीमांसा





# रूप की कहानी

१

इस पुस्तक के नाम का मुन कर गायन किसी का यह खयाल हा कि यह चाचा के मित्र की कथा है जिसे मैं यहाँ बताया गया है कि चाची पहलू खाना में स कम निकली फिर कम गमनाई गई कम डमक पाव बन फिर टकसाल में कम रूपए लाए गए दयादि । बच्चों की चानबोपिनी में अक्सर एसी कथाएँ आनी है । पर यह इस पुस्तक का विषय नहीं है । इस पुस्तक का सम्बन्ध है रूपए की वर्गमात से ।

इसे मुन कर भी गायन का नाम पड । कौन है नावाकिफ रूपए का करामात से कि हमकी भी कतानी मिली जाय ? एसा बत कहना मुकता है । पर यह कयन अज्ञान का दानक ज्ञाना । रूपए की बाहरी ताकत से लाग चाह अनभिज्ञ न हों पर रूपए के पीछे कौन-सी शक्ति है जिसेने इस ताकत से इस बार में ग्राम उनता का जान बिनकुस अधूरा है ।

ज्याहुरगाय आम लाग ता यथा मानत है कि रूपए की कीमत स्थिर है । जिन्ना का दर चाट घट-बट पर रूपए का दर तो मुभर की तरह अचर है । यह कयन उतना ही सय है जितना कि यहाँ बहना कि 'पथ्वी अचर है । पथ्वी नहीं मूय चाट और तारे ही घुमन है । यदि पथ्वी घूमती ना गत के समय हमारे पाव ऊपर का छार और सर नीचे की छार होना ।' का नामान ही एसी नामानी की बात बत मुकता है । पर जस पथ्वी घूमता है कम है । रूपए की कीमत भी घटती और बढ़ती है ।

सन १९२६ २७ में बड जोर से एक आन्दोलन हुआ था कि रूपए की दर १ गिलिंग ६ पेंस निधारित न जाकर १ गिलिंग ४ पेंस निधारित हा । रूपए का दर के सम्बन्ध में इसी तरह का एक आन्दोलन सन १९१६ में भी बड जोर गोर के साथ चला था । उस समय सरकार ने १९० की दर

२ गिलिग निर्धारित की थी । प्रजा पक्ष व लोगो का कहना था कि यह दर ऊंची है, १ गिलिग ८ पस स ऊंची दर हगिज निर्धारित नहीं होनी चाहिए, इसमें ऊंची दर टिक नहीं मवेगी और ऊँची दर टिकान की कोणिग से देग को हानि है । हुमा भी अत में एसा ही, परकरोडा रुपए खो देन के बाद । इसके पहल भी एक आंदोलन १८६३ और फिर १८६८ के करीब इसी तरह दर के सम्बन्ध में चला था ।

यह रुपए की दर का भगडा क्या था? रुपएकी दर आबिरह क्या? कम इसकी निर्धारित दर को टिकाया जाता है? घटा बढी दर में क्योकर होती है? घटा बढी से हानि लाभ क्या है? क्या कोई घटा बढी व लिए जिम्मेदार है? कौन इसकी व्यवस्था करता है? ममाज में सिक्के का स्थान क्या है, और प्राचीन सिक्का प्रथा और अब की सिक्का प्रथा में क्या भेद है?

इन प्रश्नो के भ्रमेल में गायद कोई पडता ही नहीं । इस प्रश्न को जो समझना चाहत भी है वे यह मान कर सन्तोष करते है कि यह प्रश्न अथ शास्त्री ही समझ सकते है, यह चीज सबसाधारण के बूते के बाहर की है । फिर भी यह सही है कि रुपए की क्या जितनी रोचक है उतनी जटिल नहीं है । जटिल थोडी सी है तो अथ गायस्त्रिया ने बढी बढी पेचीदा शब्दमाला का प्रयाग करके इसे और भी जटिल बना दिया है । सीधी भाषा में लिखने से यह सम्भव है कि हम इस सरल बना दें ।

पहले पहल तो हम यह जानना चाहिए कि यह रुपया है क्या ?

‘भाई भलो न भैयो सबसे बडो रुपयो —एसा जध कोई कहता है तब तो रुपए के निश्चित मूल्य को ध्यान में रख कर यह उक्ति नहीं कही जाती । क्योकि रुपए की निश्चित निर्धारित मूल्य और “भयो भाई के बीच यहा तुलना नहीं है । यहा तो रुपए की धन का साधारण प्रतीक मान कर उसकी महिमा का बयानना है । और उस महिमा को शास्त्रीय विधि से समझन के लिए हम गहरे पानी में उतरना होगा, रुपए के सब पहलुमा पर विचार करना होगा और उन पहलुमो से क्या हानि लाभ है, समझना हागा ।

पर मेरा प्रस्ताव है कि सबसे पहल हम यह समझ लें कि सिक्के के

## रूप की कहानी

चरण की जन्म क्या है और कम-कम इसका व्यवस्था में प्रगति हुई।

### मिक्के की आयुष्मना

एक पल के लिए हम यह कल्पना करें कि एक एमा समाज है जिसमें मिक्का है ही नहीं और फिर एक धन मन में एक एमा नक्का खड़े जा हमें यह बनाव कि बिना मिक्क के उस समाज का राजमरा की खरीद पराज और जन-जन का व्यवहार कम चला। मान लीजिए कि एमे बमिक्के के समाज में एक मनुष्य के पास कुछ धन है और कुछ नए वस्त्र भी हैं। दूसरा समाज पडासी है। उसका पास कुछ वपाम है जो कुछ मुसा भी है। एक तीसरा समाज भी मुबह उठकर कुछ तरकारी और दूध खरी

दन के लिए निकलत है और यह और तरकारी बचनवाता के पास पहुँचत है। दूधवाता का एक ने कहा कि मर पास कुछ वपाम है उसे तुम से लो और वपाम में मुझे दूध दे दो। हमी तरकारी बचनेवाता ने इमने कहा कि कुछ तरकारी देना और वपाम में मुझे कुछ धन दे लो। पर तरकारी बचनेवाता और दूध बचनेवाता ने वपाम का न बपाम चाहिए। इमलिए वे या तो वपाम या धन में तरकारी और दूध का वपाम करन में इन्कार करेंगे, या दूध और तरकारी के वपाम में दूसरी ज्याजा मिन्गार अन्न और वपाम की माँग कि पास से मज्जन बिना दूध और तरकारी के रचना पसन्द करेंगे। नवाजा यचना है कि दिना दूध और तरकारी के ही से मानन वापिस घर लौट पात है।

दूसरे पडासी के पास कुछ वपाम और मुसा है। दूध बचनेवाता का मुसे की जन्म है इमलिए मुसे से दूध का वपाम करने पर तो वह राजी ही जाता है पर वपाम नही चाहिए। इमलिए वपाम पडासी के पास लौकी-लैया धनवासी वस्तु के रूप में पनी रचना है। इमके बाद य तीनों पडासी कुछ मनाना खरीदत निकलत है। समाज के बाटे को कुछ वपाम का जन्म है। इमलिए प्रथम मज्जन का वपाम लकर वह वपाम में उस समाज में रचना है। पर नया धन नही चाहिए। इमलिए

उपरोक्त मज्जन का भ्रम ज्यादा-रया उनके पास रह जाता है। अथ पडोसियों के पास कुछ घी है तेल है कपास है और भूसा है। उन्हें भी मसाला देना है। पर मसालावाले को न घी की जरूरत है और न उसे तेल कपास या भूसा चाहिए। इसलिए वह इन चीजों के बदले में मसाला देने में इन्कार कर जाता है।

### अदला-बदली की व्यवस्था से असुविधा

अब प्रथम सज्जन को दूध, तरकारी, मसाला ये तीन चीजें लनी थीं। उनमें से उन्हें केवल मसाला मिला। इनके पडोसियों को भी तीनों चीजें लेनी थीं। उनमें से केवल एक को दूध मिला। अब ये सब लागू इसी खोज में है कि जा चीजें इनके पास हैं उनकी चाह वाला कोई दूध तरकारी और मसाला फराश मिले तो इन लोगों को अपनी इच्छित वस्तुएं मिलें। और जब तक परस्पर की इस अदला-बदली की चाह वाला मनुष्य नहीं मिलते तब तक इन्हें अपना इष्ट वस्तुओं के बिना गुजारा करना पड़ता है। इन लोगों के पास जो चीज है उनकी जरूरत किसी-न किसी को चाहिए। वैसे ही जिनके पास दूध तरकारी और मसाला है उन्हें भी इन चीजों को देकर दूसरी चीजें लेनी हैं। पर जब तक परस्पर की अदला-बदली वाले मनुष्य नहीं मिल जाते तब तक सभी को अपनी अपनी इच्छा पूर्ति के लिए बठे रहना पड़ता है।

इस उदाहरण के आधार पर हजारों बचनवाले और हजारों खरीदनेवाला कल्पना कर सकते हैं जिनमें किसीको कोई चीज चाहिए और किसीके पास कोई चीज आवश्यकता से ज्यादा है जिसके लिए वह ग्राहक बन रहा है। इन चीजों की अदला-बदली के लिए ये हजारों आदमी ग्राहक दूटते-दूटते शाम तक थक जायेंगे और फिर भी शायद उनका सौदा समय पर समाप्त नहीं होगा। उस समाज में समय की कितनी बरबादी होगी कितनी अव्यवस्था होगी भोलें आदमी को चापाक आदमी कैसे ठग लेगा—इसकी कल्पना महज ही की जा सकती है।

इसके अलावा एम समाज में यह जोखिम तो रहेगी ही, कि इस अदला-बदली में वस्तु की जात बिगड़ेगी, और तोस जोस में चीज बरबाद

भी होगी। समय की वरवादी, चीजों की वरवादी और चीजा की जान की वरवादी ! और राज का भगदा तकरार ठगो यह भलग। जस बिना राजा के राज्य में अधर अवश्यम्भावी ह वसे ही बिना सिक्क क समाज म लनन क राज्य में यह अधर अनिवाय हा जाना ह।

अधर का मिटाने क लिए, व्यवस्था-स्थापना के लिए, गति रक्षा क लिए जस मनुष्या न मिल कर मनु न राज्यमिहासन पर बठन का प्रायना की और उन्हांन राजा बन कर मुख और गानिका मचार किया वम ही किसी समझदार राजा न समाज क नदन क क्षेत्र में अराजकता और इस गडबड का मटन क लिए सिक्क को राष्ट्रमिहासन पर बठाया।

जस बुरी राज्य प्रणाली, गानि और अमन का स्थापन करक भी अय वाता में समाज का हानिप्रद हा सकती ह वस ही सिक्का प्रणाला ना मति बुरी तरह या बन्नायता स मचारित की जाय तो सिक्क क क्षेत्र में राजकता और नियम हात हुए भी समाज क लिए हानिकारक साबित हा सकती ह।

जा हा सिक्के की समाज में क्या आवश्यकता ह इसके बिना कितनी प्रमुक्ति हा सकती ह इसका उत्तर ऊपर स्थि हुए काल्पनिक उदाहरण स समझ में आ जायगा।

सिक्का गुन् गुन् में बत्र चना यह बतानाना असभव ह। पर हजार साल पहर सिक्का या, इतना ना निश्चि ह। प्राचीन समय मे माना चादा, तावा पयर कोण—इनक प्रतावा और भी बन्नुषा क सिक्के चनत थ।

वस्तिक बात में यहा मान क मिरर चरन थ जिनक नाम निष्क गनमान, मुवाण पाठ आदि थ। वाट चाण क सिक्का क नाम मिलत ह—जस पण, वापायण, विगनिक विगनिक आदि। रुपया गरगाह का चलाया हुआ बताया जाना ह।

**सिक्का राजा ने क्यों चलाया ?**

यह प्रश्न हा सकता ह कि सिक्का राजा न हा करा चलाया ? व्यापारी

भी तो चला सकते थे । या तो इन भदला-बदली करनवाला न ही क्यों न इसका संचालन किया ? इसका उत्तर बठिन नहीं ह ।

यदि लोग जिन्सों की भदला-बदली छोड़ कर सिक्के से हर चीज की भदला-बदली कर जसा कि सिक्के के आविर्भाव के बाद होता आया ह तो यह आवश्यक ह कि सिक्के की साल इतनी जबरदस्त होनी चाहिए कि उस साल में किसीका बहम या गब करन के लिए रत्ती भर भी गुजाइश न हो । यदि हम जिंसा की जिंसा स भदला बदली करते ह तो उन भदला बदली की जानवाली जिंसा की जात, उनकी माप-तौल वगरह सब चीजों को सामन रख कर कितनी अमुक जिस म कितनी दूसरी अमुक जिस की भदला बदली हो, इनका लेन और दनवाल दानो को विचार करना पडता ह । इस विचार में बहस मुबाहसा ता होता ही ह पर चूकि किसी भी जिस की जात हर हालत में एक सी नहीं बनी रहती इसलिए जात की निरख की बार बार जरूरत पडती ह । इसमें समय की बरबादी होती ह बकलक हाती ह—फिर भी लेन दनवाल को पूरा सन्तोष नहीं होता ।

इस बकलक को मिटान के लिए ही ता सिक्का सिंहासन पर बठा था । इसके मान यह थ कि सिक्क क सफलता से चलन क लिए यह आवश्यक था कि जसे जिन्सों की जात और माप-तौल क बारे में राजमर्ग की निरख की जरूरत पडती थी वसे कोई जरूरत सिक्क की जात और माप-तौल की निरख क सम्बन्ध म न रह—अर्थात् सिक्का म जो धातु ह उसकी जात सदा यकसा हो और उसकी तौल भी सदा यकसा हो । इस निश्चितता स ही तो सिक्क की धाव और साल जमती ह । फिर यदि सिक्के की भी जात माप तौल पर लन-दनवाला क बीच बहस जारी रहे तो सिक्के के राज्य में भी वही अराजकता आ जाती ह जो जिंसा की भदला-बदली म थी और सिक्का एसी हालत में एक भजा गल-स्तनवत निकम्मी चीज बन जाता है ।

प्राचीन समय में जब सिक्क का आविर्भाव हुआ तब सिक्के की कीमत इसी बुनियाद पर टिकी थी कि इसम कितनी, कौनसी और कितनी अच्छाई की धातु ह । धातु की कीमत पर ही तो आधिर सिक्के की साल थी । मान लीजिय कि एक सुवण मूद्रा में एक तोला

खालिस १०० की अछड़ाई का साना ह, तो उस मुद्रा की कीमत ह—  
 १ मुद्रा = १ ताला १०० की अछड़ाई का साना । जब एक मनुष्य एक  
 गाय १ मुद्रा मुद्रा में बचना था तो वह यह मान लेता था कि मन एक ताला  
 साना १०० की अछड़ाई का पाया ह यानी उम मुद्रा का साब दम बात  
 पर थी कि निश्चयामक रूप से उनमें १ ताला मुद्रा ह और वह मुद्रा  
 १०० की अछड़ाई का ह । गाय बचनवाला का इन दो बातों के सम्बन्ध  
 में कभी कोई शक नहीं होना चाहिए कि मुद्रा में साना १ ताला से कम भी  
 हो सकता ह, या तो अछड़ाई १०० नहीं, ८८ भी हो सकती ह । और यह  
 निश्चय कस हागा ?

मीठी बात ह । जब तक उस मुद्रा की अछड़ाई और वजन के बारे  
 में कोई आरदार व्यक्ति जागिन नहीं ह तब तक उम मुद्रा की तोल और  
 अछड़ाई के बारे में नागा क तिल में पूरा इन्मीनान नहीं हो सकता । राजा  
 की मुद्रा चलाने में क्या बाध में पड़ना पड़ा प्रजा न ही क्या नहीं मुद्रा  
 चला दी जिन्यों की अज्ञानता करनेवालों न हो यह काराबार क्यों  
 न चला दिया इसका उत्तर अब समझ में आ जायगा ।

प्रजा यदि मुद्रा चलावता फिर उनमें भी एक एम अवस्थित व्यक्ति  
 की अज्ञानता पड़गा जिसकी मात्रा आममाना मुद्रा न होकर स पना हूँ  
 बजरी का छान कर बाकी ध्रुव की तरह अचल हा । यदि लाभवादी  
 मुद्रा का माना कम करे या उसकी अछड़ाई कम करे तो फिर लाग तो  
 चौपट हो जाय, और मुद्रा चलानेवाला लोगों का अज्ञान का अघटित  
 फायदा उठा कर मालामाल हो जाय । और एम धानवाज को फिर चाहे  
 कारागार में ही क्यों न ठेक दिया जाय पर लोगों का जा चौपट कर दिया  
 गया उस घाट की पूर्ति ना होन स रही ।

इस तरह की धानवाजा न हो लोग की मित्र की अछड़ाई और तोल  
 में अघटित अज्ञान बनी रह इस धानवाजन के लिए राजा का छान कर कौन  
 व्यक्ति उपयुक्त हो सकता था ? हमक यह मान नहा कि बिना राजा न  
 एमो धानवाजी नहीं की ह । इतिहास में एम उदाहरण मिलत ह सही  
 जहा राजा न ना लाभ का संवर्धन करके एम अघटित कम किया । पर  
 एम उदाहरण कम ह । और यह बात भी ह कि राजा के द्वारा इस तरह



की गई धोखेबाजी के कारण जो क्षति हुई हो उसकी पूर्ति की संभावना है। साधारण नागरिक तो घावा दकर नौ-दो ग्यारह भी हो सकता है। इस लिए इस काम के भार के लिए स्वभावतया ही राजा सबधृष्ट माना गया।

कई मुल्को में कई एस सठ भी हुए हैं जिनकी साख को लोगो न राजा की साख से नहीं ऊँचा माना। यहाँ भी ईस्ट इंडिया कंपनी के जमाते में जगत सेठ का मुद्रा चलाने का अधिकार था और वतमान समय में तो प्रायः हर मुल्क में सिक्के की व्यवस्था के लिए एक विशेष बक्क हाथ में ही सिक्के सम्बन्धी सारा कारोबार चला गया है। पर गुरु गुरु में यह संभव नहीं था कि सिक्के की व्यवस्था किसी साधारण नागरिक के हाथ में हो। इसलिए राजा के हाथ में इस व्यवस्था का होना अनिवार्य हो गया।

इतिहास लखके एक युग का सुवर्ण-युग के नाम से पुकारते हैं। इसके बाद का युग रौप्य-युग हुआ पीछे ताम्र-युग और अन्त में लौह-युग आया। सुवर्ण पथ्वी के गभ में गुठ अवस्था में अथ किसी धातु से अमिश्र मिलता है और चाँदी अथ धातुओं से मिश्रित अवस्था में मिलती है। इसलिए चाँदी एक युग में सुवर्ण की अपेक्षा दुर्लभ भी मानी जाती थी। यही कारण था कि उस प्राचीन काल में चाँदी और ताम्र सुवर्ण से नहीं ज्यादा मूल्यवान माने जाते थे। जो हो आता तो सान और चाँदी के सिक्के ही अधिक लोकप्रिय हैं और इस लोकप्रियता के पीछे बृहत् कारण भी हैं।

### सिक्का सोने चाँदी का क्यों ?

अथ किसी धातु या जिस के भी सिक्के कायम किए जा सकते हैं। मसलन एक मेर गेहूँ का भी सिक्का हो सकता है। पर इसमें कितनी भारी अड़चनें हैं यह सहज ही समझ में आ जायगा। यदि एक सेर गेहूँ का एक सिक्का चलाया जाय तो फिर ११ सेर गेहूँ को अलग अलग कोथ लिये में हमें भर देना पड़ेगा। उसमें काम तो काफी बढ़ ही जायगा, पर जो साल भर की पुरानी कोथली होगी उसमें से यदि वह फट गई तो, कुछ गेहूँ निकल भी जायगा। इसलिए तौल का कोई भरोसा नहीं। गेहूँ की जात भी २४ साल के बाद कोथली में खराब हो सकती है। इसलिए नई कोथली जिसमें नया गेहूँ होगा, उसे तो लागू स्वीकार कर लेंगे, पर पुरानी कोथली

ने कोई छूटगा भी नहीं क्योंकि उसके गेहूँ की जान के सम्बन्ध में भी कोई तातिर नहीं। ननाजा यह होगा कि नई कोयली और पुरानी कोयली जानी नए और पुराने मिक्क की कीमत में फक पड जायगा। पुरानी कोयली म्यान पुराने गेहूँ के मिक्क का बट्टा लगने लगेगा—अर्थात् उसकी कामत र्ति के मुकाबिल में भीची होगी। इसका अनावा गू की कोयली का मिक्का बजती भी होगा। १०० मिक्कों का एक माय उठाना बरीब करीब प्रसम्भव-सा हागा। और भी अडचन ह। कोयलिया का बपडा किमो काम में न आकर बरवाद हागा वह फिनुनवर्ची अरग। मरा म्यान ह कि इसमें कितनी अनुविधा हा मकनी ह इस विन्तार म समयान की जरूरत ही नहीं ह। बताना ता यह ह, कि यदि हम मुबिया अनुविधा का म्यान छाड दे, और कीमत की स्थिरता का म्यान भी छाड दें तो मिक्का किसी भी चीज का हो मकना ह। एस अनुविधावाल मिक्का का हमें प्राचीन समय में बएन भी मिलता ह।

मिक्का महनन की बुनियात पर भी रचा जा मकना ह। ममलन

'संस्कृत व्याकरण में 'पचगु', 'पचावा', 'मौदिगकम' जैसे शब्द मिलते ह जिनसे पता चलता ह कि प्राचीन समय में यहा पगु, अनाज आदि म चीजें 'खरीदी' जाता थीं। अंग्रेजी में pecuniary शब्द 'घाधिक' के अर्थ में व्यवहृत होता ह। इसका व्युत्पत्ति लतिन भाषा के pecunia शब्द से ह जिसका अर्थ ह डोर, अर्थात् गाय-बन। कहत ह कि महाकवि होमर ने जब कभी किसी चीज की कीमत बताई ह तब बलों की सहाय में—तो भारत की तरह योम में भी मूल्य मापने का काम इन पगुओं से लिया जाता था।

प्राचीन काल में धनिकों के धन की माप भी पगुओं से की जाती थी। धमुक पुरदय के पास इतनी खरीड गाए थीं, इमका तात्पर्य इतना ही ह कि इतनी खरीड गायों की उसके पास सम्पत्ति थी। धमुक ने इतनी खरीड गाए दान में दीं, यह भी दान की माप का चीनक ह। इसमें यह पता लगता ह कि जो स्थान आज सोने का या नोट का ह वह किसी समय पगुओं का रहा होगा।

एक मनुष्य की महतन के नोट निवाल जा सकते ह, जो उस नोट के स्वामी को यह अधिकार देंगे कि वह नोट छापनवाली बक या उसकी कोई व्यवस्था करनेवाली सस्था मे एक मनुष्य की मजदूरी चाहे जब धाहयान कर ले ।

पर इनमें भी अमुविधा होगी । एक मनुष्य की मजदूरी—वह मोट की या दुबले की जवान की या बूढ की ? गोगी की या नीरोग की ? इन सब अमुविधाया को दूर करन के लिए स्वाभाविक ही यह तय पाया कि सिक्का एमी वस्तु का हो जो ज्यादा सुलभ न हो अर्थात् अति अधिक मिकदार में जिम वस्तु की पदाङ्ग न हा जो जल्दी न छीज अर्थात् जल्दी से घिस न जाय जिसकी जात में, सिक्का पुराना हान पर भी कोई अन्तर न पड और जिसकी जात अमूक अच्छाई की जाच पडताल के बाद निश्च यात्मक रूप से कायम की जा सक जिसकी थोड़ी सी मिकदार में कीमत बडी हो और जिसके, चाहे जितन टुकड किय जाय प्रत्यक टुकड की वजन क हिसाब में कीमत बनी रह ।

और चूकि एसी वस्तुए सोना और चादी ही थी प्रधान सिक्के की रचना इही धातुभा पर की गई । हीरे पत्त और अन्य रत्नो की रचना स धाड से वजन की काफी कीमत हो जाती पर इनकी जात में इतना अन्तर होता ह कि एक ही हीरा लाख रुपए रत्ती का भी हा सकता ह और सी रुपए रत्ती का भी । सो सिक्के के वास्ते रत्न भी उपयुक्त नहीं थ । इसलिए वरमाल सान चादा के गले में ही पडी ।

इस मिलमिल में हमें नाटा की रचना और उनकी व्यवस्था के सम्बन्ध में भी कुछ जान लेना जरूरी है।

सिक्का जसा कि हमने पहले बताया है, अपनी कीमत स्वयं लेकर चलता है। एक मुद्रण-मूद्रा १ तोना स्वामिम १०० की अच्छाई के सोने की है तो वह कीमत उस मूद्रा के मान के बराबर ही होती है। पर नोटमें यह बात नहीं है। नोट एक नोट में तो मात्र कागज का टुकड़ा है। कागज के टुकड़े का कीमत कमी? पर नोट का कामत इसलिए है कि हमें आवश्यकता है तो नोट निकालनेवाली संस्था से हम चाहें जब उस नोट की कीमत तलब कर सकते हैं।

आजकल तो सभी मुद्रा का नोट निकालनेवाली संस्था या प्रसारक काठिया (Reserve Bank) न नोट की स्वयंसिद्ध मूद्रा से बन्ना बन्नी बन्द कर दी है। पर हमें नोट का मान में धन में काइ अन्तर नहीं हुआ है क्योंकि नोट के बन्ने में जिन्स या श्रम खरीदने में काइ कठिनाई नहीं है। नोट की आ कीमत है वह हमें आवासन पर व्यवस्थित है कि उसकी जिन्स या श्रम से खरीदा-खरीदी में काइ अन्तर नहीं है, पर किसी कारणवश यदि नोट निकालनेवाली संस्था नस्तनाबूत हो जाय या उस संस्था का बिकाना निकल जाय तो फिर नोट की कीमत अखबार के टुकड़े से भी गई-थीनी। इसके विपरीत, मूद्रा का कीमत चूकि मूद्रा के भीतर ही है इसलिए मूद्रा निकालनेवाला राजा हूतथी हो जाय या मिहामनख्युत हो जाय तो भी मूद्रा के मानिक का काइ धनि न होगा।

आम नोट और सिक्के की तुलना के लिए सामान विष्णु और विष्णु की मूल्य का तुलना कुछ अर्थ तक उपयुक्त हो सकता है। सामान विष्णु स्वयं विष्णु है और पापान निरापय है। पर पापान मूल्य मकत का दृष्टि

में प्राण प्रतिष्ठा के बाद विष्णु-तुल्य ही इसलिए बन जाती है कि भक्ति भाव से पूजने पर वह विष्णु की प्राप्ति करा देती है। बागज का टुकड़ा बस तो कागज ही है पर नोट निकालनवाली संस्था उसमें प्राणप्रतिष्ठा स्थापन करके उसे सजीव बना देती है—उस कीमत का संपूर्ण प्रतिनिधित्व दे देती है।

पर शायद नोट की संपूर्ण उपमा हुण्डी से दी जा सके क्योंकि नोट एक तरह की बमीयाती हुण्डी है जो चाहे जब नोट निकालनवाली संस्था में सिकराई जा सकती है। इस संबंध में यह बात दना आवश्यक है कि रुपए की मुद्रा भी एक प्रकार का चाँदी पर छपा हुआ नोट मात्र ही है। रुपए के भीतर जो चाँदी है उसकी कीमत पूरे एक रुपए की नहीं है। रुपए में पहले कुल १६५ ग्राम चाँदी थी और उस चाँदी की कीमत, आज में कुछ समय पहले के भाव से (अर्थात् १०० तोले = ६२॥) कुल ०.६२॥ पाई की होती थी। हाल में नया रुपया डाला गया है जिसमें चाँदी की मात्रा पहले से बहुत कम है अर्थात् १८० ग्राम में कुल ६० ग्राम। चाँदी का भाव इस समय प्रायः १०० तोले = १२०) है। इस दर से भी नए रुपए की चाँदी की कीमत प्रायः उतनी ही सी होती है। इसके मान यह हुए कि यदि रुपया चलाने वाली सरकार की अबहेतना करके रुपए की मुद्रा के भीतर भरी हुई चाँदी की कीमत के आधार पर ही हम रुपए को बच, ता रुपए की कीमत हम कुल प्रायः ॥—॥ मिले। इसलिए रुपए के चाँदी के सिक्के और नोट को हम स्वयंसिद्ध मुद्रा नहीं कह सकते।

, पर वर्तमान समय में शायद ही ऐसा कोई मुल्क है जहाँ स्वयंसिद्ध मुद्रा कायम हो। १६३३ तक अमरीका का डालर स्वयंसिद्ध मुद्रा थी, पर वहाँ भी सिक्के के दामों में जब से सरकारी दस्त-दाजी शुरू हुई और सिक्के के दाम गिराए गए तब से स्वयंसिद्ध मुद्रा अर्थात् ऐसी मुद्रा जिसकी पूरी कीमत मुद्रा के भीतर ही हो, नहीं रही। जहाँ तक खयाल किया जाता है, आज सभी मुसभ्य देगा में नाटो का अर्थात् प्रतीक मुद्रा का ही चलन है।

इस प्रणाली अर्थात् नोटों के चलन के लाभ और हानियाँ अनक है। इसका विश्लेषण आगे चलकर करण।

## नोट क्यों आया ?

पर स्वयमिद्धमुद्रा के बाद प्रतीक मुद्रा अर्थात् नोट का आविर्भाव कम हुआ इसका विचार भी कर लें।

जब मसाल में लन-दन बढ़ा और लाखों का लखा और करोड़ा पर कलम चलने लगी तब स्वभावतया जिस मुद्रा को हमने कम वजनी और घनमूल्यवारी माना था वह भी अधिक वजनी मालम देने लगी। एक गाहक क यहा से हमें आज दम लाख रुपए का भुगतान मगाना है और दूसर को उनता ही भजना ह तो यदि सब-का-सब लन-दन सुवण-मुद्रा म ही हो तो करीब २५,००० सुवण मुद्राएँ—यदि एक सुवण मुद्रा की कीमत ४० रुपए मान ल तो—हम देनी और लेनी हागी। इन मुद्राया का वजन भी करीब ८ मन होगा। २५,००० सुवण मुद्रा के गिनन के लिए कितना समय चाहिए और उम वजन को उठान के लिए किसने धादमी चाहिए। उममें समय की कितनी बरबाती होगी इसकी कल्पना धामान ह। इसके धलावा यदि सिक्को द्वारा भुगतान ही तो सिक्का की पिछाई और उमके द्वारा हानवाली घन की छीजन का भी प्रश्न तो ह ही। इन सब अमुविधाया और क्षतियों के बचाव के लिए नोट अर्थात् प्रतीक मुद्रा न प्रवेश किया। इसमें न गिनन का श्रमना कभट, न इतना वजन। १०० नोट यदि १० १० हजार के दे दिध तो दम साध का भुगतान समाप्त हुआ।

## चेरू क्यों चला ?

पर धागे चल कर व्यापार और लन-दन ज्यादा बढ़ा तब तो प्रतीक मुद्रा भी धमहा मानूम होन लगी और सारा लन-दन बैंक द्वारा ही होने लगा। बैंक एकतरह का धागा पत्रह, जो धापा देनवाना अपनी बक के नाम लिखता ह कि इतना दयया धमुक सज्जन को किया जाय। और उस धागापत्रपानवाल का उननी रकम बक म मिल जानी है। स्वयमिद्धमुद्रा का प्रतिनिधित्व प्रतीक-मुद्रा का मिला, और उमके बाद एक बहम धाग पत्रेता प्रतीक-मुद्रा का स्थान बक को मिला। सिक्के की प्रगति की यह कथा काफा दिलचस्प ह।

हमारे देश में तो बड़े शहरों को छोड़ कर चेक का चलण कहीं नहीं है। चेक तो वही चल सकता है जहाँ प्रथम तो बक हो, दूसरे जहाँ लेन देन का काम भी ज्यादा हो और बड़ी बड़ी रकमों का लेन देन हो। चूँकि गावों में यह स्थिति नहीं है इसलिए हमारे देश में तो, जसा कि ऊपर कहा जा चुका है चेक का चलण बड़े शहरों तक ही सीमित है, और नोटों का कस्वो और बड़े गावों तक। छोटे गावों में तो चादी और तांबे के सिक्का का ही चलण है। पर ये चादी-तांबे के सिक्के भी तो जसा कि पहले बताया जा चुका है, एक तरह के धातु पर छपे नोट—प्रतीक मुद्रा ही है क्योंकि उनकी स्वयंसिद्ध कीमत का उनकी निर्धारित कीमत से कोई मेल नहीं खाता।

## नोट से लाभ

प्रतीक मुद्रा प्रणाली के लाभतो स्पष्ट है। बचन कम होता है। लेन देन में गिनती करने में, समय की बचत होती है। मुद्रा हाथों में से रोज रोज निकल उससे धातु की जो छीजत होती है उसकी बचत होती है। पर एक और लाभ है। मान लीजिए, सारे देश के लन-देन के कारोबार के लिए १० करोड़ सुवण मुद्राओं की जरूरत है। यदि प्रति मुद्रा की ४० रुपए कीमत मान लें, तो इस हिसाब से ४०० करोड़ रुपए के सोने की, देश के लन-देन की सहूलियत के लिए जरूरत होगी। पर यदि नोटों का चलण है तो यही काम बहुत थोड़े सोने से चल जाता है। आखिर नोट का काम तो इतना ही है कि वह उतनी निर्धारित मुद्राओं का स्वामित्व नोट के स्वामी को सौंपता है।

यह सही है कि आज ऐसा कोई मुल्क नहीं है जहाँ नोट के बदले बक सुवण मुद्रा दे दे। पर इससे नित्य प्रति के व्यवहार में कोई बाधा नहीं पहुँची है। यदि सुवण मुद्रा भी हमें नोटों के बदले में मिलती तो उस मुद्रा का उपयोग भी हम जिस, सम्पत्ति या मनुष्य-श्रम खरीदने में ही तो करते। और जब तक किसी मुल्क की साख सुरक्षित है तब तक सुवण मुद्रा प्रचलित न हो तो भी नोट त्रय विप्रय में वही काम देता है, जो काम सुवण मुद्रा देती। इसलिए सुवण मुद्रा का अभाव किसीको

नहीं खटकता। साम्भ मुर्गित है या नहीं। इसका पता भी तो हमारे नाट की बीमन विन्नों में क्या है। इस प्रश्न का विवेचन तो आग चल कर करेंगे। यहाँ तो मुद्रा के अजाप भोट चलन में क्या-क्या किरायेत है उसका विचार करना है।

बताना तो यह था कि नाट का अत्र इतना ही है कि वह अपनी निर्धारित मद्राज का स्वामित्व नाट के स्वामी का सौंपना है। यमलन आपक पाम दस सुवण-मुद्रा का नोट है। (यह अत्राहरण-मात्र है क्योंकि जैसा कि ऊपर बताया गया है अत्र किना भी मुन्व में स्वयंसिद्ध मुद्रा का चलन नहीं है।) तो आप चाहे अत्र नाट प्रसार करने वालों से या मन्था के पाम जाकर अपना नाट देकर अपने बदन में १० सुवण-मुद्राएँ माग सकत है जिसके कि आप अधिकारी है और वह सब आपका १० सुवण-मुद्राएँ दोगी जिसके लिए कि वह बाध्य है।

पर एन किमी भी माध्याम ममय की कल्पना नहीं की जा सकती जबकि तमाम नाटकार अपने नाट सब का पंग करके सब से नाटों के बन्ध में मुद्रा मांगेंगे। यदि दण के बाराबार के लिए १० करोड़ सुवर्ण मुद्राओं के चलन की जरूरत है और नाग अपनी मुविजा के कारण मुद्राओं से नहीं, पर प्रतीक-मुद्रा अर्थात् नोटों से अपना काम चराना चाहत है, तो यह स्पष्ट है कि जब तक नाट चलानेवाले सब की मात्र माविन है तब तक का समयकाल व्यक्ति नोट का भूना कर मुद्रा मागने के समष्ट में न पडगा। इसलिए सब मावधनी के लिए १० करोड़ सुवण-मुद्राओं के प्रवाका के पीछे कवन ३ करोड़ सुवण-मुद्रा अपने बाप में रख तो भी पर्याप्त है।

इसके मान यह हुए कि यदि हम अपना बाराबार केवल सुवण मुद्राओं से ही चलाना चाहते हैं तब जहाँ १० करोड़ सुवण मुद्राओं के लिए ५०० करोड़ रुपए के मौन की जरूरत होगी वहाँ यदि हम नोट प्रया का अपना लें तो कुल १०० करोड़ रुपए के माने से ही काम चल जायगा—अर्थात् जब १० करोड़ रुपए के माने के आधार पर सामान्यी से ५०० करोड़ रुपए की बीमन का प्रतीक-मुद्राओं का प्रसार कर देंगे। और का मान में राखना पडा कुल १२० करोड़ रुपया। नाट प्रसार किए



कुल ४०० करोड रुपए की कीमत के। नोट प्रसारिणी बक का तलपट एसी हालत में इस प्रकार होगा—

४०० करोड—नोट चलण में	१२० करोड—सोना खरीण
डाले उसकी कीमत आई	२८० करोड—ब्याज पर रोका

---

४०० करोड

---

४०० करोड

इस तरह २८० करोड रुपए का नाणा बेब्याज जो बक को मिल गया उसे लोणा को उधार देकर बक मुनाफा बना खाएगी। देण के लिए यह किफायतसारी अवश्य ही ग्राह्य चीज ह। इस तरह नोट न अपन गुणो से समाज को मुग्ध करके अपना सिक्का जमा लिया।

## नोट से हानि

पर जड चतन गुण दोषमय विश्व कीह करतार।” नोटो में गुण ह तो अवगुण भी ह। एक अवगुण तो प्रत्यक्ष ह। चूकि स्वयसिद्ध मुद्रा की कीमत तो इसके गभ म ही ह और प्रतीक मुद्रा (नोट) की कीमत तो जब तक प्रतीक मुद्रा का प्रसार करनेवाली बक सलामत ह तभी तक कायम ह, इसलिए राज दुराजी के जमान में नोटो में लोग सहज ही विश्वास खो बठते ह और स्वयसिद्ध सिक्को का सग्रह करके उह दवाने लगते ह।

इस महायुद्ध में पोलण्ड, फ्रास वगरह मुल्का में जहाँ जहाँ राज गिरन की सम्भावना हुई वहा लोग नोटो में विश्वास खो बठे। पर चूकि स्वयसिद्ध मुद्रा का इन मुल्को में चलण नहीं था इसलिए लोग जवाहरात या सोना एसी वस्तुभा का सग्रह करने लग, या एसी वस्तुआ को लेकर देश के बाहर भागन लग। यहा भी जब फ्रास की हार हुई उस जमाने में लोगोंने रुपया का बुरी तरह सग्रह करना शुरू किया। या तो जसा कि पहले बताया जा चुका ह, रुपए का सिक्का भी एक तरह का नोट ही था, क्योंकि इसकी धाती की कीमत तो कुल ६ आन २॥ पाई थी। पर रुपए के सिक्के क पक्ष में कुछ बातें थी। आखिर इसकी स्वयसिद्ध कीमत

## रुपए की कहानी

कागज के नाट का कीमत में तो ज्यादा ही था। इसलिए लागे न घबडा हट में इसका संग्रह करना शुरू कर दिया।

यह संग्रह करने का मज यहाँ तक बढ़ा कि छोटी रकमा के लन देन के लिए रुपए का सिक्का कुछ दिना के लिए दुलभ-सा हान लगा था। सिक्का की काइ कमी ता न थी पर जब लोग भय स पागल स हा जात ह उस समय बुद्धि स काम नहीं लिया जाता। इसलिए भयमान लागे न चादी क रुपया की घराहर इकट्ठी करव सिक्का का अवाल-सा पदा कर दिया और अन्त में इस कठिनाई का दूर करने के लिए सरकार न एक रुपए का नाट भी छापा और सिक्का दबा बठन के लिए सरकार न बनाया। इस बीच में लोगो में भी विश्वास का पुन संचार हान लगा। पर भय के या प्रविशवास के जमान में स्वयमिद मुद्रा की या ता चादी के रुपए जमी अधस्वयमिद मुद्रा का साथ ता कम सुरक्षित रहती ह और प्रतीक मुद्रा की साथ कस नस्नानाूद होन लगती ह इसका आभाम इस और पिछले महामुद्र क इतिहास में मिल सकता ह।

इस दृष्टि में हम कह सकत ह कि स्वयमिद मुद्रा क मुकाबिले में प्रतीक मुद्रा का सबसे बड़ा दाप तो यह ह कि प्रतीक-मुद्रा की कीमत क स्थायित्व के बारे में या सुरभितता के बारे में घबडाहट के जमान में पूरा यकीन ता कभी हा ही नहा सकता। पर क्या इस सुरभितता के लिए इतनी बड़ा कीमत चुकानी वाजिब हागा कि स्वयमिद मुद्रा का ही चलन रख कर हम मुबल मुद्राया के भार का बहन कर, उनके गिनन-सम्हालन के भ्रष्ट में समय खात्रे और उनकी छाजन-जा मुन्व के घन की छीजन होगी-उस बरगस्त कर ? और इसके प्रनावा, जा काम १२० कराड रुपए क सान स चल सकता ह उसके लिए, जमा कि पहल बनाया जा चुका ह, ४०० कराड रुपए का खम का सोन में पमा क रख ?

## राज-दुराजी में अरक्षितता

आज हमार देग में नाग का कुल चलन प्राय ८०० कराड रुपए की कीमत का हागा। पर कुछ समय पहले यह चलन २५० कराड रुपए का था। इससे मान यह ह कि यदि रिख बच, जा इन नाटा का प्रमार

करनवाली बक ह, उमकी साल बा ठस पहुचती तो इन २५० कराड के नोटो की कीमत को खतरा था ।

पर एमी स्थिति की हम कल्पना करें तब तो यह जानना चाहिए कि इससे कही ज्यादा खतरा तो सरकारी प्रोमिसरी नोटो की रकम की हो सकता था और इन सरकारी प्रोमिसरी नोटो म तो प्रजा की कुल रकम लगभग १००० करोड के लगी हुई थी—अर्थात् नोटो की २५० कराड का कीमत से चौगुनी रकम ता प्रोमिसरी नाटो में लगी हुई थी । इससे पता लगेगा कि नाटो की सुरक्षितता की जब हम बात करते ह तब हम भूल जाते ह कि किसी भी राष्ट्र के पतन के कारण हानवाली क्षति से बचन का ता कोई रामबाण उपाय ह ही नहीं और उस होनवाली सारी क्षति म नोटो की कीमत नस्तनावूद हो जान ब कारण होनवाली क्षति का स्थान अपेक्षाकृत छोटा ह ।

नोट का स्वाधी यह सहज ही कह सकता ह कि सारी क्षति क्या होगी इससे मुझ क्या मतलब—मुझ तो अपन नोट की कीमत के नाश से होने वाली क्षति का ही नद ह । पर इसका उत्तर तो यह ह कि दश के सिक्के की नीति व्यक्ति की सुविधा के लिए नहीं पर समष्टि का सुविधा के लिए बनाई जाती ह, और इन दृष्टि से स्वयमिद्ध मुद्रा स प्रत्यक् मुद्रा की सुरक्षितता कम होन पर भी दश के लिए प्रतीक मुद्राशली का त्याग और केवन स्वयमिद्ध मुद्रा की नीति का ग्रहण बशी खर्चीला होगा ।

प्रतीक मुद्रागली में एक दाप और ह—यदि उम दाप कहा जाय ता—  
और उम दाप का वणन करन स पत्र कुध तत्सम्बन्धी वाता का विव  
चन करना आवश्यक जान पडता ह ।

हमन बनाया ह कि नाट प्रसार करनवाली मय्या यदि ४०० कराड  
रुपया क पीछ १२० कराड रुपए का भी माना रख ता पयाप्त हागा  
क्याकि जवनक बक की मान्य अमन ह तवनक कीन नाट का भुना कर  
वन्ले म मुवण-मुद्रा भागगा । इमलिए नोट की घाक अगन ता जा  
नाटा के पीछ माना पत्र ह उम पर वाकी नोट प्रसारक बक की दयता  
सावधानी और नवनोयती पर ह ।

मान लीजिएकि १०० कराडक सान क मद् ४०० कराड रुपए क  
नाटा के बजाय बक न किसी भा कारणवा, अपना मर्जी स या बाध्य हाकर  
८०० करोड रुपएक नाट चलनमें डालनिय ता जा मान का मिक्कारपट्टे  
प्रतिगत नोटा क पीछ ० की थी वह मिफ १५ का रह गइ । एसी हालत  
में महज ही नाटा की माख में लागा का कुछ गक हान लगा । और मान  
लीजिए कि यदि नाट प्रसारक बक न ८०० के बजाय उसी १०० कराड  
रुपए की कीमत क मोन का पू जी के बल पर १६०० कराड क नाट चलन  
में डालनिय तब तो फिर नाटा की माख जारों स डूवन लगती । और यदि  
१६०० करोड क बजाय २२०० कराड क नोट चलन म डालनिय तब तो  
लागा में घबराहट फल जायगा और लाग नाटो स दूर भागन लगेंग क्याकि  
३२०० कराड क पीछ यदि कुल १२० कराड का ही माना हा तब ता  
प्रति मो नाट क पीछे बैवल २॥। रुपए का ही माना रहा जा बक की  
नगरी का चलन हुए अत्यंत अल्प कहा जायगा ।

यह अन्तहाना मा उगाहरण जानबूझ कर ही लिया ह । काई समक  
नर बक जानबूझकर मुय गानि क जमान म एमा बहूदा ह तब नहा जानी  
पर अमाधारण समय में एसी घटनाए कई मुन्का में हू भी ह । भारतवष  
की ही बात लीजिए । इम समय जहाँ नोट प्राय ८०० कराड रुपए  
के ह वहा मोना कुल ४४ कराड रुपए का ह ।

नोटों का प्रसार करना आसान काम है। उनके लिए जरूरत है बस कुछ कागज की। ठंडे समय में या तो सरकार का कोई बजट बनना नही मिलता या मिलता भी है तो बहुत बड़े बजट पर। इसलिए कई बार ऐसा हुआ है कि संकटापन्न सरकार ने अपनी आवश्यकताओं का पूर्ति न ता ठकस लगाकर की न कज लेकर—उमन बस नाट छापनेवाली मशीना को दिन रात चला कर अपना मतलब पूरा किया। प्रायः ऐसा भी हुआ है कि जिस सरकार ने यह तरीका अस्तित्वार किया उसमें औचित्य की सीमा का उल्लंघन हुए बिना न रह सका—और वह इतनी दूर आगे बढ़ गई कि उसका दिवाला निकल के हा रहा।

फ्रांस की इतिहासप्रसिद्ध क्रांति के समय वहाँ कुछ नाटें जारी किये गए थे जिन्हें assignat कहते थे। महन्त मठाधारा की जो जायदाद जम्न कर ली गई थी उसी की पुस्तो या आधारा पर ये नोट जारी किए गए थे। मगर उस जायदाद की कीमत से कहीं अधिक के नोट निकाल दिए गए और इसका नतीजा यह हुआ कि इनकी कीमत बहुत नीचे गिर गई। कुछ काल बाद सरकार को मजबूर होकर इन नोटों को चलण से हटा लेना पड़ा।

२४ साल पहले रूस में कम्युनिस्ट क्रांति के समय भी ऐसी ही बात हुई। वहाँ चलण में जो सिक्का था उसका नाम रूबल (Rouble) था। क्रांति से पहले एक रूबल की कीमत प्रायः २ ग्रांम अर्घत १।२) थी। मगर बाद इसकी कीमत यहाँ तक गिर गई कि कुछ समय तक रूस में आध सेर रोटी के २५० रूबल और आध मेर चीना के ६०० रूबल लगते थे।

## फुलावट और गिरावट

इस तरह थोड़े सोने की पूंजी पर बहद परिमाण में नोट निकालन की नीति को अग्रजीम Inflationary policy कहते हैं। हम इस अग्रजीम परिमाणा के लिए चलण की फलावटा नीति—इस मुद्दाविर का प्रयोग कर सकते हैं। इसी तरह किसी कारणवश नोट प्रसारक बने यह भी कर सकती है कि १२० करोड़ की कीमत के सोने के मद्द ४०० करोड़ रुपय की कीमत के नोट चलण में न रख कर केवल २०० करोड़ रुपए के नोट ही

चरण में रखे जाते और भी घटा कर १०० करोड़ कर ले रहे । इस नीति का अंग्रेजी में Deflationary policy कहते हैं । हिन्दी में हम इसे चरण की गिरावटी नीति कह सकते हैं ।

इस फुलावटी नीति या गिरावटी नीति का क्या प्रयोग किया जाता है हमका विवेचन भाषावद्धक है । पर यह विवेचन करने के पहले नोट के अधिक परिमाण में चलाने में हाल तक फुलावट पदा की जाती है और कम नोट कम करके गिरावट की जाती है इस प्रयोग का भी हम समझेंगे ।

कोई नोट प्रसारक ब्रह्म विना सरकार की मर्जी के तो फुलावट या गिरावट ज्यादा तक कर पा नहीं सकते । इसलिए जब सरकारी मर्जी में यह काम होता है तो सरकारी मन्थन भी घटने और मित्त जाता है । एसी हालत में यदि फुलावटी-नीति का प्रयोग करना होता है तो एक तरफा तो यह है कि सरकार निम्ना सूच्य करना उचित कर कम उगावना है—यानी मान लीजिए कि सरकार का सर्वा मासना १००० करोड़ है तो वह उगा कर सरकार ने उगाया बचते ३५० करोड़ और बाकी तो ६५० करोड़ का घाटा है उसका क्या काम होगा प्रयोजन कर समूल करके उसकी पूर्ति करनी ही । तबतो यह जगह है कि बाद में घाटा ७५० करोड़ और काय से निकला १००० करोड़ । यह २५० करोड़ का काय से बेनी निकला वह सरकार ने क्या से निकाला ? कम, सरकार ने सीधा-सा काम किया । उसने २५० करोड़ के नोट छापकर या तो बच से नोट छपवाकर उस उधार लक्षण लोगों का चुका दिया, और इस तरह २५० करोड़ चलाने में ज्यादा प्रयोग कर गया ।

यह तरीका तो खूनी काम में लाया जाता है जब कि सरकार प्राधिक कठिनाइया में पड़ी हुई होती है या तो विविधता बचने की राह पर होता है । पर कभी कभी अर्थनियम का व्यवसाय सुधारने के उद्देश्य में भी हुन्दी की दर दिगते के लिए फुलावटी नीति की प्रयोग लेनी पड़ता है । फुलावटी नीति में लोगों में तरकी फाटी है, और मासना मसीया के भीतर, इस नीति का प्रयोग करने से व्यवसाय पर अच्छा असर होता है, मुद्रा की पगड़ण और बारम्बार पतनन है । विशेषी आगत

पर इसका असर खराब पड़ता है। इसलिए धनी मुक भी बन्ही-कभी अपने लाभ के लिए इस नाति का मोमा के भीतर प्रयोग करते हैं। उसका तरीका इस तरह का है।

उत्पादन के बतौर हमन बताया है कि प्रसारक बक न ४०० करोड़ के नोटा के पीछे १२० करोड़ का सोना बनौर इसकी पुश्ती के रखा था। सोने की कीमत १ मुद्रा की १ तोला मोना थी और उसीका प्रतीक १ मुद्रा का नोट था। इसके माने थे १ तोला सोना = १ मुद्रा = १ मुद्रा का नोट। अर्थात् १ नाट की कीमत १ तोला सोना थी। अब हमन यह निश्चय कर लिया कि हम अपने नोट की कीमत एक तोला सोना न रख कर केवल पौन तोला मोना ही रखेंगे; तो फिर प्रसारक बक के पास जो १२० करोड़ का सोना ४०० करोड़ के नोटों की पुश्ती के लिए था वह नोटा की ३० प्रतिशत कीमत का न रहकर ४० प्रतिशत कीमत का हो गया। फल यह हुआ कि १२० करोड़ के मोन के बटल में १६० करोड़ के नोट निकालन की हमम शक्ति हा गई। बस, हमन नए नोट निकाल कर बक और सराफा की माफ्त ब्यापार में डाल दिए। ब्यापार पनपन लगा। चीजों के दाम बढ़ने लगें।

एक हद के भीतर फुलावट नीति से ब्यापार, व्यवसाय वाणिज्य और कारखानों पर अच्छा असर क्या होता है, विदेशी आयात पर बुरा असर क्या होता है इसकी चर्चा आगे करेंगे।

मौसिम के दिना में फसल जब पकती है तब अन्न बाजार में रुपए की टान होती है। उसकी वजह से ब्यापारियों में दिक्कत न हो और रुपए की कमी की वजह से किसानों की जिस नीचे दारणा में न बिक जाय, इस लिए बक ऐसी टान के समय में भी फुलावट करती है सही, पर यह थोड़े समय के लिए और स्वल्प मात्रा में। तरीका उमका वही है जो ब्यापार व्यवसाय की स्थायी उन्नति के लिए काम में लाया जाता है।

पर जो अस्थायी होता है उसमें सिक्के की कीमत नहीं बदली जाती। वहा तो केवल यही होता है कि नोट प्रसारक बक अत्यन्त सस्ते ब्याज पर लोगों को रुपए उधार देती है। मान लीजिए कि ब्याज इतना सस्ता कर दिया कि लोगों को रुपया उधार लेकर कारोबार में लगाने में

## रुपए की कहानी

अपगत लाभ प्रतीत होन लगा तो फिर चारा तरफ से घडाघड लोग रुपया उधार लना शुरू कर गे और नोट प्रसारक बक दूमरी बकों के जरिए रुपया उधार देना शुरू कर गये । मान लीजिए इस तरह २५० करोड रुपए ब नए नाट छाप कर बक ने उधार दे गिये तो चलन में २५० करोड रुपया और बढ गया ।

और गिरावट पदा करने के लिए ठाक इससे उठे उपायों का प्रयोग होता है—यानी या तो सरकार कर ज्यादा वसूल करती है और खच कम करती है या तो बक गुरु ऊंचे व्याज पर उधार लेकर बाजार से नोट खच लेती है । दोना हा के कारण चलन में से नोट निकल घात है और चलन में गिरावट पदा कर देते है । जहा फुलावट के कारण दाम चढते है वहा गिरावट के कारण दाम गिरते है ।

फुलावट मा गिरावट के सम्बन्ध में एक बान ध्यान में रखन की है । आवश्यकतानुसार नोट चलन में मूज बढ गये या घट गए केवल इसी लिए उर स्थिति को फुलावट और गिरावट की स्थिति नहीं कहना चाहिए । आवश्यकता में अधिक और मा भी थोड़े से मोन पर जब हू से बाहर नाटा का चलन बढ चल ना फुलावट, और पर्याप्त सोने पर आवश्यकता में कम नोटो का चलन हो जाय तो गिरावट की नीति बही जाना चाहिए । ममलन बैंक ने यह नियम कर रखा है कि १०० के नोट के चलन के पीछे ३० प्रतिशत माना बक के काप में रहेगा अब यदि मोन का अनुपात २० से नीचे जाना है ता हम कमग फुलावट की धार और ऊपर जाना है नी गिरावट की धार बढ रहे है ।

## विस्तार और मसोच

स्थभाव से और उचित परिमाण से आवश्यकतानुसार जो नोटों के चलन में कमी या बनी हो उसे स्वामाविक मसोच या विस्तार कहना चाहिए ।

मान लीजिए ग्रेग में धन बढा है, चीजों के दाम तेज है । विस्तार के लोग हमारा मान घडाघड ले रहे है । हमने अपना मान बच कर इस साल विस्तार से ५० करोड का सोना खरीना । उगा के मद्द १०० करोड



के नोट चलण में रक्व, हालांकि नियम के हिसाब से १५० करोड के भी नए नोट निकाल सकत थ । नए नोट, बिना सोन का कोष बन्गए नहीं निकाले । इसके अलावा पहले जो सोना १२० करोड का और नोट ४०० करोड के थ अब वह सोना १७० करोड का और नोट ५०० करोड के हो गए । इस तरह कुछ सोना, जो पहल नोटों के अनुपात से ३० प्रतिशत था वह अब ३४ प्रतिशत हो गया । दूसरे यह सारा काम जरूरत के मुताबिक हुआ । देण की सम्पत्ति बढ़ रही थी दाम बढ़ रहे थ चलण में ज्यादा नोटों की जरूरत भी थी । इसलिए जाहिया ठीक हुआ । यह स्वाभाविक विस्तार हुआ ।

इसी तरह मान लीजिए देश में भयंकर अकाल पडा भूमिबन्ध हुआ या प्ग महामारी हुई । इसके कारण देण की सम्पत्ति इम माल कम हो गई । बाहर से माल मगाया ज्यादा और भजा कम । इसलिए हमें २१ करोड सोना कुछ बाहर भजना पडा । वक न इस २५ करोड सोन के मद्द ५० करोड के नोट चलण में से निकाल निय । इम हिसाब से अब नोटों का चलण ४०० करोड से घट कर २५० करोड रह गया और सोना रह गया १२० करोड से घट कर कुल ६५ करोड जो नोटों की कुल कीमत का २० प्रतिशत हुआ । पर चूकि यह अब सावधानी से आवश्यकतानुसार हुआ, और सोने का परिमाण भी ३० से गिर कर २७ प्रतिशत रह गया इसलिए इस स्वाभाविक सकोच कह सकते ह ।

अथशास्त्री भामतीर से फुलावट या गिरावट इन दो ही परिभाषाओं का प्रयोग करते ह । पर मरा खयाल ह कि यह यथाय नहीं ह । सकोच और गिरावट में कुछ भेद तो हही और इसी तरह विस्तार और फुलावट में भी भेद ह । यह भेद अल्प सूक्ष्म ह पर इस भेद को मान लेना ही गायद ज्यादा शास्त्रीय ह । इसलिए मन यह भू मान कर फुलावट—विस्तार, और गिरावट—सकोच ऐसी अलग-अलग परिभाषाए रखी ह । यह भेद इसलिए मान लिया ह कि जहां फुलावट और गिरावट कृत्रिम पायो से की जाती ह और विंगव हेतु को लेकर की जाती ह सबाच ठीक विस्तार आवश्यकतानुसार स्वभावतया ही होते ह । तो भी यह सही हमीक यह भेद सूक्ष्म-सा ही ह ।

चकि पृतावट या गिगवट कृत्रिम उपायों में घोर विगप हुतु क  
निए की जाती है इसलिए यह क्या का जाती है घोर इसका क्या फल  
होता है यह समझना भी जरूरी है । पर इसी मिलामिड में एक घोर मन  
का उल्लेख आवश्यक है ।

जिन्यों के दाम में घटा-बढ़ी के माट तौर पर दो कारण हो सकते  
हैं— एक तो उन जिसों में ही सम्बन्ध रखनवाला दूसरा उस द्रव्य  
में सम्बन्ध रखनवाला जिसके द्वारा दाम सूचित किया जाता है  
जैसे नोट या धातु का सिक्का । एक चीज की कीमत कम दो पस थी  
आज तीन पस है । अथवा इसका कारण तो जगह बदला है । इस मकता  
है कि पस के परिमाण में कोई अन्तर नहीं पड़ा है पर वह चीज घट  
चली है— बल जितनी उपलब्ध थी आज उतनी नहीं है— घोर इस घटी  
के अनुपात में उसका दाम बढ़ गया है । घोर ही मकता है कि चीज के  
परिमाण में कोई अन्तर नहीं पड़ा है पर पस का परिमाण बढ़ गया है,  
घोर इस वृद्धि के अनुपात में उस चीज का दाम बढ़ चला है ।

यहां जा मवाल पता होता है वह यों रखा जा सकता है कि दाम बढ़ा  
वह चात्र महंगा होने से या द्रव्य मन्ता होने से ? अगर हम Value के  
अर्थ में मूल्य और Price के अर्थ में नाम गलत व्यवहृत करें तो इसे यों  
रख सकते हैं कि उस वस्तु का अचना मूल्य घट जाने के या द्रव्य का  
अचना मूल्य गिर जाने के कारण नाम बढ़ा ?

वस्तुओं के मूल्य में घटा-बढ़ी के कारण कुछ निकालना बहुत प्रयत्न  
है । एक फलन भोगी गई अनावृष्टि से दूसरी बाढ़ या जल-बाहुल्य से  
तीसरी टिड्डियों के आक्रमण से । तीनों चीजें हम हा गये, उनकी मात्रा  
में की-र्यों बनी गयीं फलन उनका मूल्य बढ़ गया— अतः उनके नामों में  
बढ़ी गई । सम्भव नहीं कि कार्भ भी एना मन प्रतिपादित किया जा सके  
जो अनावृष्टि बाढ़ और टिड्डियों का आक्रमण जल विरिध अस्पष्ट  
कारणों का अचना घटे में लाकर तर्कजित अतिशयता का विभी भी है  
नह सम्मता में परिणत कर सके । सम्भव में रहा तीन कारणों में एक

ह वहां तीन मी तो क्या तीन हजार भी हो सकते ह। किसी वस्तु के मूल्य में इस कारण भी वृद्धि हो सकती ह कि लन्दन के 'टाइम्स' अखबार न एक खास तरहकी राय जाहिर कर दी—या राष्ट्रपति रूजवेल्ट न किसी पत्रकार के तत्सम्बन्धी प्रश्न को मजाक में उड़ा दिया—या किसी करोड़ पति ने स्वप्न देखा कि वह उस वस्तु के ढेर पर बठा हुआ आसमान की ओर उठता जा रहा ह। जहा दाम में घटा बढी किसी वस्तु के मूल्य में घटा बढी का प्रतिबिम्ब ह क्या इस घटा बढी पर कोई सूत्रात्मक मत या नियम प्रकाश नहीं डाल सकता—जिज्ञासु को प्रत्येक कारण का अलग अन्वेषण और उसकी अलग व्याख्या करनी पडगी।

### द्रव्य-परिमाण-मत

द्रव्य अर्थात् रुपए पैसे के मूल्य में घटा-बढी के कारण न तो इतन अधिक ह न इतन विभिन्न। इसलिए इनके सम्बन्ध में Ricardo नामक अग्रज शास्त्री के समय से एक ऐसा उपयोगी मत चला आता ह और उसका नाम ह द्रव्य परिमाण मत (Quantity Theory of Money)। जितने भी दाम होंगे द्रव्य के ही रूप में होंगे। इसलिए द्रव्य के रूप में वृद्धि या ह्रास के जो भी कारण होंगे वे दामों के प्रसंग में सबत्र लागू होंगे। इस मत का निचोड यह ह —

द्रव्य के मूल्य में घटा बढी का दामों पर उल्टा असर होता ह और वे उसी अनुपात से तेज या मन्डे हो जाते ह। मान लीजिए कि किसी वस्तु का दाम होता ह ४ ग्रन सोना। अगर सोने का मूल्य घट कर आधा हो जाय तो उस चीज का दाम ४ ग्रन की जगह ८ ग्रन सोना हो जायगा।

अब यह देखना ह कि द्रव्य के मूल्य में घटा-बढी होती क्यों ह। इसके चार कारण हो सकते हैं —

(१) द्रव्य के परिमाण का घटना-बढना। सोना या चांदी खानो से ज्यादा निकली तो उसका मूल्य कम हो गया—कम निकली तो उसका मूल्य बढ गया। अगर सिक्के सोना चांदी के ह तो उनके मूल्य में भी एसी ही घटा बढी होनी और चीजा के दाम में—उसी हिसाब से—फरक पडगा। अगर चलण में सोना चांदी के सिक्को की जगह कागजी नोट

ह और इनका परिमाण बढ़ता घटता है तो इनके मूल्य में भी उन्ही प्रकार अन्तर पड़गा और बीजा के दाम उन्ही प्रकार तेज या मन्हे होंगे ।

(२) हा सकता है कि द्रव्य का परिमाण ज्यों का-त्या बना हुआ है पर उमक चलण या रफ्तार में कुछ खाम कारण या कारणा से तेजी आ गई । इस तेजी का असर वही होगा जो उस द्रव्य का परिमाण बढ़ने का होता । कारण यह कि रफ्तार में तेजी व मान है उतन ही द्रव्य का ज्यादा चक्कर लगाना अर्थात् द्रव्य के परिमाण का बड़ सा जाना । अगर चलण या रफ्तार धीमी हो गई तो इसका असर उल्टा पड़गा क्योंकि इसका अर्थ होगा द्रव्य के परिमाण का घट सा जाना । जब काइ रूप को अपने पास रचना नहीं चाहता तब दाम चढ़ते हैं जब लोग रूप को दबाकर बंठ जाते हैं तब दाम गिरते हैं ।

(३) द्रव्य की माग अवस्था विशेष में इस कारण कम हो जाती है कि नाग भुगतान के लिए चक्र या हुण्डी-पुरज का अधिकाधिक व्यवहार करने लगते हैं । ऐसी अवस्था में दाम गिरते नहीं, ऊपर चढ़ते हैं क्योंकि द्रव्य की माग कम हो गई द्रव्य का मूल्य गिर गया, बीजा के दामों में तेजी आ गई । चक्र और हुण्डी भी तो आखिर द्रव्य के ही प्रतीक हैं । उनकी मरुपा बड़ गई तो एक प्रकार से वह द्रव्य ही बड़ गया क्योंकि यदि चक्र हुण्डी न होनी तो उनके स्थान की पूर्ति नोटा को करनी पड़ती । इसलिए इस पहलू को ध्यान में रखा जा सकता है कि द्रव्य परिमाण बड़ गया इसलिए द्रव्य के दाम गिर गए, और बीजा के दाम चढ़ गए ।

(४) अगर इसके विपरीत यह भी हा सकता है कि वाणिज्य-व्यापार या लेन देन की वृद्धि के कारण द्रव्य की माग बड़ जाय । माग की पूर्ति न की जाय और चलण में द्रव्य न बढ़ाया जाय तो स्पष्ट है कि ऐसी अवस्था में द्रव्य का मूल्य बढ़गा—अर्थात् बीजों के दाम गिरेंगे ।

द्रव्य के मूल्य में घटा बढ़ी के कारणों को समझाने के लिए ऊपर यह मान लिया है कि जहां एक बात बदलती है वहां और सब बातें समान बनी रहती हैं । पर प्रकृत जीवन में ऐसी अवस्था बहुत कम मिलती है । एक नदी बनकर बाँटे प्रायः साथ-ही-साथ बहती रहती है और परस्पर विरोधी गतिमा की मुठभड़क बनी रहती है । घटा बढ़ी का ज

कारण बताया गया है उस पर फिर एक नजर डालिए। सिखा है कि द्रव्य की माग-बचन से उसका मूल्य बढ़ेगा और चीजा के दाम गिरेंगे। मगर सम्भव है कि जहां एक और द्रव्य की माग बढ़े वहां दूसरी और साथ ही साथ उसका परिमाण भी इतना बढ़ जाय कि उसके मूल्य में किसी प्रकार की वृद्धि न हो और दामों पर कोई असर न पड़े। वास्तव में वस्तु स्थिति कभी कभी इतनी जटिल होती है कि उसका पूरा विश्लेषण करना और यह जान लेना कि वह कौन-कौन से कारणों के फलस्वरूप बनी है अत्यंत कठिन कार्य हो जाता है। पर जटिल-से जटिल अवस्था में भी द्रव्य के मूल्य में घटाव बनी उपरोक्त कारणों से ही होती है—चाहे उनमें से एक मीजुद हो चाहे एक से अधिक। माग बढ़ेगी या परिमाण कम होगा तो उसके मूल्य में वृद्धि होगी। माग घटेगी या परिमाण बढ़ेगा तो मूल्य में ह्रास होगा। यह सरल या जटिल प्रत्येक अवस्था के लिए मत्य है।

उपरोक्त विश्लेषण को सामन रख कर ही हम 'द्रव्य परिमाण मत' के शुद्ध स्वरूप को समझ सकते हैं जो यह है कि सिक्का—चाहे वह स्वयं मिट्टी मट्टा हो चाहे प्रतीक मुद्रा—जब चलण में ज्यादा होता है तो जिन्सों के दाम—बढ़ चलण के अनुपात से—बढ़ जाते हैं और सिक्का चलण में कम होता है तो जितना कम होता है उमी अनुपात से जिन्सों के दाम गिरते हैं।

यह बात सहज ही समझ में आ सकती है। मान लीजिए कि अचानक सोने की नई खानें निकल आईं और सोने की पदाइश बहुत बढ़ चली। उसके कारण सोने के दाम गिर गए, यहां तक कि सोने के नाम पहले से घाघ हो गए—तो स्वभावतया ही, यदि हम विदेशों में खरीद से ज्यादा माल बचने रहे हैं तो बजल में पहले जितना सोना खरीदते थे उसके बजाय उतने ही माल के लिए दुगुना सोना हमें मिल सकेगा। सोना दुगुना मिलेगा उम पर फिर नोट भी ज्यादा चलण में बनेंगे। जैसे पहले यदि १० करोड़ का नया सोना हम हर साल खरीदते थे और उसके मद्द ३० करोड़ के नए नोट चलण में रखते थे तो अब उतने ही माल के बदले में विदेशों में हमें १० करोड़ के बजाय ( क्योंकि सोने के दाम घाघ हो गए ) २० करोड़ का सोना मिलेगा जिसके मद्द हम आसानी से ६० करोड़ के नए नोट

चलण में रम्ब सकेंगे । नए नोट चलण म आन म ब्याज गिरंगा नाणा मदा हागा और बहुतायत स उधार मिल सकगा । बाई भा चीज कम हाती ह तो बह महगा हा जानी ह ज्यादा हाती ह ता मम्नी होती ह । चूकि नाणा ज्यादा हा गया इमलिए नाणा सस्ता हा गया । नाणा सस्ता हा गया इमके आन दूसर गंगे म यह हुए कि चाज महगा हा गइ । दर असल जब हम का चाज खरीत ह ता उम चाज का नाण क साथ तबाला मात्र हाता ह । याना नाणा हम प्रचत ह और चाज खरात ह । जब नाणा सस्ता हाता ह ता मन् म बिकगा—अथान त्रिमा क साथ नाण की अन्ना-अन्नी म, यन् नागा मन्ता ह ता हम नाणा ज्यादा दता पडगा । दूसर गंगे म इमका अर्थ यह हुआ कि चाजा क काम महग हा गए ।

जब नाट चलण म बन् जान ह ता नाणा आमाती और मट्टलियत स और बहुतायत म कम बाज पर मिलन लगता ह । एमा हालत म लागी का अपना व्यवसाय बढ़ान का फिक्र हाता ह । नए काराबार म रुपया लगान में किमा का हिचकिचाहट नही हाती । नताजा मट्ट हाता ह कि व्यापार पतपता ह हर चाज के काम बन्त ह । पर इम मन क पूणतया सिद्ध हात का कइ एक गते ह । एक गत ना यह ह कि द्रव्य का चलण बडा—खाट नाग का या मिक्का का—उनता ही यन् व्यापार और लन लन भा बन् गया ना फिर काम नहा बन्ग । दाम ता तभा बढग जब कि चलण अथभाटन बन् गया हा—अथान् यन् व्यापार बडा ह रुपए म एक घाता और चलण बन् गमा रुपए म ग घाता, तभी नाणा मन्ता ह एमा हम बहेंगे । एमा हालत में रुपए की छूट हागा और दसक कारण चाजा क दाम बढग ।

इमके विपरान यन् व्यापार या लन लन का जरूरत बढ़ी रुपए म एक घाता और चलण बन् पीन घाता ही, ता यह बन् जायगा कि अथभाटन चलण म संकोष हुआ ह और इसलिये चाजा के काम भुजाव का आर हाग । अमल में तो इम मन का मिडि के निणहमें यह गत लगाना हागो कि यन् ल तुननामक स्थितिया हर बात में विचुल यकमा ह ना फिर यह नि संकोष कडा जा सकता ह कि द्रव्य परिमाण (नाट वा मिक्का का घनता) बढन पर त्रिना परिमाण बडा उमी अनुपात म चाजा क काम बन्ग और नाणा मन्ता हागा । और द्रव्य परिमाण घटन पर, त्रिना परिमाण

घटा उसी अनुपात से चीजों के नाम गिरग ।

## द्रव्य की पगुता •

यहां फुलावट और गिरावट के सम्बन्धमें हम एक बात कहनी है जो जाहिरा तौर पर अवनक जो कुछ कहा जा चुका है उसके विपरीत जान पड़ती है । हर हालत में फुलावट और गिरावट के नताज वही नहीं हात जो ऊपर बनाय जा चुके हैं । सम्भव है फुलावट हात हुए भी दाम समानमे वन रहे या उनमें तेजी भी आय ता नाममात्रकी । और सम्भव है गिरावट होते हुए भी जिंसा के दाम घट जाय । आप कह सकते हैं कि यह खूब रही ? और अगर यह सच है तो इससे ता द्रव्य परिमाण मत का खाखला पन ही साबित हुआ । आप दोनों बातों का सामञ्जस्य कैसे करते हैं ?

फुलावट हाते हुए भी अगर लोगों के खच करन का वेग उस हिसाब से नहीं बढ़ता और द्रव्य या पसा पगु सा हा कर बठा या पडा रहता है तब दामों में उतनी तेजी नहीं आ सकती जितनी फुलावट का देखते हुए सम्भव जान पड़ती है । इस महासमर में इंग्लण्ड की बात लीजिए । वहां फुलावट काफ़ी हो चुकी है पर उस अनुपात में दाम नहीं बढ़ पाय है । कारण यह है कि लाग मौजूदा हालत में मनोवाञ्छित रीति से जिन्स नहीं खरीद सकते । उनके पास पसा अधिक है उनकी अभावित बन्द गई है पर वह पसा तरह-तरह के नियंत्रणों के कारण निष्क्रिय सा पडा हुआ है । सरकार को लडाई के लिए हर तरह की जिन्स की जरूरत है—और सक्षत जरूरत है । अगर बाजार में उन जिंसा का खरीदत समय सरकार को सबसाधारण की प्रतियोगिता का सामना करना पड, ता उसकी समस्या बड़ी जटिल हो जाय, और लडाई के लिए जसा तयारी होना चाहिए, न हो सके । उन प्रतियोगिता को सरकार न विभिन्न उपायों से बहुत कुछ रोक दिया है । इस कारण लोगों की क्रय शक्ति अक्षत सी हो गई है—उनके पास पसा अधिकाधिक होत हुए भी वह उस एक हृद से भाग खच करन में असमथ है । फिर दाम फुलावट के हिसाब से बन्द ता कस ?

मान लीजिए कि लडाई बन्द होत ही सरकार की नाति फुलावट से गिरावट की हा गई तो क्या दाम गिरने लगग ? आज् आय-वृद्धि हाने हुए

भी व्यय करने क माग वन्त ह, इमलिए उस पम का नामो पर जा घसर पट सकता था वह नहा पड रहा ह । पर, कल अगर यह माग मुल गए जीर लाग मनमाना सख करन क लिए स्वतन्त्र हा गए ता गिरावट क चावजूत भी जिन्सों के दामा में बहद तजी था सकती ह ।

सारास यह कि दामा की दृष्टि म प्रधानता इस प्रश्न का ह कि कितना पसा खच हो रहा ह —न कि इस प्रश्न की कि कितना पसा मौजूद ह । साधारण ममयम यह भूत काई आम अथ नहीं रक्ता क्याकि नाग अपन पम की मनमानी रीति स खच करने क लिए स्वतन्त्र रहत ह । पर एम महाममर जैसे असाधारण समय म — जबकि पसा होना एक बात ह उम मनमानी रीति स खच करने की स्वतन्त्रता होना दूसरी बात— यह भद विक्षय महस्व पूण ह । फिर भी यह बात कोई एसी नहीं, जिसका द्रव्य-परिमाण-मन स मल या सामञ्जस्य न हो सक । वास्तव में यह उसा मत क अन्वयन ह, क्याकि व द्रव्य क परिमाण पर ही नहीं उसक चरण या रफतार पर भी जोर दना ह । हम अपन गल्लो को दाहरान ह— जब काई रुपए का अपन पास रक्ता नहीं चाहता तब दाम चान ह जब रोग रुपए का दबा कर बठ जात ह तब दाम गिरते ह । ' इस समय रुपया अधिक हात हुए भी दबा हुआ ह, इसलिए नाम जितन ऊच हा मकन थ नहीं ह ।



पर चलण क स्वाभाविक विस्तार और मकोच स जो असर चीजा के दामो पर पडता ह उसस कही अधिक जोरदार असर चीजा के दामा पर चलण की फुलावट और गिरावट क कारण पडता ह । चूकि विस्तार या सकोच तो अपन आप बरीब करीब स्वभाव स ही होता ह इसका गति भी मद हाती ह और इसका असर भी मह्य और मद्दु होता ह ।

पर चूकि फुलावट और गिरावट जान बूझ कर की जाती ह इसकी गति द्रुत होती ह । इसलिए जितनी ही कस कर फुलावट या गिरावट की नीति काम म लाई जाय उतना ही अधिक तात्कालिक असर इस नीति का जि सा की कीमत पर होगा । और खास कर फुलावट की नीति म ता— यदि अत्यधिक बपरिमाण, फुलावट की जाय तौ—लोगो का नोटो स विश्वास इस कतर भाग जाता ह कि व नाटा को एक रात भी अपन पास रखना नासक करत ह और अपना पूजी पल्ला जि सो म ही रोचना पसन् करत ह । इसका नतीजा यह होता ह कि चीजा क दाम घनाप घनाप बन जात ह । और याज की दर भी बढन लगनी ह ।

लंडार्ड क बाद जमन माक और रुसी रूबल के चलण की फुलावट यहा तक बढी की साधारण समय म जितन नोट चलण म थ उसस कई लाख गुन नोट चलण म रख दिए गए । नतीजा यह हुआ कि नाणा कागज क टुकडा की तरह इतना सस्ता हो गया कि उसकी कोई कीमत हा नही रह गई और जमनी में जिस चीज के दाम साधारण समय म १२ माक रह हाग उसके दाम लाखो माक तक हो गए । ज्यो ज्यो माक छप छप कर जार स चलण में आन लग त्या त्यो बढी तजा के साथ चीजा के दाम बन लग —यहा तक कि हर मिनिट दाम ऊंचे जान लग । कहा जाता ह कि जब एक नानवाई अपन गहक का रानी बचकर उसक माक पाता था तो उस यह चिन्ता होती थी कि ताजा गेटी बनान के लिए आग खराबत खरीन्त कही आग क काम बढ न जाय । इसलिए वह राटी बचत ही माक लकर बनहाणा लोड कर आटवाले की दूकान पर पहुच कर भाटा ल लता था और माक म रिगड छून पर ही शांति स सांस लता था ।

## रेहद फुलावट के नतीजे

उम जमान की इसस नी ज्यादा मजदार कई सच्ची कहानिया प्रचलित ह । जब माक की कीमत बीडोस भी कम होन जा रही थी, तब तो मॉस्ट्रिया और जमनी के लोग का विश्वास इस बुरी तरह डुल गया कि कई लोगों न तो अपनी कफन काठी भी मरने के पहले खरी कर रख दी ताकि वाद म कहीं दाम बगुमार ज्यादा न बढ जाय ।

एक प्रतिष्ठित भारतीय कोठी का कुछ माक एक जमन व्यापारी स पावना था । वह माक हजारो की तात्त में था जिसकी साधारण समय म हजारों रुपए कीमत थी । भारतीय कोठी न जब जमन व्यापारी स रुपया मागा और लिखा कि थाप हमारे माक भज दीजिए तो जमन व्यापारी न जवाब लिखा कि महाग्य आपक २५,००० माक पावन थ, पर म जो यद खत आपको लिख रहा हू उसके टिकिट और लिफाफ के दाम ही तो ढाई लाख माक हा जायग । इस हिसाब से यदि म हिसाब लगाऊ तो उल्टा मरा ही आप स पावना निकलेगा ।

बहने ४ मॉस्ट्रिया म दो भाई थ जिनमें से एक के पास २० ३० हजार फ्राउन थ जिसके कारण वह सम्पन्न माना जाता था । और दूसरा शराबी था, जो निय जिनता कमाना था उसका एक बडा हिस्सा गराब में बरबाद कर देता था और गराब की बोल्लें घर में जमा रखता था । जय फ्राउन की फुलावट हू तय जो भाई सम्पन्न था उसके फ्राउन ता बीडोस हो गए पर जो शराबी था उनकी खाली बातला बा कीमत लाग्यो फ्राउन हा गई । नाण की फुलावट क्या क्या करामात तियाती ह इसका यह एक मजेदार उदाहरण ह । धरनु ।

मान लीजिए कि हमारे महा २५० करोड रुपए के नोटो का चलण ह उसे बडा कर २५,००० करोड के नोटो का कुल चलण कर तिया जाय— सपात् सीगुना चलण बडा तिया जाय, तो स्वभातया रुपए की साख नौमा हिस्सा रह जायगी । और जो मॅपी नी सत्री आज दो पये मेर मिनती ह उसक नाम २०० पये मेर, अयात् एक मेर मॅपी की कीमत करीब-करीब ३ रुपए हा जायगी ।

ऊपर हमने बताया ह कि नाणा चलण में ज्यादा होता ह तो चीजों

नाम बनवाने आते हैं और सस्ते व्याज में उधार मिलन लगता है। पर यह मसन व्याज की बात केवल नियंत्रित विस्तार तक ही सीमित है—अर्थात् व्यापार को बनवाने के लिए या केवल मौसमी ढान को मटन के लिए ही जब हम चलन में सिक्का ज्यादा डालते हैं, और मा भी नियंत्रण के साथ स्वरूप मात्रा में तभी तक व्याज मटा रहता है। पर जहा फुलावट की नीति जारी है गुरु की और चलन में लोग का विश्वास बपित हुआ कि व्याज की दर जोर में बढन लगती है।

जमानों में फुलावट के जमान में चीजा के दाम कैसे बढ गए, इसका उदाहरण हमने ऊपर दिया है। उस जमान में व्याज की दर भी यहा तक उनी थी कि एक जमान में व्याज १२०० प्रतिशत अर्थात् १०० सिक्के का प्राज एक साल का १२० रुपया हा गया। आपन यदि कुल १०० सिक्के उधार लिए ता एक साल के बाद आपकी अपन देनदार से १२०० सिक्के प्राज के मिल गए। एसी विषम स्थिति हा गई थी।

यह कुछ अनहोनी भी बान आती है कि इतनी ऊंची प्राज की दर हो सकती है—और मा भी एक मुसम्भ देन में। बाबुला प्राज बडा हाता है। पठान लोग गरीबा को अत्यंत ऊच व्याज पर उधार देन है। पर य १२०० प्रतिशत का व्याज ता काबुलियों में भी बानी मारता है। पर उस समय की परिस्थिति को देखते हुए इसमें कोई आश्चर्य की बान नहा है।

जसा कि हमन पहले बताया है जब फुलावट नीति जोर में गुरु होनी है तो चलन का मूल्य घडाघड गिरन लगता है। मान लीजिए जिम चलन का मूल्य प्राज एक मात्रा है उसका मूल्य एक मान में शनीय रह गया और भय यह है कि प्रायत महीन बीस दिन के बाद १/२ रह जाय या इससे भी कम हो जाय तो फिर चलन अपन पास कोई नहीं रखगा। इसलिए जिम नानबाई का हमन उदाहरण दिया है वह बढाहा दौड कर मारा का प्राडा खरीद कर हा दम एता था। एमी जहा हालत हो वहा फिर चलन को अपन पास कौन रखे ? जिसन उधार दिया वह तो मारा गया बयाकि माल भर के लिए यदि किमी न १०० भाव उधार लिए और माके के नाम गिर कर माल भर में १/२ रह जाय तो जो माके उस बापिम दिवेंगे वे माके बजाय आर माके का मा काम लेंगे। इसके मान यह हुए कि

यद्यपि उसे वापिस १०० मूल रकम और १२०० व्याज के कुल १३०० माक मिले, पर १२०० की कीमत  $2^1$  के हिमाव मे  $1^3 \times 1 = 6^3$  माक ही कुल रह गई। इतना व्याज पान पर भी बज दनवाला घाटे में ही रहा। यही कारण है कि इस तरह की फुलावट की नीति के जमान में नाणा प्रचुर मात्रा में होने हुए भी व्याज की दर बहुत बढ़ जाती है क्योंकि उधार देनेवाले को बड़ी जोखिम उठाना पड़ती है।

## फुलावट का रुत पर अमर

फुलावट में प्रतीक का साथ में ठस पहुच गई और प्रतीक की मिकदार चलन में ज्याग हा गर्ब। इसलिए जया कि पहले बता चुक है जिन्नों के दाम भी बढ गए। पर किसी बजदार को एक मी का देना था और पावन दार का उतना ही पावना था तो—यद्यपि जब दोनो का लेन इन हुआ था तब प्रतीक स्वयंसिद्ध मुद्रा का सच्चा प्रतिनिधि रहा है—आज प्रतीक स्वयंसिद्ध मुद्रा का प्रतिनिधित्व खो बटा तब भी पावनदार को वही मी मिलेंग, और देनेवाले को वही मी दन पडेंग। फुलावट के कारण प्रतीक की करामात कम हो गई इस लेन-देन की निर्धारित रकम पर कोई अमर नहीं पडगा।

पहले जो एक रुपया दम सेर गहू खरीद सकता था, अब फुलावट के कारण रुपय की साथ गिर गई और जिन्सो के दाम बढ गए इसलिए चाहे दस सेर गहू के बदल ८ सेर ही खरीद सक पर पावनदार देनेदार मे यह नहीं कह सकता, 'भाई माहब—मन जब आपका उधार लिया तब रुपय की मात्र मोनह कला सपूण थी। प्रतीक के स्वामी को बंधवाले आठा पहर छूत स्वयंसिद्ध मुद्रा देने थे। अब वह बान नहीं रही। फुलावट की नीति के कारण प्रतीक हतथ्री हो गया। इसकी वनाए घट गड। १० सेर गहू के बजाय अब डमक बढ़ते मे ८ सेर गहू ही मिल सकते है। इसलिए भरा रुपया जो पहले मोनह कलावाला था उसीका लौटाने की आपकी जिम्मदारी है। इसलिए आप या तो मुझ स्वयंसिद्ध मुद्रा का प्रतीक लौटाइए, और यदि आप मुझ घट नाम का रुपया लौटाना चाहते है तो मी के ऋण के बजाय आपका मवा मी देना होगा। यदि पावनेदार

एसी बात कहे तो देनदार अवश्य ही कहेगा, "तुम कहा आवास पाताल की बातें कर रहे हो ? मालूम होता है तुम्हारे दिमाग की कोई कील गिर भागी है इसलिए बहतर है कि तुम अपनी चिकित्सा कराओ ।

## लाम आर हानि

पर बावजूद इस प्रश्नोत्तरी के यह ता मनना ही पडगा कि इस फुलावट का नीति के कारण पावनदार को घाटा हुआ और देनदार को लाभ, क्योंकि पावनदार का जो पावना था वह था पूणकला रुपया या सुवर्ण मुद्रा और अब वापिस मिल रहा है उस घटी कीमत का प्रतीक, जो पुरान रुपए की अपेक्षा कम जित खरी सकता है । पर चूँकि कानून का यह तकाजा है कि फुलावट या गिरावट के कारण प्रतीक की कीमत में चाहे जो घटा बढी है (उस घटा बढी का निश्चिन्त रूपेण मापन का कोई साधन नहीं है और यदि हो भी तो वह सरकार को माय नहीं है) उससे पावनदार या देनदार के पावन दन की रकम पर कोई असर नहीं होगा—अर्थात् यदि स्वयंसिद्ध मुद्रा के चलण के समय का १०० का पावना देना है तो वह फुलावट-नीति के समय भी १०० का ही पावना देना माना जायगा ।

करोडा का दना पावना हर मुल्क में होता है और उस दन-पावन की रकम ज्या-की-त्या बनी रहती है इसलिए सबसाधारण को प्रतीक की कीमत गिर गई है या बढ गई है इसका घाडी घटा-बढी में कोई पता भी नहीं चलता । पर पता न भी रहे तो भी उसके असर से लोग विचिन्त नहीं रहते । यदि लाभ चम्प है तो सभी को उसका फल भुगतना पडता है और गिरते हैं तब भी यह सभी को लागू पडता है ।

एक सावधान और गम्पन्न व्यक्ति आस्ट्रिया में कस दरिद्र हो गया और उसका भाई जागराबी था कम धनिक बन गया इसका उदाहरण हम पत्र देख आय है । यद्यपि फुलावट के कारण प्रतीक मुद्रा की दर कितनी गिर गई है इसका माप तोल का सबसाधारण को पूरा पता नहीं चलता पर ज्ञानवाण तो जानते ही हैं कि फुलावट के कारण प्रतीक की कीमत कम हो जाती है और इसके फलस्वरूप पावनदार का नकद रुपया रखनवाले को जितनी की खपत करनवाणे को मजदूरपणा माना

को, और जिनकी आय निर्धारित है उनको (जसे जमादार पन्शनयापता लोग, नौकरीपशा लोग, कर बमूल करनेवाली मस्थाए—जसे सरकार, म्युनिसिपलिटि, कालेज, स्कूल इत्यादि) हानि होनी है, और कजदार लोग, कारखानवाले, माल पत्र करनवाले, (जसे किसान, जुलाहा धडर, लोहार, चमार आदि) इन लोगो को लाभ होना है ।

गिरावट की नीति में जिह फुलावट में लाभ होता है उनका हानि है और फुलावट में जिहे नुकसान है, उनको लाभ है ।

इस फुलावट या गिरावट के कारण हमारी मुद्रा की कामत पर विन्गाम क्या असर होता है इसका भी जरा विवेचन कर लें।

हमन पहले बताया है कि प्रतीक मुद्रा तथा स्वयंसिद्ध मुद्रा की प्रतिनिधि मात्रा—अर्थात् एक सुवर्ण मुद्रा की कीमत का प्रतीक हम नोट प्रसारक बैंक के पास पंग करें तो हम एक सुवर्ण मुद्रा पान के अधिकारी हांग और बैंक एक सुवर्ण मुद्रा देन के लिए बाध्य हांगी। पर यह अधिकार और जिम्मेदारी दोनों-के-दोना फुलावट नीति के प्रवेग करत ही समाप्त हो जाते हैं और गिरावट नीति के अग्न पर दोनों और भी सुरक्षित बन जात हैं।

कारण स्पष्ट है। थोड़े से सोना की पूजा पर एक तरफ तो अर्थात् और अपरिमाण प्रतीक चलण में डाल दिया जाय और दूसरी तरफ प्रतीक के स्वामी का प्रताक के बन्ले में स्वयंसिद्ध मुद्रा पान का अधिकार अभुण्य घना रहे और बैंक प्रतीक मुद्रा के बन्ले में सुवर्ण मुद्रा देन के लिए बाध्य हा—य दोनों बात असंगत है क्योंकि १२० करोड़ की कीमत के सोना के आधार पर यदि ३२०० करोड़ के नाट चलण में डाल दिया जाय और उनमें से यदि २०० करोड़ की कीमत के नोटवाले भी अपने अधिकार का उपयोग कर और बैंक से नोट भुना कर सुवर्ण मुद्रा माग तो बैंक का अपना दरवाजा बन्द करने के सिवा कोई चारा न होगा। कुल पूजा ही यदि १२० करोड़ है तो फिर २०० करोड़ के नोटों का भगतान बैंक चुका ही कैसे सकती है? ज्यादा से ज्यादा—३२०० करोड़ के नोटों में से—कुल १२० करोड़ ही तो चका सकती है। बाकी के नोटों के पीछे जब बाप में सोना ही नहीं रहता तो फिर नोटों की गुडनी ही नस्तनावूद हा जाती है और इसलिए नाटा के साथ गूँथवन रह जाती है। इसलिए जहा फुलावट नीति के प्रयाग का विचार हुआ कि प्रतीक मुद्रा के स्वामी का सुवर्ण मुद्रा पान का अधिकार समाप्त हुआ।

गिरावट की नीति में, इनके विरगीत यह अधिकार और भी ठोग बन

जाना है, क्योंकि चरण व नाटा व परिमाण व मुकाबले में वक व काय में स्थित मान का परिमाण और भी बढ़ जाता है। इसलिए स्वभावतया प्रतीक मुद्रा की साख बढ़ जाती है। पर फुलावट-नीति में तो प्रतीक नाममान का प्रतीक रहता है। पहले प्रतीक की कीमत जो एक मुवण मुद्रा थी, फुलावट हान पर अब उसकी कोई निश्चित कीमत नहीं रहो। अब प्रतीक की कीमत उसकी भाख की घटा-बढ़ी के अनुसार घटती और बढ़ती रहती है। और वह साख फुलावट व परिमाण व पीछे कमी बढ़ होती रहती है। यदि फुलावट ज्यादा होती है तो जसाकि ऊपर बताया है प्रतीक की कीमत ज्यादा गिर जाती है और यदि फुलावट अप्रत्याशित कम होती है तो प्रतीक की कीमत कम गिरती है।

जब तक प्रतीक और स्वयंसिद्ध मुद्रा का कानून सम्बन्ध था, दोनों गठजोड़-से बढ़ थ, तब तक तो प्रतीक की निर्धारित कीमत कायम थी। पर जहां प्रतीक और स्वयंसिद्ध मुद्रा का तलाक हुआ कि कीमत की स्थिरता गायब हुई। यद्यपि कहने के लिए तो प्रतीक फिर भी एक मुवण मुद्रा का नोट ही होगा जसा कि इंग्लण्ड में एक पाउण्ड का नोट आज भी एक पाउण्ड का नोट ही कहलाता है पर उसका मान यह नहीं कि उसके पीछे एक पाउण्ड की मुवण मुद्रा पड़ी है, जिस हम चाहें जब तक आफ इंग्लण्ड में माग लगे और वह हमें दे दगी। इस तलाक के बाद असल में तो प्रतीक की कीमत कभी पतन की तरह हो जाती है और उस हवा के झोंके व बल पर पतनगिगती है या उठती है उमो तरह प्रतीक की कीमत भी चरण की फुलावट की कमी-बढ़ी व साधारण पर हिलारे खाता रहती है।

### प्रतीक की कीमत और विदेशी बाजार

यह सही है कि अवसाधारण का फुलावट या गिरावट के कारण प्रतीक की दर में क्या घटा-बढ़ी हुई इसका कोई पता नहीं चलता क्योंकि उनकी नदरों व मामने तो सिवा जिन्मा की कीमत की घटा-बढ़ी के और तब तक चरण नहीं माने जिनसे उन्हें प्रतीक की नई कीमत का प्रत्यक्ष पान हो। उनके सामने रपए की दो पहलवाली गिनत व बही दनदार पावनदार की रकम है वही रूपए का नाम है।



पर विदेश में लोग हमारे प्रतीक की कीमत के सम्बन्ध में इतना अधिकार नहीं रहते। उन्हें हमारे प्रतीक की कीमत का और उसमें राज होनेवाली घटा-बढ़ती की करीब करीब सही माप-तौल मिल जाता है और इसलिए जस मनुष्य अपने चहर को स्वयं नहीं देख सकता किन्तु दपण की सहायता से अपने मुह की बढमूरती या सुन्दरता की सही माप-तौल कर सकता है उसी तरह हमारे प्रतीक का विदेशी लोग क्या दर-दाम करते हैं, इससे उसकी कीमत का अधिक सही ज्ञान हम हा सकता है। विदेशी बाजार एक तरह दपण का काम देते हैं, क्योंकि उही के द्वारा हम अपने प्रतीक की सही कीमत का पता लगता है।

पर विदेशी बाजार हमारे दपण क्यों बन जाते हैं? यदि विदेशी से हम माल नहीं खरीदें और न उन्हें बचें, तब तो किसको फुसत है कि हमारे चलण की क्या कीमत होनी चाहिए इसपर कोई विदेशी बहस करने बैठगा। पर चूकि हम विदेश में जिस माल लेंते हैं और बचने हैं इसलिए हमारे चलणी प्रतीक का कीमत को हर समय बूतते रहना उनक लिए अनिवाय हो जाता है। मह क्या?

मान लीजिए आप लन्दन के बाजार में कुछ चीजें मोल लेंते हैं तो उनका दाम आप यदि भारतीय नोटों में चुकाना चाहेंगे तो कई दूकानदार आपको माल नहीं बचेगा इसलिए आपको वह दाम अग्रजी नोटों में चुकाना पडता है। अग्रजी नोट आप कहाँ से लाते हैं? आपके घरवाले हिन्दुस्तान में किसी विदेशी बच को रुपया देते हैं और उसकी कीमत का अग्रजी द्रव्य खरीद कर आपको उसी बच की माफत भज देते हैं जो आपको अग्रजी नोट या सिक्का की शकल में मिल जाता है। पर इसी तरह यदि सब लाग यहाँ से इंग्लैण्ड भजनवाले ही हाँगे और मगानवाला कोई नहीं रहगा तब तो कारोबार अपने आप कुछ दिन के बाद बन्द हो जावगा। पर चूकि जस भजनवाले हैं वस ही लन्दन से द्रव्य मगानवाले भी हैं इसीलिए यह दुतरफा कारोबार चलता रहता है और जब हम रुपए से अग्रजी पाउण्ड खरीदते हैं (लन्दन में धन भजन के लिए) या तो पाउण्ड बच कर रुपया खरीदते हैं (लन्दन से धन मगान के लिए) तब जिस कीमत से या तो हम रुपया बच कर पाउण्ड खरीदते हैं या पाउण्ड बच कर रुपया खरीदते हैं उतना

हम पता लग जाता है कि हमारे प्रतीक (चलण) की विष्णु में क्या कीमत है।

## विदेश में भीमत कैसे बनती है ?

प्रश्न का उत्तर यह है कि हर चीज की कीमत लने और उचनवानों की गरज पर अवलम्बित है। वैसे ही इस विषय में भी होता है।

पर इस ज्यादा स्पष्टतया समझ लेना आवश्यक है। यदि हम विदेशों में माल ज्यादा लेते हैं और कम बचत है जैसे कि हमने १०० का माल ला लिया और ६० का बचा, तो हम विदेशों को ६० चुकाना बाकी रहता। यह ४० हम कैसे चुकाएंगे ?

इसके तीन तरीके हो सकते हैं।

एक तरीका तो है पावनेदार का माता भज कर। सोने के सभी ग्राहक हान हैं और तमाम मुन्का ने करीब-कराब सोने की एक निर्धारित कीमत कायम कर रखी है उस निर्धारित कीमत पर हर मुन्का की नोट प्रसारक बक प्रायः साना खरीदने का तयार रहता है। इसलिए पावनेदार को सोना भेज कर हमारा बज चुकान में तो कोई कठिनाई ही नहीं। पर हर साल सोना भेज कर तो वही मुन्का माल खरीद सकता है जिसके पास सोने की बड़ी-बड़ी खानें ही और जहां सोने की बड़ी भिन्नता में पदाइत मा ही। इसलिए सोना भज कर दाम चुकान का यह तरीका चाह १-२ साल के लिए भले ही चउ पर हर मुन्का के लिए निरन्तर इस तरीके का चलाना व्यावहारिक नहीं हो सकता।

दूसरा तरीका है—जहां माल खरीदा वही लोगो में धन उधार लेकर माल का दाम चुकाया। यह तरीका भी विष्णु समय के लिए चाह उपयुक्त है पर निरन्तर नहीं चल सकता। निरन्तर उधार कौन देता जायगा ? प्रतिरि बभी तो वापिस चुकाना ही होगा। इसलिए यह तरीका भी निरन्तर नहीं चल सकता।

धर एक तीसरा तरीका है जो नाम चुकान के लिए सवना व्यावहारिक हाना है। यह तरीका यह है कि धरने यहां बनी चीजों का पा बपनी सेवा या श्रम का विष्णु में बेचकर उमम जा द्रव्य मिले हम

खरीदी, उसकी कीमत चुवाने के लिए बदले में हमने वहाँ गहूँ बेचा। अब गहूँ यहाँ मिलता है १ रुपए का ८ सर। वहाँ भाव है १ माक का १० सर गहूँ। हम १ माक वहाँ भजना चाहिए, क्योंकि हमने १ माक की वस्तु ली है। तो हमको एक माक चुकाने के लिए वहाँ १० सर गहूँ बेचना पड़ा जिसका कि हम यहाँ स्वदेग में १२ रुपया देना पड़ा। इसके माने यह हुए कि पहले जहाँ रुपए की कीमत १ माक थी, अब १२ रुपए की कीमत १ माक हुई। दूसरे पक्षों में हमारे रुपए की दर १ माक से गिर कर ८० माक रह गई।  $\frac{१ \text{ माक}}{१२ \text{ रुपया}} = ८० \text{ माक}।$

अर्थात् २० प्रतिशत कीमत गिर गई।

विदेशी मुल्कों में हमारे वस्तु की कीमत को शास्त्रीय भाषा में हुण्डी की दर कहते हैं। जब हमारे चलण की कीमत विदेशों में बढ़ती है तो हम कहेंगे कि हमारी हुण्डी की दर तेज है। हमारे चलण की कीमत गिरी, तो कहेंगे कि हुण्डी की दर मंदी है।

हुण्डी की दर गिरने से या ऊची होने से हमारे मुल्क के उद्योग घघी और आयात निर्यात पर क्या असर होता है और वह असर कैसे होता है इसका विवेचन भी कर लें।

यह तो अब समझ में आ ही गया होगा कि फुलावट-नीति की रचना चलण में प्रतीक की बहुतायत की बुनियाद पर खड़ी की जाती है और इसके पलस्वरूप जिन्सों के दाम चढ़ जाते हैं। जिन्सों के दाम क्या चढ़ जाते हैं, यह पहले हम समझ चुके हैं। नाण्य की अधिकता के मान में यों भी व्यक्त कर सकते हैं कि चीजें महगी हैं। यदि फुलावट नीति द्रुत गति में आती है तो फिर लोग मुद्रा की साय में विदवास भी खा बठते हैं। इससे भी लोया की रुचि मुद्रा में घन रोक्ने में घट कर जिन्सों में घन रोक्ने की ओर ज्यादा बढ़ जाती है। ये सब के सब जिन्सों के दाम तत्र करन के हेतु बन जाते हैं।

पर एक और चीज है जो जिन्सा के दाम बढ़ाने में महायक होती है। यह है विदेश से आनवाली चीजों का ऊचा पडता। जब हमारी हुण्डी की दर गिर जाती है तो विदेश में ता हमारे यहां आनवाली चीज के दाम चाहे वही पुरान दाम हा पर हुण्डी गिर जान से यहां का पत्ता अपन-आप ऊचा हा जाता है।

ममलन हम एक घड़ी विष्णु में मगानी है। उसकी कीमत, मान लीजिए १० माक है। पुराने हिसाब से १० माक के मान से १० रुपए। पर चूकि अब हमारी हुण्डी की दर २० प्रतिशत, जसा कि हम ऊपर बता चुके, गिर गई इसलिये १० रुपए के हमें कुल ८ माक ही मिलते हैं। इसके मान यह हुए कि १० माक खरीदने के लिए हमें अब १२॥ रुपए की जरूरत है। इसके मान यह भी हो गए कि जिस घड़ी का पडना पहले १० रुपए का था वह अब १२॥ रुपए का हो गया। इसी तरह हमारी निर्यात का चीजों का पडना ना बढ़ जाता है,,

इस तरह—मान लीजिए कि हम यहाँ सवाहर रुई भगत ह जोर १ गाठ रुई के दाम जमनी में १०० माक पहले थे। उनके मान थे पुरानी हुण्डी के हिनब स, १०० माक = १०० रुपए। अब भी मान लीजिए जमनी में रुई की कीमत वही १ गाठ के १०० माक ह। पर चूकि हुण्डी की दर गिर गई इसलिए १०० माक को बच कर हम रुपया खरीदते त तो २० माक = १ रुपया इस हुण्डी की दर स हमें १०० माक के १२५ रुपए उपलब्ध होते ह। इसके मान हुए कि रुई के नियामक लिए पडता लगता ह १२५ रुपया प्रति गाठ जो पहले १०० रुपया प्रति गाठ था।

विदेशों स आनवाली और विन्गा को जानवाली चीजों का जब पडता बढ जाता ह तो उन चीजों क चढ दाम देख कर अय चीजों क दाम भी अपने आप ऊच जान लगत ह। इस तरह अय कारणों के अलावा विदेशों स सम्बन्ध रखनवाली चीजों का पडता ऊचा होन की वजह से भा जि गो के नामों को ऊचा जान में सहायता मिलती ह।

## टूण्डी की दर और उद्योग धधे

अब इस परिस्थिति में उद्योग धधों पर क्या असर होना ह? इसका उत्तर तो साफ ह। जब जितना क दाम ऊच जाते ह तो कारखानदार का मुनाफा भी बढता ह। यह सही ह कि जितनी के दाम ऊचे जाध ह तो कच्चे माल क दाम भी बढते ह। पर इतना हान पर भी कारखानदार या अय मान्य उपजानवाले लागों (जसे किमान जुलाहा, खटीक इत्यादि) क मुनाफ का वृद्धि में कोई रुकावट नहीं होती। बतौर उदाहरण हम एक कारखानदार क काल्पनिक पडता का जरा विन्लेषण कर में। हर १०० रुपए के माल पर मान लीजिए कारखानदार का खच नीचे लिख अनुसार होना ह —

रुपया	
५०	कच्चा माल
२५	मजदूरी
१०	घिसाई
५	ब्याज

१०	मुनाफा
<hr style="width: 50%; margin: 0 auto;"/>	
१००	

अब मान लीजिए फुलावट-नीति के कारण जिन्हों के दाम बढ़ और ज़िम मान का कारखानदार का पहले १०० रुपया मिलता था उसका अब १२५ रुपया मिलेगा। इसके साथ साथ मान-लीजिए कच्चे माल का दाम भी बढ़ा और मजूरी भी उभी अनुमान से बढ़ी ता फिर मुनाफ पर क्या धरम होगा ? नीचे के तालिके में इसका स्पष्ट ज्ञानाज्ञा उत जायगा।

	पुरानी कीमत	नई कीमत
	रुपया	रुपया
कच्चा माल	५०	६०॥
मजूरी	२५	३१
घिमाई	१०	१०
व्याज	५	५
मुनाफा	१०	१६।
	<hr style="width: 50%; margin: 0 auto;"/>	<hr style="width: 50%; margin: 0 auto;"/>
	१००	१२५

उपरोक्त तालिके में पता लगगा कि जहां कच्चे मान और मजूरी का दाम २५ रुपया प्रतिगणक बना रहा घिमाई और व्याज में पुराने और नए सब में काइ फरक नहीं पडा। कारण प्रत्यक्ष है। जगा कि हम पहले बना चुके हैं फुलावट और गिरावट के कारण लेन-देन की रकम पर कार्ट प्रभाव नहीं पडता। १०० रुपए हमने कज ७ रुपया था तो धात्र भी हमें १०० रुपया ही चुकाना है। इसलिए व्याज पर कोट धरम नहीं पडता। और घिमाई पर भी क्या धरम पडगा ? इसलिए मुनाफा जा पहले १० रुपए एक घण्ट पर था वह अब १६। हो गया। या तो यों भी हा सकता है कि कारखानदार की धात्र यह यकित है कि पहले जहा बाहर की चीज का पडता १०० रुपए था और कारखानदार मुनाफ को अनुष्ण रखत हुए १०० रुपए में कम में नहीं बेच सकता था धात्र वह विदेशी माल का पडता १२५ रुपया होन पर भी १० रुपए का ही मुनाफा रख तो ११५ रुपया १२ धान में बेच सकता है।

## रूप की कहानी

इस हिसाब से यह सही है कि कारखानदार का मुनाफा बढ़ गया और वह अपने दाम नहीं घटाता तो मुनाफा १० के बजाय १६ हो गया तो ६२॥ प्रतिशत बढ़ गया। पर साथ ही यह भी जानना चाहिए कि सो के दाम बढ़ने के कारण उस मुनाफे का ताकत ६२॥ प्रतिशत नहीं है। यदि जिंसा के दाम औसतन सवाए हो गए ह जसा कि हमन हिमाव आया है तो फिर दाम बढ़ने के पहले जो करामान १३ रूपए में थी वही आज १६। म है। मान लीजिए कि पहले १३ रूपए में १ मन पाट मिलता है और अब पाट के दाम बढ़ कर सवाए हो गए — अर्थात् १६। हो गए, पहले के १३ और अबके १६। रूपए की त्रय गति में कोई फर्क नहीं है। खर।

तो अब इस परिस्थिति को दो अमर माय साथ हुए। एक तो स्वदेशी योग घघो पर और दूसरा विदेश आयात पर और निर्यात पर। स्वदेशी योग घघो पर अच्छा अमर हुआ। विदेशी आयात मुश्किल लगा और निर्यात पनपन उगा।

सबसे पहले स्वदेशी उद्योग घघा को लीजिए।

यह स्वाभाविक है कि जब मुनाफा बढ़ता है तो कारखानदार को माल उपजानवाले को ज्यादा माल पदा करने की चाह होती है। ऊपर हिसाब से हमन मान लिया है कि मजदूरी भी अथ जिंसो के दामो के साथ साथ बढ़ने लगती है। पर व्यवहार में ऐसा होता नहीं। जब जिंसो के दाम बढ़ते हैं तो मजदूरी भी जब तक उसी अनुपात से नहीं बढ़ती है तक कारखानदार को हमारी कृत से भी मुनाफा अधिक रहता है। अतः फलस्वरूप कारखानदार माल ज्यादा पदा करने लगता है। कारखाना बढान भी उगता है। नए नए कारखान भी खुलने लगते हैं। अधिक मजदूरी मिलने लगती है।

इसका प्रभाव बाहर से आनेवाली चीजों पर भी पड़ता है। चूंकि कारखानदार का मुनाफा बढ़ा है, इसलिए उसमें यह ताकत आ जाती है कि वह मुनाफे को थोड़ा कम करके भी विदेशी चीजों के मुकाबले में अपना माल सपना बच सक। विदेशी चीजों का ऐसा प्रतिद्वंद्विता में टिकना मुश्किल आ जाता है। विदेशी आयात पर इससे बुरा अमर पड़ता है।

इसके विपरीत, नियाम पर अच्छा अमर होता है क्योंकि जब ऊँच पड़ता की वजह से यहाँ दाम ऊँचा हो गया पर विन्गी में हमारी चीज का दाम वही पुराना है, तब यहाँ के उपजातवाले घाटा-सा यहाँ भाव मँग कर दें तो विन्गी में भाव पुराने दामों में भी मम्ता हो जायगा। और इस तरह विन्गी में हमारे माल की बिक्री बढ़गी। माराग यह कि अपनी मूद्रा की कीमत गिरा देने से हमारे कर्म-कारवान, उद्योग धंधे सब पनप उठते हैं विन्गी आयात पर प्रहार होने लगता है, विन्गी निर्माण जागने लगता है। इस तरह देग की समृद्धि बढने लगती है।

### दर गिरने में लाभ स्थायी या अस्थायी ?

यह प्रश्न हो सकता है कि जरा हुण्टी के हरपर से या मूद्रा की कीमत कम कर देने से समृद्धि बढने का क्या वास्ता ? वास्ता है। वह इस तरह से।

एक भालसी मनुष्य है, वह न खेत बोता है न महलत करता है। इसलिए दारिद्र्य न उसके घर पर प्रभाव जमा रखा है। अब किमीने उससे कहा कि हम तुम्हें रोजमर्रा कुछ मिठाई विनाएग कुछ तमाग दिव्या एग और कुछ अच्छे कपडे भी देंगे बगैरे कि तुम अपने खेत की मेहनत के साथ जोता और उसमें जो फसल हो उसका आधा हिस्सा हमें दे दो। वह भालसी मिठाई और अच्छे कपडों के प्रलोभन में घाबर काम करने लगता है और अन्न में अच्छी फसल तयार कर लेता है। फसल के आध हिस्से की आसानी वह प्रलोभन देनेवाले सञ्जन का मौज दता है। इस सञ्जन का तो उसने जितना मिठाई इत्यादि पर खर्च किया था उसकी पूरी कीमत उस फसल के आध हिस्से में से बसूत हा जाती है और उस भालसी को अच्छा खान पहनने को मिला, और आधा फसल मिली जिससे उसकी समृद्धि बढ़ गई। इसका फलावा उसकी आसक्ति भी तो बढती। काम करत-करत वह भालसी कमजोर बन गया। प्रलोभन देनेवाले सञ्जन का कुछ ध्यय नहीं हुआ, और भालसा कमजोर बन गया।

अब कोई कहे कि हुण्टी की दर गिरने और समृद्धि से क्या वास्ता ? हा यह भी कहा जा सकता है कि भालसी के मिष्टान्न भोजन से उसकी समृद्धि का क्या वास्ता ? पर बात यह है कि गिरती हुई हुण्टी की दर या



दूररे शान्त में गिरती हुई मुद्रा की कीमत माल उपजानवालों के दिला में एक तरह का उत्साह और तण्णा पदा करती है जो उन्हें ज्यादा काम करने के लिए खदेड़ती है और इस तरह देश की समृद्धि पर इसका अच्छा असर होता है।

ठीक इसका विपरीत असर गिरावट की नीति का होता है।

हमने यह बताया है कि यह अच्छा असर मुद्रा की गिरती हुई कीमत का होता है। पर एक दफा कीमत गिरा दी गई, फिर भी क्या उसका असर होता है ?

होता है पर आशिक। हमने पप का पहिया घुमाया और पानी कुए में से निकलन लगा। जब पहिया घुमाना बंद कर दिया तब पानी भी निकलना बन्द हो गया। इसी तरह जब हुण्डी की दर गिरती ही रहती है, तब तो चीजों के दाम भी घटते ही चले जाते हैं और उससे पदा होने वाले नतीज—जैसे उद्योग घघो की उत्पत्ति अधिक माल की पदाइय बकारों की रोजगार विदेशी आयात को ठम निर्यात की पूष्टि इत्यादि अपना प्रभुत्व जमाए रखते हैं। उसी तरह हुण्डी की गिरी हुई दर भी एक जगह आकर जब स्थिर हो जाती है और लोगों को उसकी स्थिरता में विश्वास आ जाता है तब गिरती हुई हुण्डी से जो नतीज पदा हुए थे वे धीरे धीरे करके रफा होने लगते हैं—अर्थात् पप में से पाभी निकलना धीरे धीरे बंद हो जाता है।

पर इसके मान यह नहीं कि हुण्डी गिरा कर फिर स्थिर कर दी तो उसका कोई असर ही नहीं हुआ। जो पानी कुए से निकल आया उसकी भी तो कोई कीमत है। उस निकले हुए पानी से हमने मिर्चाई की धान पदा किया उससे हम पुष्ट बने। पुष्ट बन कर हमने मेहनत ज्यादा की। उस मेहनत से फिर नई सम्पत्ति पैदा की और इस तरह से समृद्धिचक्र जो चला तो फिर चलता ही गया। इस दृष्टि से गिराई हुई मुद्रा की दर का लाभ भी एक दृष्टि से स्थायी-सा हो गया।

पर यह भी कोई कह सकता है कि फिर हुण्डी की दर गिरने से इस तरह लाभ होता है तो हम दर को गिराते ही क्या न जाय ? स्थिर कर ही क्यों ? इस रामबाण औषधि में अघाना ही क्यों ? अफगोम ! मर

ध्वज के सबन से शरीर की चपलता अवश्य बढ़ती है, पर वह स्वयं मनुष्य की क्षुधा को नहीं भेटता। और ज्यादा सेवन से तो शरीर का अन्त भी हो सकता है। फिर यदि हम मुद्रा की दर को गिराते ही चल जाय तो एक समय ऐसा घा सकता है कि जब मुद्रा की साख में किसीको श्रद्धा ही न रहे और मुद्रा स्वयं नेस्तनाबूद हो जाय। और फिर तज्जनित हानि-लाभ भी कहा रहे? जब शरीर ही नहीं तो प्राण कहा? मुद्रा ही मर भिट तो उसमें होनवाले हानि लाभ कहा रहे? और यदि मुद्रा की कीमत गिरा दना हो एक जादू का डंडा हो जो एक पल में समझि पना कर दे, तो फिर हर मुल्क ही इसका प्रयोग क्यों न करे? और यदि हर मुल्क इसका प्रयोग करने लग जाय तो दो देशों के बीच जो हुण्टी की घटा बड़ी से हानि लाभ होता है वह होने ही नहीं पाए। दो लकीर पास-पास में हो, और एक बड़ी हो तो दूसरी छोटी कहलायगी। पर यदि बड़ी को काट कर छोटी कर ली जाय तो, जो पहले छोटी थी वह अब बड़ी कहलायगी।

हुण्टी गिरान के मान भी तो यही है कि हमन अपनी मुद्रा की दर गिरानी, अथ मुल्कवाला ने नहीं गिराई। एसी हालत में अपेक्षाकृत हमारी मुद्रा गहनी हो गई। पर यदि दूसरे देशवालों भी गिरा दी, तो फिर हमारी हुण्टी की दर दूसरे देशों के मुकाबले में नीची नहीं रही। और ऐसी हालत में किन्हीं भाषात निर्यात पर कोई अच्छा-बुरा अमर नहीं हुआ। बताना तो यह है कि हुण्टी गिराने का असर पूणतया स्थायी नहीं है, एक घण्टा में स्थायी है। मकरध्वज-सेवन का कुछ तो लाभ शरीर को मिलता ही है। हुण्टी गिरान से समाज की आर्थिक स्थिति को जो एक मनवा लाभ मिलता है उसका स्थायी अमर भा रह ही जाता है। ठीक इसके विपरीत, गिरावट नीति द्वारा मुद्रा की दर बढ़ा कर समाज की आर्थिक स्थिति को हानि पहुंच जाती है वह भी स्थायी नुकसान कर बैठती है। छाती में जो सेल लगा उसका धाव तो रुक गया, पर उसका दाग ता रह ही गया और वह जगह भी सदा के लिए नाजुब बन गई।

कभी-कभी तो ऐसा देखा गया है कि संसार की बड़ी बड़ी ऐतिहासिक घटनाओं की तरह म एक छ टी-भी घटना हुई है, जिसकी इतिहास लिखने वालों ने कम महत्व दिया। प्रणिया के पेश्वरिष की घेठ को महान बाने

का मोका या मिला कि आस्ट्रिया का शाह-गाह मर गया। पर आस्ट्रिया का शाह-गाह भी तो इसलिए मरा कि वह एक रोज कुकुरमुत की तरफ कारी बहन परिमाण में खा गया। 'विधि का लिखा को भेटनहारा' यह उक्ति सही है। पर विधि भी जब कोई बड़ी होनहार को घडने बठता है तब शुरुआत एक नगण्य चीज से करता है। आस्ट्रिया के गाहजादा बेखून न यूरोप में खून की मदिया बहा दी। दुर्योधन और अर्जुन, जब दोनों श्रीकृष्ण के पास महाभारत युद्ध के लिए सहायता मागन गये तब यदि दुर्योधन श्रीकृष्ण के सिरहाने न बठ कर पतान बठता या तो श्रीकृष्ण की मेना न लेकर स्वयं श्रीकृष्ण को अपने पक्ष में लेता तो महाभारत युद्ध का अंत क्या होता यह बताना कठिन है।

पर कोलम्बस न अमेरिका का आविष्कार किया और नई दुनिया से व्यापार रोजगार चमक उठा। उसके कारण यूरोप भर में सरस-जी फल गईं एसा यूरोप के आर्थिक इतिहासज्ञ मानते हैं। अमेरिका की भूमि क्या मिली यूरोप के लिए तो गडा सोना मिल गया। और बेलीफोरनिया में तो सचमुच सोन की खान मिल गई जिहोन यूरोप की समृद्धि की खूब वृद्धि की। इन सबका यूरोप पर कितनी मात्रा में असर हुआ यह चाहे न मापा जा सके पर जो जाहोजलाली की बाढ यूरोप में आ गई उसन उसको मदा के लिए सम्पन्न कर लिया, इसमें कोई शक नहीं।

इसलिए हुण्डी गिरन का असर चाहे अस्थायी हो पर एक मतवा मिला हुआ महारा कमजोर गरीब व पनपन में काफी सहायता पहुँचा देता है।

### फुलावट—नियंत्रित और अनियंत्रित

फुलावट-नीति के शुभ परिणामों का भी हमन जिक्र किया और अति मात्रा में उसके बुरे नतीज का भी बणन किया। यहाँ यह समझ लेना चाहिए कि जहाँ फुलावट-नीति बेवत व्यापार रोजगार को चमकाने के लिए उद्योग-घड़ों को पनपान के लिए काम में लाई जाती है वहाँ फुलावट स्वयं मात्रा में और नियंत्रण के साथ उपयोग में लाई जाती है।

हम बना चुके हैं कि जब फुलावट द्रुत-गति से अनियंत्रित होकर चलनी है तब व्याज मस्ता नहीं महंगा—प्रत्यन्त महंगा हो जाता है। महंगा व्याज भी रोजगार व्यापार के लिए घातक है। इसलिए स्वेच्छा से जब फुलावट शस्त्र का प्रयोग होता है तब सारी नीति पर इस हिमायत में नियंत्रण रखा जाता है कि जिसमें मित्रों की साथ में से लोगों की श्रद्धा न टूटे, लोगों में इसके सम्बन्ध में भय या घबराहट का मन्वार न हो। व्याज की दर माधारणतया ठीक हो और दामों में तेजी इतनी ही भाव जिनकी कि संचालक चाहते हैं। इसका मान यह है कि ऐसी नीति तो स्वच्छा में ही काम में लाई जाती है और उसी हालत में काम में लाई जा सकती है जबकि देश की सरकार प्रजा का विश्वासभाजन हो बलिष्ठ हो और देश और परलोक में उस सरकार और उस देश की पूरी धाक हो। और चूँकि यह सारा का-सारा खल अपने देश में उद्योग घटा को प्रोत्साहन देने के लिए और लोगों में नई आर्थिक जागृति पैदा करने के लिए खला जाता है इसलिए यह फुलावट भी स्वल्प मात्रा में ही होती है।

पर इसके विपरीत, जहाँ फुलावट अनियंत्रित होती है—जसा कि रूस जर्मनी वगैरह के सम्बन्ध में हम ऊपर बना चुके हैं—तब इसका परिणाम दूसरी तरह का होता है। यह सही है कि उस फुलावट में भी बल कारखाने बेहद पनपते दिखाई देने हैं पर मुद्रा की गति का इस जार से ह्रास होता चला जाता है कि वह करोड़ों का मुनाफा हजारों के मुकाबले में भी बलहीन होता है। और दूसरी तरफ सरकार और देश की भाव में इनके जोर का धक्का पड़ता है कि जिनके पास पूँजी होती है वे तबाह हो जाते हैं। साधन अपना माल मत्ता, सम्पत्ति आदि बाहर भजने लगते हैं। परम्पर की भाव में भी विश्वास हट जाता है। धनराष्ट्रों में देश की भाव को भी बिरह जाते हैं। सारा आर्थिक तन्त्र छिन्न भिन्न हो जाता है।

ऐसी स्थिति अवश्य ही अवाञ्छनीय है, और यह स्पष्ट है कि जान बूझ कर ऐसी स्थिति का कोई निम्नत्रण नहीं करना। यह तो मजबूरी में ही घाती है। देश का विश्वास निश्चयन का दूसरा नाम यह उच्च फुलावट

ह, जिसे राज दुराजी के जमान म ही सरकार बलात बाध्य होकर अपनाती ह । सरकार की जब राजतंत्र चलाने के लिए वर संग्रह म भी कठिनाई भान लगती ह तब कागज स्याही और प्रस की धरण लेकर इस जोर से मोट छापना शुरू करती ह कि इस ताण्डव नृत्य को दत्त कर एक छिन के लिए भी कोई अपन पास मोट रखन की हिम्मत नही करता ।

हम बताना चुके हैं कि चलण का मूल्य स्थिर नहीं पर घटना-व्यवस्था है। ता भी जन-समाज के मन पर एक ऐसी धारणा और बुनियाद छाप पड़ी हुई है कि चलण का मूल्य स्थायी है। यदि ऐसा नहीं होता तो जिन निभयता के भाव लोग रूपा उधार देने में और मरकरारी कागजात में लगाने में बसा कभी नहीं होता। पर मनुष्य तो प्रायः वर्तमान का पुजारी होता है और पुरानी स्मृति कटु भी हो तो उसे भूल जाता है। इसलिए जब तक कोई भयकर युद्ध, विप्लव या भ्रांतिमय घटना के कारण चलण की कीमत बुरी तरह नहीं गिरने लग जाती तब तक साधारण मनुष्य को तो पता भी नहीं चलता कि चलण की कीमत गिरी है क्या। साधारण पूजा-घट यदि नियंत्रित है तब तो सामान्य जनता को पता भी नहीं चलता कि पैसे के पाछे क्या नाटक खला जा रहा है। तो भी जिन्ना के नामों के आकाश का हम मूक अभ्यस्य कर रहे तो हमें सहज ही पता लग जायगा कि पिछले सौ सालों में चलण के मूल्य में घटा-बढ़ी होनी ही रही है।

जिन्ना के नामों के आकाश के तयार होने से इसका संप्लित विवरण भी जान लेना चाहिए। मान लीजिए कि हमारे देश के गरीब किसान अधिकतर गेहूँ, बाजरा, मोठ, चना, धो, तिल, चियामलाइ, कपडा, गुड, इत्यादि—४० या ५० बीघा का उपयोग करते हैं। तो आकाश तयार करने वाले विधान उनमें जिन्नाके नामों का एक गड-बडता निकालें हैं। वह गड-बडता साधारण तरह से निकाला जाता है कि जिस सालको हम बुनियादी साल मानते हैं उसमें गड-बडताका एक भी मान लिया जाता है। मान लीजिए मन १९१४ का हमें बुनियादी साल माना। उस साल में

गेहूँ का भाव था	५ रुपया मन
जौ का भाव था	४ रुपया मन
तिल का भाव था	२० रुपया मन
धो का भाव था	४० रुपया मन



कदर घटता या बढ़ती रही है।

कलकत्ते में कुछ खास चीजों के थोक दाम

१९१४ = १००

१९१५	घोसत	११२	१९२८	घोसत	१४५
१९१६	'	१२८	१९२९	'	१४९
१९१७	"	१४५	१९३०	'	१९६
१९१८	"	१७८	१९३१	'	९६
१९१९	"	१९६	१९३२	'	९१
१९२०	'	२०१	१९३३		८७
१९२१	'	१७८	१९३४	"	८९
१९२२	'	१७६	१९३५	'	९१
१९२३	'	१७२	१९३६	'	९२
१९२४	"	१७३	१९३७	'	१०७
१९२५	'	१५८	१९३८	"	९६
१९२६	"	१६८	१९३९		१०८
१९२७	"	१४८	१९४०	"	१२०

पर यह भी सही है कि चलण की कीमत के म्यायित्व में जिननी श्रद्धा यूरोपवासियों की रही उतनी इस देश के लोगों की न रही। हमारे पिछले इतिहास में समय-समय पर इतने राज्य बदलते रहे हैं, इतने दंग फमाव होते रहे हैं कि इसके कारण भारतवासियों को स्वभाव से ही सोन चादी में मोह ज्यादा रहा। इसके विपरीत हॉगलस्तान में, बाहर के धातुमणों से मुक्त रहने की वजह, वहाँ के लोगों में काफी धन बन रहा। मतीजा यह हुआ कि स्वभाव से ही चारों ओर शान्ति और व्यवस्था दिखाई देती रही, और इसलिए उन्हें अपनी सरकार की सलाह में श्रद्धा भी ज्यादा रही। सदन नाणों का एक बहुत बाजार बन गया और धनजो की दवा-श्री हमने भी सरकारी कामजों में और तरह तरह के गयरो में रुपया लगाना सीख लिया।

**चलण की कीमत गिरती आई है**

पर बताना तो यह था कि चलण की कीमत स्थायी नहीं रही और दूसरी बात यह बतानी थी कि चलण की कामना गिरा कर अपना ठालू



सीधा करन का तरीका इतिहास में हर सल्तनत ने—जब वह विपद्ग्रस्त हुई तब—बिना किसी हिचकिचाहटके अख्तियार किया है। रोमकी प्राचीन सरकार न हजारों साल पहले अपन चलण को अशत छोटा करके अपना खजाना भरा सभी से हर सल्तनत न यह पाठ सीख लिया। और चलण क दाम गिरा कर प्रजा की बिना जानकागी के कर वसूली का यह अद्भुत तरीका मौके मौके पर हर सरकार न विपद् के समय अपने लाभ के लिए कामयाबी के साथ आजमाया।

वात यह है कि सिक्का जसा भी हो प्रख्यात वपुरा, उसके चलण का संपूर्ण अधिकार तो हर देश की सरकार के पास रहता है। और इस अधिकार का दुरुपयोग करके भी यदि कोई सल्तनत अपना दिवाला दबा सके और राज्य-युन हाने से अपन आपको बचा सके तो कौन एसी सद्यमी सल्तनत हो सकती है जो इस अधिकार का दुरुपयोग करन क लोभ का सवरण कर सके ? इसलिए जहा किसी सल्तनत पर अफत आई कोई बड़ा बलवा हान को है या कोई बड़ा युद्ध छिड़ गया और धन की बड़ी राशि की जरूरत आ पड़ी और प्रजा सीधी तरह से देन को तयार नहीं, यदि जबरन लिया जाय तो क्रांति की भाग धधक उठती है लोगो की रही सही सहानुभूति भी गायब हो जाती है, तो ऐसे विकट समय में सबसे सीधा और सहज माग कर वसूली का यही रह जाता है कि नोट छापे जाओ और उसीस अपना खच चलाए जाओ। धन की जरूरत पड़ी और सीधी अगुली से धी न निकला तो फिर चलण के दाम गिरा कर टढ़ी अगुली से—चाहे वह फिर अधिकार का दुरुपयोग ही क्यों न हो—धी निवाला।

पर एय वात और है। चलण के दाम गिरान में एसी विपद्ग्रस्त सरकार का तो स्वाध रहता ही है पर प्रजा के एक दल विगय भी सहानुभूति रहती है। हमन पहले बनाया है कि चलण के दाम गिरन से कजदार और बधी मालगुजारी देनवाले और अय एमे लोग जिनका गणित्व बधी हुई खम में हो, उन्हें लाभ होता है। इसलिए एस सब लोग चलण के दाम गिरन क स्वभाव से ही पगपाती होते हैं, और विपद्ग्रस्त सरकार का तमाम एमे लोगो की सहानुभूति अपन आप मिल जाती है। प्रख्यात अण्णास्त्री श्री केयस न सच कहा है—

'चलण का मूल्य जब गिरता है तब उसका लाभ केवल सरकार तक ही सीमित नहीं रहता । किमान, बजदार और भ्रम्य ताग जिह भ्रमण भ्रमण क्षत्र में एक निर्धारित रकम लनी पडती ह—मसलन ब्याज या माल गुजारी इत्यादि—व सब इस लाभ में शरीक हो जात ह । जस आर्थिक क्षत्र म आजकल ब्यापारी लाग समाज के एक रचनात्मक और नियामक भग मान जाते ह वसे ही प्राचीन समय में किमान इत्यादि एक विनिष्ट भग मान जात थ और सन्तनत पर इनका प्रभाव तो पडता ही रहता था । कोई भी सासारिक परिवतन, जो द्रव्य के मूल्य को ठस पहुचाता था वह नए आधमिया के लिए एक रसायन का काम कर जाता था । यह परिस्थिति पुरान लागो की दौलत का नाग करके नए लोगो क पास दौलत ला देती थी । जिन्हान धन सग्रह करके रखा था उनका खानमा करके ध्यवसायगीत लागों की यह परिस्थिति सहायक हो जाती थी । कुन्त का यह खल एसा लगता ह मानो मयह और क्रिया क बीच के मयाम में द्रव्य क मूल्य का गिरना क्रिया का पक्ष लेता रहा हा । द्रव्य क मूल्य क गिरन की प्रवर्तन ने बपीना धन और उस पर भ्रमवृद्धि ब्याज खानवाले इमान की खामियन पर काफी भ्रमण किया ह । इसका नतीजा यह हुआ ह कि बपीनी सपति का अकमण्य हाकर भोगन की वति को इसन जबरदस्त धक्का मारा । इस परित्रिया न हर पीढ़ी की बपीना सम्पति के उत्तराधिकार स एक तरह स वचित-मा कर लिया । जो हा विपद्यस्त सरकार की जम्हते और बजदार वग की आवश्यकताए, इन दो प्रभावान मिलकर बभी एक तो कभी दूसरी शक्ति न द्रव्य क मूल्य का लगाना घटाना जारी रखा ह । यह क्रिया ईसा के ६०० साल पहल, जब पहले-पहल मिक्का चला, तमा स यूनानाधिक रूप से चलती था रही ह ।

पुलावट का यह एक तिलचस्प पहलू ह । किस तरह समाज की भिन्न भिन्न श्रणिया का स्वाथ मिक्क क मूल्य क साथ बधा ह, किस तरह जानबूझकर समाज की कुछ श्रणिया चलण क मूल्य को गिरा देने के पग में रहती हैं और असाधारण समय में तुड़कनी हुई मन्तनन के लिए भी चलण का मूल्य गिराना वितना उपयागी शम्न ह, यह ऊपर के कपन स जाहिर होना ह ।

फुलावट एक तरह का कर—प्रच्छन्न कर है, यह कम लोग जानते हैं। पर यह ध्रुवसत्य है कि एक कमजोर सरकार भी जिसके कर लगाने का अर्थ सब साधन सूख गए हों और जिसके लिए कोई भी कर उगा हना असंभव-सा हो गया हो इस अतिम अस्थि का उपयोग करके प्रच्छन्न कर उपाजन कर सकती है। इस प्रच्छन्न कर का यह मजा है कि कोई कितना ही सरकार का विरोधी क्यों न हो वह भी इस कर से बच नहीं सकता। इस पहलू को कुछ और विश्लेषण के साथ समझाने की जरूरत है।

जहां हमने 'द्रव्य परिमाण मत' का जिक्र किया है वहां यह बतला दिया है कि अर्थ सब स्थिति समान रूप से बनती हो तो जितना ही चलन में हम द्रव्य का अधिक प्रवेश करावेंगे उसी अनुपात से द्रव्य का मूल्य गिरेगा और जिनसे के दाम बढ़ेंगे। इसका फिर एक उदाहरण दे देना अच्छा होगा।

मान लीजिए कि सामान्य अवस्था में हमारे यहां २५० करोड़ रुपये के नोट चलन में हैं, जिनकी सोने की कीमत १० करोड़ तोला सोना है। (एक तोला सोने की कीमत = २५ रुपये। इसलिए १० करोड़ तोला सोना  $\times$  २५ = २५० करोड़ रुपये) तो यदि हमन चलन में २५० करोड़ रुपये के नोट छाप कर डाल दिए, तो भी सोने की कीमत तो वही १० करोड़ तोले की रहेगी। पर चूंकि चलन में नोट अब ५०० करोड़ के हो गए इसलिए जहां पहले २५० करोड़ रुपये के नोटों की कीमत १० करोड़ तोला सोना थी अब ५०० करोड़ रुपये के नोटों की कीमत १० करोड़ तोला सोना रही—अर्थात् नोटों की मोत की माप में जो कीमत पहले थी उससे आधी हो गई। इसके मान यह भी हुए की जिनसे की कीमत दुगुनी हो गई—अर्थात् नोटों का चलन दुगुना हुआ उससे अनुपात में नोटों का मूल्य तो आधा रह गया पर जिनसे का मूल्य दुगुना हो गया।

अब सरकार की जो नए २५० करोड़ रुपए नए नोट छापन के कारण हासिल हुए वह मारा-का-सारा धन उन लोगों की जब से निकला जिनके पास चलण की पराहर था—अर्थात् उस लोगों की जब से निकला जा रुपया उधार देने का काम करते थे—जस के साहूकार इत्यादि, या तो जिन्हें जय-श्वच के लिए भी अपनी जब में कुछ नाट रखन पड़त था। इस २५० करोड़ का क्रय-शक्ति अब-यही पहले के मुवावत में घट गई, क्योंकि जिन्ना के नाम जा चढ़ गए। पर जब फुलावट-नाति पहल-मटन शुरू हाती है तब लोगों के अज्ञान के कारण जिन्नों के नाम अज्ञानक नहीं चढ़ जात और हमलिये नए २५० करोड़ की क्रय-शक्ति भी शुरू शुरू में पहल से बिल्कुल घायी गायन न होगी। अब सरकार इस तरह से यदि २५० करोड़ का कर उगाहती तो सबको भ्रम होना पचासा तरह का विरोध हाता कर-कानून बनाना पड़ता। इसके विपरीत इस तरह से चुपचाप नाट छाप कर चलण में प्रवेग करा देन से सरकार न चुपचाप अपना काम बना लिया।

### इस तरह से उचना अमम्मन-मा है

कोई कह सकता है कि क्या इस कर से कोई बच भी सकता है? हा, अपना में बच सकता है पर व्यवहार में गायन ही। धातुर यह कर उमी की जब से निकलना है जिनके पास द्रव्य की पराहर हो। जमा कि हम पहल बता चक है यह कर एक तो इस तरह के लोगों की पाकट में निकलना है जो उधार रुपया उन है दूसरे, एम लोग जिन्हें जय-श्वच के लिए रोजगार घब के लिए कुछ न-कुछ रुपया ता सितक में रखना ही पड़ता है उनकी जब से भी यह कर निकलना है।

अब ये दोनों तरह के लोग कर से इस तरह बच सकते हैं कि उधार देनेवाले तो उधार नना बन्द कर दें घर में जवाहराड इत्यादिरस छाहें, और जय-श्वचवाले नोट का व्यवहार तक करना छोड़ दें। पर यह नामुमकिन है। मूल पर उधार देनेवाले गायन उधार देना बन्द करके अपना धन जिन्नों में रोक दें पर निष्प की अगिद परीकृत के लिए रुपए का व्यवहार बन्द करना यह दवा मंत्र में भी नहीं उगाता कल्पना है।

हम गहरे उतरन पर देखेंगे कि रोजमर्रा की खरीद फरोख्त के लिए जो रुपया हम उपयोग में लाते हैं उसके कारण हर व्यक्ति पर यह नई तरह का कर इतनी कम मिकदार में पड़ता है कि बजाय इसके कि वह रुपए का व्यवहार बन्द कर दे एक नागरिक इस कर को झटा करना अधिक पसन्द करेगा।

हम एक अन्तिम सीमा का उदाहरण ले लें। मान लीजिए सरकार चलण में इतना द्रव्य प्रविष्ट करती है कि जिसके कारण हर महीन द्रव्य का मूल्य करीब आधा ही रह जाता है। अब यदि रोजमर्रा के व्यवहार के लिए हर मनुष्य दो दिन में ज्यादा फरोख्त किये हुए माल का रुपया खपन पास नहीं रखता तो इसके मान यह हुए कि रुपए की एक महीने में १५ बार पल्टाई हुई—अर्थात् १५ बार भिन्न भिन्न कामों के लिए उसी रुपए का उपयोग हुआ। द्रव्य का मूल्य गिरा एक महीने में ५० प्रतिशत। रुपए की पल्टाई हुई एक महीने में १५ बार। तो ५० - १५ = ३३३। अर्थात् हर सोने की लेवा बची पर ३३३ प्रतिशत कर पड़ा। यान १०० रुपए में जिस सोने को खरीदते उसके १०० + ३३३, अर्थात् १०३३ रुपए असल में आपको देने पड़ें। यह कर असाधारण जमाने के लिए इतना कम है कि केवल इससे बचन के लिए ही कौन रुपए का व्यवहार बन्द करेगा ?

इसलिए जसा कि ऊपर बताया जा चुका है, इस कर से अत्यन्त विरोधी भी बच नहीं सकता, और निश्चिन्ता से निश्चिन्ता सरकार भी यह कर उगाह सकती है। अमल में तो इस दर के उपयोग भी वही सरकार करती है जिसका दिवाला निकलन जा रहा हो। हा अल्प मात्रा में, और नियन्त्रण के साथ तो उद्योग पधों को पनपान के लिए जसा कि पहले बता चुके हैं हर अन्धी सरकार भी फुलावट नीति को समय-समय पर काम में लाती है।

पर यह भी सही है कि जिस तरह हर चीज की सीमा होती है वैसे ही इस दर की करामान के बारे में भी कहा जा सकता है। जब साख में लोग की कोई श्रद्धा नहीं रहती तब लोग महज खरीद बित्री के लिए खोर मा भी अत्यन्त कम समय के लिए ही अपने पास नोट रखते हैं।

नतीजा यह होता है कि चलण को व्यवहार में लानवाले इतन कम हो जाते हैं कि फिर हजारों मन नोट छाप कर चलण में प्रविष्ट करने पर भी कोई लम्बी रकम सरकार का हासिल नहीं होती। इसलिए इस शस्त्र की धार भा धन में करीब करीब झूठी सी पड़ जाती है।

एसी भयंकर फुलावट का एक परिणाम और होता है। सरकार का कज तो अपने आप चुक जाता है। जब द्रव्य का मूल्य इतना गिर जाय कि रुपया एक कौड़ी का भी न रहे तो फिर हजारों घरबो का देना पावना भी केवल हिसाब-बहियों को शोभा की चीज रह जाता है और इस तरह सरकार का कज अपने आप रफा हो जाता है। चूंकि सारा-का-सारा यह कर द्रव्य के धरोहरधारी की जब से निकला इसलिए इसे हम मणि पूजा कर की भी उपमा दें तो यह अनुपयुक्त उपमा न होगी। पर यह पूजा कर घुमा के नाक पकड़न-जमी चीज है। सीधे रास्त से पूजा कर लगान में मनुष्य साम्राज्य विधि का उपमाग कर सकता है। पर नुदकनी हुई सन्तनत में सीधा माग अस्तिथार करन की हिम्मत कहा? इसलिए यह अशास्त्रीय और भद्दा माग एसी विपद्ग्रस्त सरकार के लिए ज्यादा घासान होता है।

हमन धवतक फुलावट नीति की घर्चा की । उससे पाठक के दिल पर यही घसर होगा—घौर वह स्वाभाविक ह, क्याकि सारे विवेचन में ध्वनि भी वही निकलती ह—कि फुलावट या गिरावट की क्रिया का सचालन केवल सरकार मा नोट प्रसारक बक के हाथ में ही रहना ह । किन्तु यह बात अगत ही सही ह । हृद दरज की भयकर फुलावट या गिरावट का सचालन तो अवश्य हा या तो सरकार कर सकती ह या उसके इशारे से नाट प्रसारक बक । पर एक सीमा के भीतर, फुलावट या गिरावट अय बक या अय साहूकार भी पदा कर सकते है ।

हमने बतलाया ह कि धन का प्रतीक मुद्रा, मुद्रा का प्रतीक नोट और नोट का या मुद्रा का प्रतीक चेक या ड्रड ही जाती ह । जिस घासामी की साख अच्छी ह उसकी ड्रडा भी धन ही ह । फुलावट या गिरावट नोटा के अधिक विस्तार या सकोच स पदा होता ह क्योंकि नोट धन के प्रतीक ह । तो उसा तरह चका और ड्रडियो द्वारा भी तो धनका प्रसार या सकोच किया जा सकता ह, क्योंकि यह भी तो धनके प्रतीक ह । वह इस तरह होता ह—

मान लीजिए एक बक ह या एक साहूकार ह । उसके पास रुपया सिलक म नकद पडा ह, अथवा सरकारी कागजों में कम ब्याज म हवा पडा ह । नतो वह अत्रिय रकम किसी तरह के वाणिज्य व्यवसाय में लगती ह न लन देन में काम आती ह । उधार लेनवालो की कमी नही पर उहे बक या साहूकार की उस अत्रिय पूंजी स कोई लाभ नही मिल रहा ह । अब व्यापार को पनपते दखकर पूंजी के स्वामी उस बक या साहूकार की रुपया उधार लन की इच्छा हाती ह । वह ब्यागारिया एक अय उधार लेनवालो की रुपया देना शुरू करता ह और इस तरह उस धन का उपयोग होन लगता ह । अत्रिय रकम अब अत्रिय बन जाती ह और जितनी ही रकम अत्रिय बनती जाती ह उतनीही बाजार में नाणकी बहुतायत होती जाती ह ।

### उधार की फुलावट

इस बहुतायत का वही घसर होना ह जो नाट प्रगार के कारण होता ह

बन्कि नोट प्रसार स पदा हुई फुलावट की अपेक्षा उधार-द्वारा की गई फुलावट कभी-कभी ज्यादा गतिगाली भी होती है। एक कराड़ रुपए का नया नोट हम चलण म डालत ह और मो करोड का नोट पहले से चलण म ह ता साधारणतया यह कहा जा सकता ह कि एक प्रतिगतक फुलावट हुई और उसका साधारणतया ( यदि और कोई नया मसला उलट फेर का मौजूद न हा तो ) उमी परिमाण म दामा पर भी असर होना चाहिए। पर उधार-द्वारा एक करोड की पूजी यदि नाण के बाजार में प्रवेश करती ह तो यह नही कहा जा सकता कि उसका नामों पर असर, एक करोड की फुलावट क अनपात म ही होगा।

हम कल्पना कर सकते ह कि किसी आगामी क पास एक लाख का गल्ला पड़ा ह जिनपर उम आगामी की रकम लगती ह। उमे रुपया उधार न मिलन की वजह म उनका हाथ रुका पड़ा ह। उम अचानक बैंक से रुपए उधार मिल जात =। अब उसका हाथ खुला हा जाता ह। एक लाख रुपए म वह एक तल का कामना मालता ह। उमे अब सरसा की जरूरत पडती ह। सरसा बचनेवाले आगामी क पास मुद्रत से सरसों पडी थी, वह विक नहीं रही थी। उमे अब कर सरसा वाला आगामी एक बतन बनाने का कारनामा सोच लेता ह। उसके लिए ताका खरीना ह। ताकेवाले आगामी के पास मुद्रत म ताका पना था जो विक नहीं रहा था। ताका विकत ही नया माग खरीदने लगता है। नया माग खरीने म खानवाना काम बडाता ह। चारों तरफ स मजदूरा की माग होन स ठलुए मजदूरा का काम मिलता ह। व फिर ज्यादा कपडा खरीने लगते ह, तो कपड की पदाहण बडती ह। उसक मान ह—ज्यादा मजदूरा की माग, ज्यादा रुई की जरूरत। बस इस तरह से बाजार की रागना जा फीकी हो चली थी, फिर चमकनी है। उस चमक का दूसरी चीजा पर प्रभाव पडता ह। इस तरह उन्पन्न हुई आगावांतिता चारा धार प्रकाण डालती ह और याही-सी रकम स बडी सी फुलावट भी आ सकती ह।

हमन यह उणाहरण इसपर काफी रग चलाकर पना किया ह। ऐसा ही होना ह सो नही, पर ऐसा हो सकता ह, इतना ही बयाना ह। परक



यह है कि उधार से पदा हुई फुलावट कभी-कभी अपने अनुपात से ज्यादा काम कर जाती है क्योंकि उसके पीछे एक भावना रहती है जो लोगों में आशा का संचार करके कभी-कभी आवश्यकता से अधिक सरगर्मी ला देती है। इसी तरह जब बैंक अपना उधार भिमेदती है तो आवश्यकता से ज्यादा मुदनी भी पदा कर देती है।

अब हम देख सकते हैं कि उधार द्वारा भी धन का विस्तार और संचोच और तज्जनित फुलावट या गिरावट पदा की जा सकती है।

नोटा के प्रसार और संचोच से जो काम होता है एक तरह से उधार के विस्तार और संचोच से भी वही काम होता है। दोनों चीजें एक तरह से तो एक ही हैं क्योंकि दोनों के द्वारा धन का संचोच या विस्तार हो सकता है। परन्तु जो साहूकारों द्वारा धन का विस्तार अर्थात् धन का चलण में प्रवेश तभी होता है जब कि व्यापार चलता हो या तो अच्छे चलने की आशा हो कारखाने वाले कर्मांत हों भविष्य उज्ज्वल निसता हो। रुपया उधार देने में किसी तरह का खतरा न लगता हो तभी उधार का विस्तार होता है। साख एक नाजुक चीज है जो लाजवती पीच की तरह खतरों की आशका होते ही अपने डाल पात को समेट लेती है। जहां समय अच्छा आया व्यापार पनपन लगा कि पूजा वाला उधार देने में बहादुरी दिखाने लगते हैं और जहां खतरों की घटा बनी कि वे अपना बारिमा-बधना उठाने लगते हैं। इस तरह से उधार देनेवाले भी फुलावट और गिरावट के कर्ता बन जाते हैं। इस फुलावट या गिरावट को साख की फुलावट या गिरावट भी कह सकते हैं।

पर यह उधार की फुलावट या गिरावट सीमा के भीतर ही रहती है। किसी पूंजीवाले के पास अग्नित धन तो होता नहीं सन्त्याबद्ध धन ही होता है। इसलिए बैंक या साहूकार-द्वारा की गई फुलावट या गिरावट भी सीमा के भीतर बद्ध रहती है।

फुलावट नीति का हमन विचार क साथ जिक्र किया । गिरावट का हमन ज्यादा जिक्र नहीं किया है । पर गांधी यह समझाने की जरूरत नहीं है कि गिरावट का परिणाम हम वान में फुलावट में उल्टा होता है ।

विपक्षस्त सरकार धन उगाहन के लिए—चारों तरफ से उसकी चाल रुक जाती है तब—फुलावट-नीति का आसरा लती = या तो स्वल्प और निरवधि मात्रा में फुलावट उद्योग धंधों को पनपाने के लिए भी काम में लाई जाती है ।

ना फिर यह प्रश्न हो सकता है कि गिरावट-नीति का औरदोरा बंध होता है ।

गिरावट-नीति काम नीर न एसी दशा में प्रयोग में लाई जाती है जबकि सरकार तो व्यवस्थित है और व्यवस्था के साथ विचार हेतु के लिए उस सरकार ने फुलावट-नीति का प्रयोग किया है, पर मात्रा में कुछ ज्यादा फुलावट हा गड है और इसलिए फुलावट का जाग ठंडा करने के लिए व्यवस्था के साथ अब कुछ गिरावट-नीति के प्रयोग की आवश्यकता है । एसी आवश्यकता पडने पर गिरावट-नीति का उग्र प्रयोग किया जाता है ।

पर जब फुलावट बवसों की चीज है वस ही गिरावट इस धार की सातक है कि सरकार सहोसनामत है, उसकी ताकत या व्यवस्था में कोई कमजोरी नहीं है । गिरावट में तो जनप की मात्रा बगानी पडती है । इसलिए यह काम एक व्यवस्थित सरकार ही और सो भी विचार हेतु के लिए ही कर सकती है । यह इसलिए स्वाभाविक है कि जिस तरह फुलावट समीमित हो सकती है वस गिरावट सीमा के बाहर नहीं जा सकती ।

पर गिरावट नीति के प्रयोग के उगाहरण समार के अधिक इतिहास में कम मिलते हैं । ज्यादातर मामों में विचार हाकर या तो न्य के उद्योग धंधों की उन्नति के लिए, फुलावट-नीति का ही प्रयोग किया है ।

इसलिए फुलावट-नीति के गुण दोषों का हम अच्छी तरह विवेचन कर लें तो काफी है, क्योंकि जो हानि लाभ फुलावट के है उसको ठीक तरह समझने के बाद गिरावट के गुण दोष अपने घाप समझ में आ जायेंगे।

जब गिरावट-नीति का प्रयोग होता है तब फुलावट नीति से ठीक उल्टे नियमों को काम में लाया जाता है—अर्थात् किसी भी बहाने नोटों की चलण में से निकाल कर नोटों की एक बनावटी तंगी पैदा की जाती है। सरकारी खर्च के लिए, मान लीजिए, आवश्यकता है एक सौ करोड़ की और कर-वसूली की गई सवा सौ करोड़ की तो जनता के पास से पचास करोड़ का धन खर्च लिया गया। और इसी परिमाण में जनता की त्रय शक्ति कम हो गई। या तो 'याज ऊचा' लेकर बिना किसी हेतु के सरकार न पचास करोड़ का ऋण ले लिया और उसे खर्च के बजाय कोष में ही रख छोड़ा। तो इसका भी वही असर पड़ा—अर्थात् जनता की त्रय शक्ति कम हो गई।

### गिरावट कम वाछनीय है ?

जनता की त्रय शक्ति को कम करने की यह नीति एक तरह से तो दम घोटने की नीति—जसी लगती है। इसलिए ऐसी नीति को काम में लाना तभी वाछनीय हो सकता है जब कि सल्तनत की यह लग कि जनता समृद्ध है और समृद्धि के नग में वित्त साठव करन जा रही है—अर्थात् बूते के बाहर खर्च करने की या व्यवसाय करने की जन-साधारण की प्रवृत्ति बढ़ रही है, जिसका आग जाकर परिणाम भयानक हो सकता है। जब सरकार को ऐसी विपत्ति की आशंका होती है तभी, जैसे दूध के उफान को ठंडा करने के लिए पाना से छोट दिया जाता है उसी तरह समृद्धि के उफान को—समृद्धि को नष्टी क्योंकि समृद्धि तो ठोस धमेली चीज है उफान धोखा है—आवश्यकतानुसार गिरावट का प्रयोग करके शान्त करना प्रजाप्रिय सरकार का कर्तव्य बन जाता है।

सरकार न कर-वसूली से या ऋण-द्वारा जो धन जनता से खेंचा उसका बखीर तो व्यय ही करना है। और वह व्यय उस समय किया जाना है जब कि उफान के बाद की सुस्ती के मारे जनता भयभीत होकर

अपनी सारी प्रगतिया का बन्द कर देती है व्यय में आवश्यकता से ज्यादा कजूसी करन लगती है व्यापारी मदी से मयभीत होकर अपन हाथ-पाव सिमट लेते है बकारी बढन लगती और जिसा के दाम गिरन लगते है । ऐसे समय में जनता को फिर प्रोत्साहन दन के लिए अतिशय आई हुई मन्त्र को शान्त करन के लिए ठड खून म फिर से गर्मी लान के लिए, जनता से खचा हुआ धन सरकार खचन लगती है । और जहा खच शुरू हुआ कि फिर ताजगी आने लगती है ।

इसके यह मान नहीं कि हिंदुस्तान में सरकार न जा गिरावट का प्रयोग किया वह इसी सिद्धान्त पर किया और जब मदी न नबाही शुरू की तब उसको रोकन के लिए फिर फुलावट का प्रयाग किया । यहा की क्या तो निराली है ।

इस देग में गिरावट नीति अक्सर इसलिए काम में लाई गई है कि द्रव्य के परिमाण में कमी करके उसका मूल्य उचा कर दिया जाय । भाग जब हम भारतवष की हुण्डी का विवेचन करेंग तब गिरावट नीति से डम दश की जिन्सो के दामा पर, कल-कारखाना पर समद्वि पर और आयान निर्यात पर क्या अक्सर हुआ गिरावट की नीति को सफल बनान के बिए कैसे करोडो रुपए बरवाद किय गए इन सब बातों का विवेचन करन के लिए हमें काफी मौका मिलेगा ।

फुलावट में दामा में तेजा गिरावट में मक्षा यह हमने बतलाया है। और फुलावट या गिरावट मुख्यतया सल्तनत की मर्जी की चीज है। कम से कम सरकार सहमत होने पर बवसी की फुलावट को तो हम अनहोनी चीज बरार दे सकते हैं। इसलिए सीमाबद्ध फुलावट या गिरावट सरकार की मर्जी पर अवलम्बित रह जाती है। तो फिर यदि फुलावट में तेजी और गिरावट में मदी होती है तो दाम करीब करीब स्थिर रखने के लिए भी कभी फुलावट तो कभी गिरावट को चाभी घुमाई जा सकता है। दूसरे गंगा में दाम स्थिर रखने के लिए भी इन दोनों तरकीबों का उपयोग किया जा सकता है। और दाम स्थिर रहना, यह भी तो समाज के लिए एक बड़ा लाभ है।

हम पहले बता चुके हैं कि दामों की तेजी से माल उपजानवाला का लाभ और बधा प्राप्त वाला को नुकसान है दामा की मदी में इससे उल्टा। पर हम तेजी मदी के उलट पर मर्जी किसोको लाभ और कभी हानि से सामाजिक असन्तोष फलता है सो बुराई तो है ही पर इस असन्तोष के साथ-साथ पदाङ्ग पर भी बराबर असर पड़ता रहता है। धीरे धीरे लगातार तेजी चलती है तो पदाङ्ग बढ़ती रहती है पर फिर जब दामों में मदी आती है और दाम गिरते हैं तो कारखानों को ताला लगने लगता है बकारी बढ़ती है और इससे समाज में गरीबी आन लगती है। उससे असन्तोष बढ़ता है। सम्भव है दाम स्थिर हों—कम से कम एक परिधि के भीतर—तो शायद इस परिस्थिति से पदाङ्ग की वृद्धि भी है और समाज के विभिन्न किरकों में दामा की घटा बढ़ी से पंगा हुआ असन्तोष भी न हो पाए। इस भावना से प्रेरित होकर कई अध्यापकों दामों की साम्यावस्था की पुष्टि करते हैं।

### दामों की साम्यावस्था

दामों की साम्यावस्था से इतना ही प्रयोजन है कि गम के सूचक

अंक (Index Figure) की साम्यावस्था। यह तो नामुमकिन चीज है कि हम सब जिंसा व अलग अलग दामों की घटा-बढ़ी को रोक सकें। मान लीजिए एक साल गहू की फसल बहुत बढ़िया बठी और सरसों की फसल मारा गई। तो गहू की बहुतायत से गहू की मन्गी और सरसों की कमी के कारण सरसों की तेजी अवश्यम्भावी है। इस कोई नहीं रोक सकता। पर अलग अलग चीजों की तेजी या मन्गी एक बात है और सम्मिलित दामों की तेजी या मन्गी दूसरी बात। जब सम्मिलित दामों की तेजी या मन्गी आती है तभी समाज व एक अंग को लाभ और दूसरे को हानि होती है। इस सम्मिलित दामों की तेजी या मन्गी का गिरावट या फुलावट की नीति द्वारा काफी दर्जे तक रोका जा सकता है। वह इस तरह —

सरतन्त्र दामों व मूल्य अंकों का अध्ययन करती रहती है और जहां दाम कुछ बढ़ कि नाट प्रसारक एक चलण में से नाग का निवात कर घन का सकोच शुरू करती है जहां लाभ गिर कि नाटों का चलण बढाने विस्तार कर देती है। इस तरह व मकाच विस्तार-द्वारा दामों का यथासाध्य साम्यावस्था म रखन की वागिंग की जाती है। और उसम उम माधारणतया सफलता भी मिलती है। इस सारी क्रिया की विस्तार से समझाने में छोटी मोटी अर्थ कई क्रियाओं का भी उल्लेख कराना पडेगा। चूंकि पाठकों के सामने एक मोटी सी रूप रेखा बना ही इस पुस्तक का ध्येय है इसलिए ज्यादा व्यौर में उतरना आवश्यक नहीं है। बतलाना इतना है कि फुलावट गिरावट की नीति से दामों में तेजी मन्गी और साम्यावस्था तीनों चीजें लाई जा सकता है।

पर दामों की साम्यावस्था में रखन व धोर भी तरीक है। एक तरीका तो साम करके हमी महायुद्ध में बहुतायत में काम में लाया गया है। यह तरीका नया नहीं है पर इतने विस्तार से इसी युद्ध में काम में लाया गया है इसलिए इस नया तरीका भी कह सकते हैं। यह तरीका है मानकी उपज खान और दामों का नियंत्रण करना।

जब हम गोट प्रसार अधिकता में करके दामों की तेजी को प्रोत्साहन देते हैं या तो कम करके दामों की मन्गी को आन्तान करते हैं तो

एक तरह से हम दामों की तेजी या मदी पर सीधा हल्ला न मालकर ऐसे टड मेढे उपाया का प्रयोग करत ह कि जिससे जनता की त्रय शक्ति कमोबश होकर चीजा की उपज और खपत पर अपन आप अच्छा या बुरा असर पडता रहे ।

जनता के पास त्रय शक्ति ह और वह उसका उपयोग करके दामा को तेज करना चाहती ह । उम त्रय शक्ति को हमन कर द्वारा या उधार लेकर अपन कान में कर लिया । फलस्वरूप अब जनता बाजार से हट जाती ह और दाम गिर जात ह । या ता जनता की त्रय शक्ति का ह्रास हा गया और इसलिए बाजार म सन्नाटा छा गया । सतनत न नए नए पथ करना शुरू करके जनता की त्रय शक्ति बढा दी और जनता फिर बाजार में खरीदन के लिए आ धमकी और इस तरह बाजार में फिर जान आ गई । यह गिरावट या फुलावट का एक तरीका ह दामा को घटान और बढान का ।

पर मान लीजिए कि आपके पास पसरय दोलत पडी ह । उसका किसी न नही छीना । पर आप पर यह दफा लगा दी कि आप अमुक परिमाण म ज्यादा किसी भी हालत म किसी भी वस्तु को खरीदन नही पावेंगे और न दूकानदार बिना सरकारी इजाजत के आपको कोई चीज बचेगा । तो फिर इसका परिणाम भी वही होता जाता ह जो बलण की कमी-बन्गी से पदा विया जाता ह क्याकि आपके पास शक्ति होते हुए भी आप सराद के हक्दार नहा रहे । यदि सरकार इस तरह की सारी हलचला का नियंत्रण कर डाल कि अमुक चीज की इतनी पन्नाइश होगी हर मनुष्य अमुक मिकदार ही अमुक चीज की खरीदन और खपत कर सकेगा बचनवाल और लेनवाल अमुक बघ हुए दाम पर ही खरीदन और फरोस्त कर सकेंगे और जा कोई सरकारी हुकमउदूली करेगा उसे सजा भुगतनी पन्गी तो फिर चाह किसी क पाग अमरय धन क्या न पडा हा वह धन बजार सा बन जाता ह और उमकी नियंत्रित क्रिया के कारण दामो की घटा-बन्गी भी नियंत्रित हा जाती ह । अवश्य हा यह दूसरा तरीका, दामा की साम्यावस्था लान का ज्यादा सीधा ह — भाडा टवा नही ह — पर इसके यह मान नही कि यह ज्यादा वाछनीय ह ।

## नियंत्रण

इस तरीके में याजना और संचालन के लिए अफसरों और कारिन्दों का एक बहल मना का गठना पड़ता है जो गत दिन इसी भाक भाक में रहती है कि किसी न इस नियम का भंग ना तही किया। इतने नागरिकों को केवल याजना और संचालन के लिए रोक रखना यद् भी दंग की समृद्धि के लिए एक हातिकर बाज है। आखिर जब तक हर आत्मी कुछ पदाङ्ग करना रहता है तभी तक दंग की समृद्धि बढ़ती है। यदि सब लागे संचालन में वाद विवाद में मध्य और पुनिम में और एम अन्य व उपजाऊ घघा में ही लग रह तो फिर समृद्धि कहाँ ? इस दृष्टि में वही तरिका अच्छा है जिनमें कम-अ कम आदमियों की शक्ति का ह्रास हो। पर मुद्द-नाल में इन सब नियमों की अवहलना करनी पड़ती है। एम विकट समय में ध्यय की अपेक्षा साधन गौण बन जाता है। इसलिए एम नियंत्रण का उपयोग विकट काल में ही वाँछनीय माना जाना चाहिए। यद्यपि एम में शक्ति समय में भी नियंत्रण का उपयोग किया गया है पर एम के सम्बन्ध में ना यह भी कहा जा सकता है कि वद् शक्ति का समय आया हो ना—विकट समय का हा दौर-दौर रहा और इसलिए वद् नियंत्रण नीति अभीष्ट ही थी। जो ही दामा की साम्यावस्था नियंत्रण में भा गई जा सकती है यह सब पाठक समझ सकेंगे।

+

+

+

अब पाठकों से बिदा लेता हूँ।





( उत्तर भाग )

इतिहास



## अनेक को जगह एक

मुद्रा का अर्थ चिह्न है। बहुत काल पहले जब मिक्का के लिए चादी या सोने के टुकड़ों का व्यवहार बढ़ा तब यह आवश्यक हो गया कि वे टुकड़े ठीक तौल के हों और प्रमागस्वरूप उनपर कोई चिह्न बना दिया जाय। इस प्रकार सिक्के का नाम मुद्रा हो चला।

प्रश्न उठता है कि मुद्रा-सम्बन्धी कला इस देश की अपनी उपज थी या वह वही बाहर से आई ?

यहां के सिक्कों की तौल और बनावट दाना ही निराल ढंग के हैं और धीरे धीरे इस मत की पुष्टि होती जा रही है कि भारत न इस विषय में न तो किसीकी नकल की, न किसीका अपना गुरु माना। 'नागरी प्रचारिणी पत्रिका' ( वगाल १९६७ ) में प्रकाशित स्व० दुर्गाप्रसाद जी का लेख इस सम्बन्ध में पढ़ने लायक है। आप लिखते हैं— 'मुझे जहां तक खोज करने का अवसर मिला है उसका प्रमाण मिला है कि भारत में गौतम बुद्ध से पहले सिक्का का चलन था। उस समय के सिक्के मुझ प्राप्त भी हुए हैं आपके लेख से पता चलता है कि गौतम बुद्ध के समय में चांदी के सिक्के की तौल ४० और २५ रत्ती होती थी। पण कार्याण—ये चांदी के तत्कालीन सिक्का के नाम थे। सिक्कों पर पहले किसी राजा की मूर्ति या उपाधि अंकित करने की प्रथा नहीं थी, केवल कुछ चिह्न—जम हाथी, कुत्ता या वृक्ष—छाओं से अंकित कर दिया जात था। ईसा के पूर्व दूसरी शताब्दी से अशोक का प्रयोग होने लगा। कुछ समय तक प्राकृत का बोलचाल रहा। फिर देवनागरी या हिन्दी का प्रयोग होने लगा। चांदी का रूपया चलानेवाला गरगाह था। उसका सिक्कों पर खूफी के साथ हिन्दी का भी स्थान प्राप्त था। उसके बट इस्लामगाह के समय में भी यही चल रही। श्रीयुक्त दुर्गाप्रसाद जी लिखते हैं—'इनके समय तक तो मुद्राओं पर हिन्दी को बराबर स्थान

मिला पर जब भुगल बादशाह बाबर, हुमायूँ और अकबर न अपना अधि-  
कार जमाएँ और सिक्के चलाएँ तो उन्होंने पहले कूपी अक्षरों में अपना  
नाम सिक्के पर लिखा। हुमायूँ न पहले-पहल फारसी अक्षरों का प्रचार  
भारत में किया। उसने पहले फारसी अक्षरों को, जिसमें उर्दू लिखी  
जाती है, यहाँ कोई नहीं जानता था। अकबर और उसके  
बाद जहांगीर शाहजहाँ और गजब इत्यादि सभी बादशाहों ने फारसी  
का प्रचार किया। राजकाय सब फारसी में होते रहे। सिक्का पर भी  
फारसी अक्षरों को जगह दी गई और हिन्दी देवनागरी को हटा  
दिया गया।”

भारत में सोने के सिक्के का प्रचार भी अत्यन्त प्राचीन काल से है।  
उन्हें निष्क पाद आदि कहते थे। कुछ विद्वानों का मन है कि समार में  
पहले पहल सिक्के के लिए सोने का ही प्रयोग होता था, क्योंकि सोना  
सुलभ था और चादी दुर्लभ। सोना जहाँ मिलता था वहाँ सोने के ही  
रूप में उसे अलग करने के लिए कोई विशेष परिश्रम या प्रयास नहीं  
करना पड़ता था, पर चादी की बात और थी वह दूसरे खनिज द्रव्यों  
के साथ इस प्रकार मिश्रित थी कि उसे निकालना या हासिल करना  
जरा बड़ा काम था। कहते हैं कि उस युग में सोने से चादी का मूल्य  
कहीं अधिक था। क्रम-क्रम चादी निकालने के ज्ञान या विज्ञान की उत्पत्ति  
होती गई और चादी की दुर्लभता मिटती गई। कुछ काल बाद स्थिति  
बिलकुल बदल गई। चादी सुलभ हो चली और सोना दुर्लभ। मालूम  
नहीं, इस देश में इनका क्या काम रहा। पर इतना निश्चित-सा ज्ञान  
पड़ता है कि प्राचीन काल में यहाँ सोना, चादी की तुलना में सस्ता था।  
फौलर कमेटी के सामने बयान देते हुए अग्रज अध्यापिका मि० मकलियड  
ने कहा था—

‘अति प्राचीन काल में भारतवर्ष सुसम्पन्न था, और प्राचीन देश  
सम्पन्न था वरन्। उस समय भारतवर्ष को विदेशी वस्तुओं की कोई  
खास जरूरत नहीं थी और वह बिना सोने या चादी पाएँ अपना माल बचन  
का तयार न था। पर भारतवर्ष में सोना और दसों की अपेक्षा सस्ता  
था—ईरान में १३ भाग चादी एक भाग सोने के बराबर होती थी और

भारतवर्ष में ८ भाग चाँदी एक भाग सोने के लेशजा भारत में बाहर स चाँदी बहुत बड़ परिमाण में आया करती जिसे बंदले में बहा स या ता सोना बाहर जाता या दूसरा माल ।

सोने चाँदी के इतिहास में अमेरिका का पना चलना (१४९३) एक अत्यन्त महत्वपूर्ण घटना । यूरोपवाला का माना कुबेर का निधि हाथ लग गई । जहाँ सोना या चाँदी का—परिष्कारण चाँदी का—एक साधारण माना-सा बहना था वहाँ, समुद्र नहीं तो एक जबदस्त परिभा लहरें मारन लगा । थोड़ा ही समय में यूरोप की भूमि इनसे परिप्लावित हो चला और वहाँ के आर्थिक-राज्य में पूरा इनकितान नजर आन लगा । पाना फलक पर खत में दाना बन्द गया ।

१४९३ और १८०० के बीच मान और चाँदी के उत्पादन का तत्वमीना यह है—

माना (लाख औंस)	चाँदी (लाख औंस)
१४८३-१६०० २३०	७४७०
१६०१-१७०० २८०	१०७००
१७०१-१८०० ६१०	१८०००
<u>१,१२०</u>	<u>३८५२०</u>

उत्पादन की दृष्टि से १६ वीं सती में मान और चाँदी का पारस्परिक अनुपात १ ३२ था—अर्थात् त्रिनना माना निक्का उससे ३२ गुना अधिक चाँदी निकली । १७ वीं सती में यह अनुपात १ ४४ हो चला । पारम्परिक मूल्य का अनुपात पहले १ ११ था—अर्थात् एक भाग सोना प्राय ११ भाग चाँदी के बराबर जाता था । पर यह अब प्राय १ १५ हो चला, और प्राय दो सौ साल तक—अर्थात् १९ वीं सती के पिछले भाग तक—यही कामम रहा ।

इस देश में यूरोप से चाँदी का आयात अब और भी अधिक हो चला । विदेशी कम्पनियों—मुख्यत ईस्ट इंडिया कम्पनी—का इस व्यापार पर एकाधिपत्य-सा था । तबसे आगेत बिहार में—और अगले समय में आर्थिक-राज्य के अधिपति थे मंगलशाह के अगत्सुठ । नवाब ने इन्हें

टक्काल का इजारा दे रखा था। लेहाजा चादी के सबसे बड़ खरीदार यही था। ईस्ट इंडिया कम्पनी और जगतसेठ के घरात के बीच के लन देन व सम्बंध पर और तत्कालीन व्यापारिक अवस्था पर यह अवतरण अच्छा प्रकार बालता है—

(१७४६) अवतुव म विलायत म कुछ चादी आई। कौंसिल के आग्रह करन पर (जगतसेठ) महतावराय न उस खरीद लिया। इससे कम्पनी को कई लाख रुपए तत्काल मिल गए और कुछ दिनो तक उसे बज लेन की जरूरत नहीं पडी। पर नया साल शुरू होते ही अवस्था फिर बदली और ढाका के कमचारियो न कौंसिल से रुपया माग। इसी समय कुछ चादी आ पहुची। कौंसिल न उसे कासिमवाजार भेज दिया। वहा वह महतावराय को बच दी गई और उसके पेट कम्पनी को डढ़ लाख रुपया मिल गया। पर यह रुपया कासिमवाजार की कोठी को न मिला इसकी बहावाला न गिकायत की और कौंसिल को लिखा— एसे समय म जब कि हमपर बज का इतना भारी बोझ है और कम्पनी की साख इतनी कम रहे गई है आपने यह रुपया मगाकर अच्छा काम नहीं किया। महाजन पहले से ही अघीर हो रहे थे, मालूम नहीं, अब वे क्या कर बठग।' कौंसिल न उहे लिखा कि हम और चादी शीघ्र ही भजन वाले है। चादी कासिमवाजार भजी गई पर महतावराय न उस उसी टम लेन से इनकार कर दिया। ईस्ट इंडिया कम्पनी के पुरान काजात से जाहिर होता है कि रुपए की टान उस समय काफी थी और जगतसेठ न चादी का दाम घटा दिया था। वह १७४७ के उत्तरार्द्ध म २४० सिक्के रुपए भर चादी के लिए २०१ रुपए से अधिक दन को तयार न था। कम्पनी अपनी चादी उनके हाथ खचती जानी और बराबर दाम बढ़ान के लिए आग्रह करती जाती।

पलासी की लड़ाई में विजय पाकर ईस्ट इंडिया कम्पनी बगाल बिहार का और धीरे धीरे सारे भारतवष का, माध्यविषाता बन बठी। जगत् सेठा न इस राज्यप्राप्ति को सफल बनान में प्रमुख भाग लिया था और कम्पनी की तन-मन धन से सहायता की थी, पर उह अन्त में लने के देन गठ गए और कहना चाहिए कि पलासी के मगान की रचना बराबर

उन्हांन घसन ही बिनाग क बीज बाण । सायिक घोर राजनतिक दोनों ही शत्रा में सर्वमवा ईस्ट इंडिया कम्पनी बन बैठी और जगतमठ उपाधि उम घरान की विपुन सम्पदा और प्रभुता का स्मारक मात्र रू गई ।

पर चागी के मिक्की का प्रचार विगपत उत्तर भाग्न में ही था । दक्षिण में प्रधानता सान क मिक्का की थी ।

संस्कृत में चागी को रूप्य या रौप्य कहते हैं । अष्टाध्यायी में एक विगप प्रकार का मुद्रा क लिए 'आन् रूप्य' गल प्रयुक्त हुआ ह । इसी रूप्य या रौप्य का अवभ्रग करना है । १८३५ से पहले इस रूप्य में तरट-तरह के रूप प्रचलित थ । इनमें कुछ क नाम धाम इस प्रकार थ —

१—पुरान मिक्क (१७६०-१८१७)

२—नए मिक्क (१८१८-१८३०)

३—पुरान घोर नए कम्वावागी रूपए जा कम्वावाग बनारस घोर सागर की टकमाला में डल थ ।

४—कम्वावागी रूपए जा कलकत्त की टकमाल में गले थ ।

५—मद्रासी रूपए ।

सोन क मिक्का का भोगही हाल था । इस बहुतायत घोर विभिन्नता म बड़ी अचने पदा होता था—एतएन व्यापार क सामग में यह अनेकना प्रवल बाधक का काम करती था । ईस्ट इंडिया कम्पनी की धार म जा कलकत्त नियुक्त हान थ उन्हें चागी के कम-म-कम ६० घोर साने क कम म कम ७२ मिक्क मान या लगान क रूप में भागा से लेने पड़ते थ । यगान का यह गल था कि एक जिले में जा रूपग गचना बहु दूमरे जिले में नगी । यह भी नगी कि एक जिले क दन्तर एक ही प्रकार के मिक्क का यानवाला ही । अलग अलग चीजों के लिए अलग अलग मिक्क थ । घोर घिमाई की मात्रा अनुाधिक हान के कारण मिक्की पर बट्ट का शिगाव भी अलग अलग था । चागी घोर सान का पारम्परिक सम्बन्ध मग एक-भा नहीं रहता था—कमा नाना मस्ता हा जाना कनी चागी ।

<sup>१</sup> कम्पनी की टकमानों में रूपए की दसाई कल-द्वारा शानी थी, इस लिए उसका नाम कलद्वार पड़ा ।



इनमें जो चीज सस्ती होती वह तो खजाने में रह जाती, और जो महंगी होती वह निकल जाती। इन सारी अडचनों और कठिनाइयों को दूर करने के लिए मुद्रा-सम्बन्धी सुधार आवश्यक था, और वह सुधार या अनेकता की जगह एकता का स्थापन। भारतवर्ष का अधिकांश एक राजछत्र की छाया में आ चुका था इसलिए वह मुद्रा-अब उतना कठिन भी नहीं रह गया था। कहना चाहिए कि गणतन्त्र सम्बन्धी एकता के बाद मुद्रा सम्बन्धी एकता आब ही वाली थी।

कम्पनी के डाइरेक्टरों ने इस विषय में अपना मत प्रकट करते हुए १८०६ में मद्रास सरकार को लिखा कि भारतवर्ष का प्रधान सिक्का चांदी का होना चाहिए जिसका वजन १८० ग्रन (एक तोला) हो और जिसमें १६५ ग्रन खालिस चांदी हो। उनकी राय थी कि प्रधानता चांदी के सिक्के की रहे पर सोन का चलन भी बन्द न हो। साथ ही वे इन दानों के बीच कानूनन कोई सम्बन्ध स्थापित करना नहीं चाहते थे। उनका प्रस्ताव था कि सोने का मूल्य उसके परिमाण और उसकी माग पर अवलम्बित हो।

पर प्रायः ३० साल तक मुद्रा सम्बन्धी एकीकरण का प्रस्ताव प्रस्ताव ही रहा। उसको विधान का रूप मिला १८३५ में जिसमें दो साल पहले बंगाल के गवर्नर-जनरल सारे देश के गवर्नर जनरल बनाए जा चुके थे और गणतन्त्र पूर्ण तरह केंद्रीभूत हो चुकी थी। उस साल २७ मई का सरकार की ओर से यह घोषित किया गया कि भारतवर्ष का जितना माग ब्रिटिश छत्रच्छाया में आ चुका है उसमें अब एक ही प्रकार के रुपए का चलन होगा और हर बात में यह रुपया आजकल के फरव्वावाणी रुपए के समान होगा। इस घोषणा के अनुसार जो विधान बना उस भारत के मुद्रा सम्बन्धी इतिहास में बड़ ही गौरव का स्थान प्राप्त है। उसका सारांश यह था —

(१) १ ली सितम्बर १८२५ से कम्पनी की टकसाला में एक ही प्रकार के रुपए की डलाई होगी। इस रुपए का वजन १८० ग्रन होगा जिसमें खालिस चांदी १६५ ग्रन होगी। छठप्रिया और चवप्रिया में भी इसी हिसाब से चांदी रहेगी।

(२) कुछ खास तरह के सोने के सिक्के भी डाले जायेंगे पर कोई भी

घादमी कम्पनी के राज्य में सोने का सिक्का बन या लेन को बाध्य न होगा।

इस विधान की वन्दन १६५ ग्रन ग्वानिस चादी वाला रुपया मुद्रा सिंहासन पर जा बठा। दन-नन के लिए सब नोग इसीका ध्यवहार करने की बाध्य थे, इमलिए अपन क्षत्र म धीरे धीरे इसका एकछत्र राज्य सा स्थापिन हो गया। भारतवर्ष में हर प्रकार के मूल्य का मापदण्ड चाँदी बन गई।

पर साथ साथ एक हव तक सोन का चलन भी बना रहा। कम्पनी की टक्कात म मोन का जो प्रधान सिक्का ढलता उसका वजन भी १८० ग्रम था जिममें ग्वानिस सोना १६५ ग्रन था। इसका मूल्य था १५), और १८४१ का सरकारी आनन था कि जब तक दूसरा टक्का पारो नहीं किया जाता तब तक उमका और सं य सिक्क दसी दर म मजूर किए जाय। पर यह अवस्था विरस्माया न हा सकी। कुछ ही वर्ष बाद आस्ट्रलिया और केलीफार्निया में नई माना क मुन्नन म मोन का उत्पादन बहुत बन बना और चादी की तुनना में वह मस्ता हो बला। नतीजा यह हान लगा कि लाग अपना लगान या कर रुपया म न चुका कर माहरा म चुकान नग। बाजार में एक मोहर के १५) से कम मिसत, क्योंकि माना सस्ता हो रहा था—पर सरकारी सजाने में वह भव भी उभी दर म ली जाती इसलिये मोहरा का बहा भरमार हान नगा। और सरकार किसी का भी १५) में मोहर लेन को बाध्य नहीं कर सकती थी। सरकार चाहती ता चाँदी की जगह उसी समय सोन को दे देनी और सोने को ही मूल्य का मापदण्ड बना देनी। पर एसा न करक सरकार ने १८४१ क आदेश को ही उठा निमा, और १ ता जनवरी १८५३ स मुद्रा के रूप में सोन का चमण बिलकुल बन्द हो गया।

सन सत्तावन के गन्र के कारण भारत-सरकार की धार्मिक कठि नाइया बेहत् वड गइ और ग्विनिय मुधारन क लिण मि० जम्म किन्सन नामक विषयन इंग्लन्ड म लाए गए। यह भारत-सरकार के प्रथम धय सदस्य थ और इहा के समय में कनेन्सी नोट जारी किए गए। यह १८६१ की बात ह। उसमे पहले नोट जारी करन का अधिकार कुछ ग्रास बैंकों का प्राप्त था, पर कसकता, बम्बई और मद्रास के बाहर जोरों का

प्रचार नहीं के बराबर था। उस समय कोई भी आदमी नोट देने या पेन को धानूनन बाध्य न था। विल्सन न नोटों का प्रचार बढ़ाने की दृष्टि से अपनी योजना भारत सचिव के सामने रखी। उस समय भारत सचिव सर चार्ल्स उड थ और उनका इस विषय में विल्सन से मतभेद था। विल्सन इस मत के अनुयायी थे कि नोटों की पुष्टी के लिए जो कोप या रिजव कायम किया जाय उसमें एक हफ्ता तक सोना चांदी रखकर बाकी हिस्सा सरकारी कागज के रूप में रखा जाय। सर चार्ल्स का सिद्धान्त था कि कम-से कम नोटों की पुष्टी ऐसे कागज से होनी चाहिए, और रिजव का बाकी सारा हिस्सा सोना या चांदी का होना चाहिए।

अंत में हुआ वही जो भारत सचिव को मजूर था। सन् १८६१ में नोट सम्बन्धी जो विधान बना उसमें करेसी रिजव में सरकारी कागज की हद चार करोड़ पर बाध दी—अर्थात् यहाँ तक तो नोटों की पुष्टी सरकारी कागज या सिक्कुरिटीज से की जा सकती थी पर यहाँ पहुँच जाने के बाद जो नोट निकाल जाते थे रिजव में सोना चांदी रखकर ही। आरम्भ में रिजव में चांदी-ही चांदी रहती थी १८६५ में कुछ सोना भी जमा हुआ पर उसकी मात्रा कम होती गई और १८७५ में वह बिलकुल गायब हो गया। फिर १८९८ के बाद करन्सी रिजव में सोना इकट्ठा हान लगा। आरम्भ में दस बीस सौ और एक हजार के नोट जारी किए गए थे। पाँच रुपए का नोट १८७१ में जारी किया गया, और दस हजार का नोट उसके भी बाद। १८६१ के विधान न सारे देश को कुछ हल्का में बाँट दिया जो सकल कहलाते थे—जैसे कलकत्ता, बम्बई, मद्रास और रंगून। एरु सकल का जारी किया हुआ नोट दूसरे सकल में कोई लेन का बाध्य न था, पर सरकारी देना किसी भी सकल के नोटों में अदा किया जा सकता था। नोटों की लोकप्रियता बढ़ाने के लिए और भी सुझावें कर दिए गए थे। पर नोटों का विषय प्रचार बत मान पाने में ही हुआ है। समय समय पर नोट सम्बन्धी विधान में मंगोचन होते रहे हैं। इस पार्लामी के पहले ग्यारह माल के भीतर, पाँच से लेकर सौ रुपए तक के नोट अखिल भारतीय कर लिए गए—अर्थात् वे चाहे किसी भी सकल के हों लोग उन्हें सबन लेने का कानूनन बाध्य

हो गए। इससे नोट का प्रचार और भी स्वच्छन्ता से होने लगा। नाटो की कागजी पुस्ती की हद भी १८६१ और १९४३ के बीच कहा-से-कहीं जा पहुँची है।

जिस समय नाट-सम्बन्धी विधान पहलेपहल बना उस समय यहाँ रुपए की बड़ी टान थी। इसके कुछ खास कारण थे। अमरिका में उत्तर और दक्षिण के राज्यों के बीच जो भीषण सधाम हुआ उसका एक नतीजा यह हुआ कि दक्षिण से रुई का निर्यात (एक्सपोर्ट) कुछ समय के लिए बन्द हो गया और यह व्यापार भारतवर्ष को मिला गया। यहाँ से निर्यात काफी हानि लगा और देग का पावना चुकान के लिए दूसरे देग के लिए अधिकाधिक चाँदी भजना आवश्यक हो गया। पर भारतवर्ष इस समय बाहर बज्र भा काफी ले रहा था। १८५५ ५६ और १८६९ ७० के बीच उसने प्राय ६६ करोड़ रुपए बज्र लिए। इन लोना कारणों से चाँदी का आयात कहीं-से-कहीं बढ गया। १८५७ ५८ और १८६२ ६३ के बीच ससार भर में जितनी चाँदी निकली उससे अधिक चाँदी अकठ भारतवर्ष न ली। फिर भी यहाँ रुपए की टान बनी ही रही। ऐसा अवस्था में लोगों का ध्यान सोने की ओर जाना स्वाभाविक था। १८६४ में यहाँ के वाणिज्य-व्यापार से सम्बन्ध रखनेवाली कुछ सभाओं या चैम्बरों ने प्रस्ताव किया कि मूल्य का मात्र या स्टैंडर्ड सोना बन दिया जाय, और सोने के सिक्के चलण में लाए जाय। इस सम्बन्ध में कुछ अवतरण उस आवन्तनत्र म दिए जाते हैं जा बम्बई के चम्बर की धार से बढ साट के पास भजा गया था —

‘भारतवर्ष का व्यापार तजी से बढ रहा है वह भाषिक और भीषा गिक उन्नति के पय पर अग्रसर हो रहा है पर चाँदी इस समय उस व्यापार और उम उन्नति में सहायक न होकर बाधक हो रहा है।

‘जिस समय चाँदी की अर्पनाया गया था उस समय उसका उत्पादन सोने से प्राय दूना था। इसलि कहा जा सकता है कि उम अर्पनाना बुद्धिमत्ता का काम था। पर वह बात अब नहीं रही। इसर चाँदी के उत्पादन में कोई बढि नहीं हुई है। पर भारतवर्ष की माग बेहू बढ गई है, इसलिये चाँदी से काम चसाना असम्भव-सा हो गया है।

“संसार में हर साल प्रायः एक करोड़ पौंड (स्टर्लिंग) की चांदी निकलती है। पर पिछले छ साल में एक भारतवर्ष ने ही हर साल एक करोड़ पंद्रह लाख पौंड की चांदी ली है। पिछले साल तो उसने १ करोड़ ४५ लाख पौंड की ली।

ऐसी अवस्था में चांदी के मूल्य में बहुत बड़ी वृद्धि अनिवार्य है—जिसका अर्थ है भारतवर्ष जैसे देश में द्रव्य की कमी और कामों का गिरना।

‘जबकि सोने का यह हाल है कि उसका उत्पादन बहुत बढ़ गया है और संसार में जितनी चांदी निकलती है उससे कम-कम १५० प्रतिशत अधिक सोना निकलता है।

‘भारतवर्ष के लिए और बाकी दुनिया के लिए चांदी काफी नहीं है, पर सब के लिए सोने की बहुतायत है इसलिए हमें चाहिए कि हम चांदी जैसी कीमती और भारी चीज को छोड़कर सोना जैसी सस्ती और हलकी चीज का अपनाव।

इससे कई लाभ होंगे—चांदी का मूल्य अपनी मुनासिब जगह पर बना रहेगा और इस देश के वाणिज्य-व्यवसाय का विस्तार अप्रतिहत गति में होता रहेगा।

सोने का इस समय जो बहिष्कार है वह न तो सम्योचित है न युक्तिमग्न है न स्वाभाविक है। सोना इस समय भी यहाँ काफी आता है, पर वह सिक्के के रूप में नहीं चल सकता। सरकार को चाहिए कि वह ग्रीष्म-म शीघ्र चांदी की गद्दी सोने को दे दे जिससे सोने के सिक्कों का चलन हो जाय और इससे जो अनक लाभ हो सकते हैं उनसे यह देश वंचित न रहे।’

इस विषय पर काफी लिखा-पढ़ी हुई पर कोई खास नतीजा न निकला। भारत-सचिव अन्त में महात्मा जाने का राजी हुए कि सावरन या गिन्नी (२०) की दर से सरकारी खजानों में ले ली जायगी। बाद यह दर (१०) कर दी गई। १८६६ में इस विषय के अनुसंधान के लिए एक समिति भी बनी। भारत-सरकार के तत्कालीन अध्यक्ष सोने के सिक्के के पक्ष में थे। समिति ने भी अपनी राय उसके पक्ष में दी। पर यह सब

निष्फल रहा। १८७२ और १८७३ में अथ-सम्बन्ध न किन्तु इस सम्बन्ध में कुछ प्रस्ताव भारत सरकार के सामने रखे। पर सरकार को प्रस्तावित सुधार स्वीकार न हुआ। १८७४ की ७ वीं मई को उसने अपना निर्णय इन शब्दों में प्रकाशित कर दिया कि—

“सोने के सिक्के को चलन में लाने की वाञ्छनीयता पर विचार कर सरकार इस नतीजे पर पहुँची है कि फिलहाल सोने को मूल्य का मान बनाने के लिए कोई भी कारवाई न की जाय।”

फलतः यहाँ चाँदी के रूप का ही बोलबाला बना रहा।

अब और देना की सुनिए। फ्रांस में सोना और चाँदी दोनों के ही सिक्के चलते थे। पर १८५० से पहले वहाँ प्रधानता चाँदी की ही थी। कानूनन एक भाग सोना १५॥ भाग चाँदी के बराबर था, पर १८०३ और १८५० के बीच बाजार दर के अनुसार चाँदी इमसे प्रायः सस्ती पड़ती थी, १५॥ के बजाय प्रायः १६ भाग चाँदी एक भाग सोने के बराबर होती थी। जहाँ दो प्रकार के सिक्के चलते हैं वहाँ सम्ना या घटिया सिक्का तो चलन में रहता है, और महंगा या बढ़िया बाहर निकल जाता है। इसी का अर्थ-‘गाम्ब्र में गाम्ब्र नियम’ कहते हैं क्योंकि सबसे पहले इसपर प्रकाश डालनेवाले सर टॉमस गेम्ब्र नामक अग्रज अथ मन्त्रि थे। फ्रांस की ही बात लीजिए। सोने के सिक्के में काँड़ी भुगतान करता तो वह सिर्फ १५॥ भाग चाँदी पाने का हक्कार होता पर उसी सिक्के को गलाकर वह बाजार में बच देता तो उसे १६ भाग चाँदी मिल जाती। ऐसी अवस्था में यह स्वाभाविक था कि चलन से सोने के सिक्के निकल जाय और उसमें चाँदी के सिक्के की भरमार हो जाय। पर १८५० के बाद गंगा उलटने लगी—अर्थात् चाँदी महंगी और सोना सस्ता हो चला। जो अनुपात कानूनन १ १५॥ था वह अब कुछ समय के लिए प्रायः १ १५ हो चला। सिक्के के रूप में १५॥ भाग चाँदी एक भाग सोने के बराबर होती, पर बाजार में अपने पसन्दी रूप में सिक्के पर १५ भाग का ही एक भाग सोना हो जाता। इस परिवर्तित अवस्था में चलन से चाँदी निकलने लगी और उसकी जगह सोना भरने लगा। फ्रांस में अब यह प्रश्न उठा कि दोनों डाल पकड़ने की—दो मार्गों पर दूर रखने

की क्या जरूरत ? कुछ लोग कहने लग कि इंग्लण्ड की तरह फ्रांस सिर्फ सोने को अपना ले, कुछ इसका विरोध बरत हुए उसकी जगह चादी की सिफारिश करने लग । पर फ्रांस के कर्त्ताघर्त्तान सान का परित्याग करना चाहते थे न चादी का । वे कुछ सशोषण के साथ परम्परा को कायम रखना चाहते थे । चलन से चादी के सिक्के निकले जा रहे थे, इसको रोकन के लिए उन्होने कुछ सिक्को में चादी की मात्रा कम कर दी । फिर १८६५ में फ्रांस बल्जियम स्विटजरलण्ड और इटली की एक सभा इस बात पर विचार करने के लिए हुई कि इन देशों की मुद्रा नीति क्या होनी चाहिए । इसके फलस्वरूप लटिन मुद्रा सघकी स्थापना हुई और आपस में यह तय पाया कि सघ पंद्रह साल तक कायम रहे और जो देश इसका सदस्य हो वे सब-के-सब अपनी मुद्रा नीति एक रखें । नीति यह ठहरी कि साना और चादी दोनों से ही मुद्रा का काम लिया जाय और गौण सिक्को में चादी की मात्रा कम कर दी जाय ताकि किसी के लिए उन्हें गलाकर बचना लाभदायक न हो । सोने और चांदी के बीच का अनुपात वही १ : १५। रखा गया और इस बात की व्यवस्था की गई कि सघ के भीतर एक देश के सिक्के दूसरे देशों में भी चल सकें ।

सघ को कुछ हद तक सफलता जरूर मिली पर यह नहीं कहा जा सकता कि उसकी स्थापना से मुद्रा सम्बन्धी प्रश्न का कोई स्थायी हल हो सका । इसलिए जून १८६७ में फ्रांस के आग्रह से उस प्रश्न पर विचार करने के लिए एक अन्तर्राष्ट्रीय सम्मेलन हुआ । इसमें बीस देश सम्मिलित हुए थे जिनमें क्वत्त दो—इंग्लण्ड और पोर्तुगाल—सोने के अद्वैतवादी उपासक थे । बाकी सब के-सब या तो द्वैतवादी थे, जो सोना और चांदी दोनों से ही मुद्रा का काम लेते थे या जो केवल चांदी का उपासक थे ।

सम्मेलन में इंग्लण्ड को छोड़कर सभी देशों का भुकाव सोने की ओर था और यह निश्चित हुआ कि धीरे धीरे सब-के-सब चांदी को छोड़ सोने को अपना लें और सब एक ही प्रकार के सिक्का का चलन हो । यहाँ तक तो इंग्लण्ड सबके साथ रहा पर अब उसके प्रतिनिधि कहने लग कि हमने जो कुछ कहा है उससे हमारी सरकार पावना नहीं है और वह अपनी मुद्रा प्रणाली में तब तक कोई भी हल पर न करेगा

जब तक उसे विश्वास न हो जाय कि यह सब प्रकार से वाछनीय है । उनका यह नया सुर सुनकर लोगो का उत्साह ठंडा पड़ गया और भागे जो कारवाई हुई उसमें उतनी एकता नजर नहीं आई । सम्मेलन की सकारिशों का तत्काल कोई नतीजा नहीं निकला, पर इसमें सन्देह नहीं कि उभन सोन का जा गुण-मान बिया उसका निवट भविष्य में कितने ही न्या की मुद्रा-नीति पर खामा असर पडा । १८७० में फ्रांस और प्रशिया (जर्मनी) के बीच सग्राम छिडा । इसमें फ्रांस की हार से उसका प्रभाव जाता रहा, और मुद्रा-सम्बन्धी अन्तर्राष्ट्रीय एकता के प्रान को भागे बडानवाला अब कोई दूसरा राष्ट्र न रह गया । मूल्य के मान के रूप में तो सोने को कई दशा ने ग्रहण कर लिया पर अन्तर्राष्ट्रीय सिक्के की मान जहा थी वही रही ।



## चादी का परित्याग

लन्दन में चादी स्टण्ड औंस के हिसाब से विकती है। वहां का स्टण्ड है १००० भाग में ९२५ भाग खालिस चांदी। जिस समय का वत्तात यहां दिया जाता है उस समय इंग्लण्ड की मुद्रा सोने की थी इसलिए कुल दाम सोने में ही समझ जाना चाहिए।

१८७३ से पहले कई साल तक लन्दन में चांदी का दाम ६० पैसे के करीब था। इधर चांदी में कुछ तेजी जरूर आ गई थी, मगर वह इतनी अधिक नहीं थी कि उस विषय महत्वपूर्ण कहा जा सके। लोगो को थोड़ा समय के लिए कुछ चिन्ता जरूर हुई मगर वे शीघ्र ही निश्चिन्त हो गए और उनका यह विश्वास फिर दृढ़ हो चला कि चांदी और सोने के बीच का सम्बन्ध स्थिर या स्थायी बना रहगा।

वास्तव में १८७३ चांदी के इतिहास में एक नया युग का प्रारम्भिक वष था। यह युग मुद्रा-जगत में भूचाल से लान वाला और कई गहन समस्याओ को उपस्थित करने वाला था। इस भूचाल से चांदी और सोने का पुराना सम्बन्ध छिन्नभिन्न-सा हो गया और इसका एक नतीजा यह हुआ कि कई देशों ने चांदी से धराराबर सोने का पल्ला पकड़ लिया।

चांदी अब अधोमुख हो चली—उसका नाम क्रमशः गिरने लगा। या तो यह गिरना पहले ही शुरू हो गया था पर १८७३ में जब दाम ५७½ पैसे हो गया तब संसार का ध्यान इस ओर विशेष रूप से आकर्षित हुआ और इस सम्बन्ध में तरह-तरह के प्रश्न किए जाने लगे। चांदी धराराबर गिरती ही गई। हर पांच साल का औसत लें तो १८७६ और १८९० के बीच उसका दाम यह रहा—

१८७६—८०

५२½ पैसे

१८८१—८५

५०½ पैसे

१८८५—९०

४४½ पैसे

दाम गिरत गिरत १८९३ में ३७½ पैसे तक आ गया था।

चांदी के यों प्रधामूल होत का कारण क्या था ?

इस सम्बन्ध में प्रधान कारण यह बताया जाता है कि फ्रांस पर विजय पाने के बाद जर्मनी ने सान को अपनाकर चांदी को बहिष्कार कर दिया। यह मांग चांदी जब बाजार में बिकने लगी तब दाम का गिरना अनिवार्य हो गया।

जर्मनी को फ्रांस से आ हजाना मिला वह काफी बड़ी रकम थी। इसलिए चांदी की जगह मोत का चलन करना उसके लिए धामान हो गया। उधर उसकी मद्द्गाफाम्पा बड़ी बढ़ी थी ही। गायद उमका यह भी सवाल था कि साना बढप्पन का बिह्न है और कोई भी राष्ट्र तब तक बडों की शर्णो म नहीं आ सकता जब तक वह इस विषय में इगलड की बराबरी नहीं करता। १८७१ में ही उमन इस ओर कम्म बनाया और १८७३ में उसकी स्वाहिंग पूरी हो गई। सोना मिहामन पर धाम्न्ड हो गया और चांदी जहा-नहा जाकर खरीदार टून्न लगी। १८७३ और १८७६ के बीच जर्मनी की ओर से जो चांदी समार में बची गई वह ११ करोड घोम से ऊपर थी।

पर कुछ विद्वाना का मत है कि अगर भारतवष पर हूडी करके भारत-मचिब करोडा रुपए हर साल विलायत न माचत रहत ता जर्मनी का चांदी इन तरह बिकने पर भी बाजार इतना खराब न होता। इस मत के प्रतिपात्कों में मि० माटिन उड घे जा कभी बम्बई के टाइम्स भाव् इहिया के सम्पात्क रह चुके थ। १८९३ में इगल कमेटी की उहान इस विषय पर अपना लिखित वक्तव्य दिया था। उनका कहना था कि जब सन्तन की ओर से इस प्रकार की हूडी की जाती है तब सन्तन के लिए यह जरूरी नहीं रह जाता कि वह चांदी भजकर भुगतान कर—और उतन करोड रुपए की चांदी बिकने और भारतवष जाने से रह जाती है। अगर भारतवष पर इगलड का राजनविक प्रभुत्व न होता और इगलड इतने करोड रुपए इस दंग से हर साल न लेता जाता तो चांदी की वह हालत न होती।

चांदी का दाम गिरता गया और जसा कि ऊपर बह चुके ह वह दाम सान में था । यहा यह प्रश्न उठना स्वाभाविक ह कि चांदी सस्ती हो गई या सोना महंगा हो गया ? वास्तव में दोनो ही बातें हुइ । सोने का उत्पादन इधर कम हो चला था और चांदी का उत्पादन बहुत बढ़ गया था । अमेरिका में पहले चांदी कम—बहुत कम—निकलती थी पर, १८५६ के बाद वहा इसकी पदावार इतनी बढ़ी कि ससार आश्चर्य चकित हा गया और चांदी की समस्या समुक्त राज्यों की राजनीति का एक प्रधान अंग बन गई । १८५६ से १८६० तक वहा कुल चांदी ३०६, ४०० औंस निकली थी । दूसरे पांच वर्षों में निकली २८,१८० ६०० औंस । पर बाद की पदावार को देखते हुए यह भी बहुत कम था । अक्टो १८७६ में वहा २८,८६८,२०० औंस चांदी निकली और १८६२ में ६३ ५०० ००० औंस ।

अमेरिका म उस समय मुद्रा<sup>१</sup> सोने की थी और सोना महंगा होने के कारण दाम गिरते जा रहे थ । इसलिए वहा यह आन्दोलन उठा कि मुद्रा मिहासन पर चांदी को भी बठन का अवसर दिया जाय । इस आन्दोलन के समयक चांदी के उत्पादक और कृपक थे । यह आन्दोलन तो सफल न हो सका पर इसके फलस्वरूप अमेरिका की सरकार बाजार में चांदी को बहुत बडी खराजार बन गई । यहा दो विधाना का उल्लेख आवश्यक है—एक तो 'नाण्ड एलीसन एक्ट' और दूसरा 'गमन एक्ट' । पहला १८७६ पास हुआ और उसके अनुसार सरकार हर साल कम से कम २० ६२५,००० औंस और अधिक मे अधिक ४१ २५० ००० औंस चांदी खरीदने को बाध्य हुई । बारह साल तक सरकार चांदी खरीदती गई पर दाम का गिरना रुका नहीं । १८७८ म जो दाम ५२, ६ पैस था वह १८६० में ४३ ३/४ पस हो गया । इस नाल विधान-द्वारा अमेरिका की सरकार प्रतिवष कम से कम ५४ ०००,००० आंस खरीदन को बाध्य की गई ।

<sup>१</sup>प्राय ऐसे प्रसंग में मुद्रा का व्यवहार स्वयत्तिद्ध मुद्रा के अर्थ में किया गया ह ।

प्रयोग मुद्रा चांदी या तांबे के अलावा कागज की भी हो सकनी थी और हर जगह थी भी ।

चाणी क बाजार में इससे थोड़ा समय के लिए तभी घाई और दाम १४½ पैसे हा गया पर कम फिर अधामुन हान देर न ना और जसा कि ऊपर कहा जा चुका ह दाम गिरत गिरत १८°३ में ३७½ पैसे पर आ गया ।

रूपण में खालिम चाणी थी १६५ ग्रन और जब चाणी का ताम ६० पैसे था तब एक रूपया प्राय दा गिलिंग<sup>१</sup> के बराबर हाना था । यह रूपए का विनिमय मूल्य था । ज्यों-ज्यों चाणी गिरती गई वह विनिमय मूल्य या एकमचेज भी गिरता गया । उदाहरणार्थ —

चाणी का औमत दाम पैसे	औमत एकमचेज पैसे
१८७२—७३	५०½
१८७४—७५	५८½
१८७५—७६	५६½
१८७६—७७	५२½

एकमचेज गिरत से समाज के एक घण की हानि थी और दूसरे का लाभ था ।

जब एक रूपय में दो गिलिंग अथवा २४ पैसे हान थे तब एक रूपए की समता एक पौंड स हाती थी । उस समय किमी का एक पौंड विनायत में होता ना वह बैंक का दवर उसके बन्दक यहा १०) पा सकता था या किमी का एक पौंड वहा दना होता ना वह १०) यहा दवर बन्दक में एक पौंड वहा पा सकता था । जब एकमचेज गिरत गिरत यहा तक आ गया कि एक रूपया सालह पैसे के बराबर होन लगा अब ११) की समता एक पौंड में होन लगी । अब भारत विनायत में एक पौंड जमा हो ता उसके बन्दक १५) यहा स नोटिए और धनर विनायत में एक

<sup>१</sup> १२ पैसे = १ गिलिंग, और २० गिलिंग = १ पौंड स्टलिंग ।

रूपए का वजन था १८० घेन (½ औंस), जिसमें खालिम घादी थी १६५ ग्रन । चाणी के दाम से रूपए का विनिमय-मूल्य निश्चयना साधारण धरगणित का काम था ।

पौंड चुकाना हो तो उसके लिए यहा १५) दामिख कीजिए ।

एक्सचेंज गिरने से इस देश के उत्पादकों का—विशेषकर कृषक समाज का—लाभ था । उनका जो माल विशेष म बिकता उसका दाम पौंड शिलिंग-पेंस में मिलता । फिर इनका रूपण से विनिमय करना पड़ता । अब अगर रूपण का विनिमय मूल्य गिर गया तो पौंड के उतने ही अधिक रूपण हुए जिससे यहा के उत्पादक या किमान विशेष लाभ में रहे ।

हा जिह रूपया विलायत भजना था उनकी बात और थी । एक्सचेंज ज्यो-ज्यों गिरता उह अधिकाधिक रूपण देकर पौंड लेने पड़ते । इस श्रणी में थ श्रिटिंग कर्मचारी जिह अपने परिवार के भरण पोषण के लिए विलायत पने भजन पड़त थ ऐसे व्यापारी या व्यवसायी जिनका कारोबार यहा था पर जा अपन मुनाफ या अपनी पूजी को यहा से उठाकर वहा ले जाना चाहते थ, और भारत सरकार, जिस भारत सचिव की माग पूरी करन के लिए हर साल कई करोड रूपण जुटान पड़ते थ । विलायत स माल मगानवाले भी इसी श्रणा में थ । मान लीजिए उहान एक पौंड का माल मगाया और हिसाब समाया कि १३।) में उह वक से एक पौंड मिल जायगा इसी बीच एक्सचेंज गिर जान म पौंड के पदरह रूपण लगन लग । रहाजा उह उस पौंड के लिए १।।३) अधिक दना पडा ।

भारतवप क अधिकाश निवासी किसान ह और एस विषय में देश के हानि लाभ का निणय उन्हीके हित की दष्टि स होना उचित ह । पर किसान न तो शिक्षित ह और न सगठित । इसलिए जहा उनकी गहरी हानि हाती ह वहां भी उनसे कुछ करते धरते नहीं बनता, और एसी दशा में उनके हित की उपेक्षा होना बिलकुल स्वाभाविक ह । उधर सरकार या अगरेज कर्मचारी या व्यवसायी सुशिक्षित, सुसगठित और सग साव धान रहनवाले ह । उनकी जहा थाड़ी भी हानि हाती ह वे रोने बिल्लान लगते हैं और एसा प्रान्तेलन खडा कर देते ह कि उनके हित की उपेक्षा असम्भव-सी हो जाती ह । रूपण के एक्सचेंज के इतिहास में धार-धार ऐसा ही हुआ है ।

जब चांदी की दर के साथ रुपए की विनिमय-दर गिरने लगी, तो विलायत पसे भेजनेवालों को यह स्थिति बहुत असरने लगी, और उन्होंने इसके खिलाफ हो हल्ला मचाना शुरू कर दिया। किसान तो बगवान थे, और उनकी धार से बोलनेवाले दूसरे लोग भी धाज की अपेक्षा बहुत कम थे।

१८७५ में पार्लमेण्ट की ओर से एक कमेटी इस विषय के अनुसंधान के लिए बठी कि चांदी के दाम गिरने के क्या कारण हैं, और भारत तथा इंग्लण्ड के बीच के एक्सचेंज पर इसका क्या असर पड़ा है। इस कमेटी ने अपनी रिपोर्ट में विषय-विवेचना तो की पर भारतवप की ओर से किसी कारवाई की सिफारिश नहीं की।

उसी साल अग्रेज व्यापारियों की ओर से भारत-सरकार के पास आवेदन पत्र भेजे गए कि कुछ साल के लिए चांदी की टक्काल सब साधारण के लिए बंद कर दी जाय। पर सरकार को यह मजूर न हुआ।

तीन साल बाद स्वयं सरकार ने यह प्रस्ताव किया कि भारतवप चांदी की जगह सोन का अपना ले और सबसाधारण को अपनी चांदी टक्काल में ले जाकर उसके सिक्के ढलवा लेने का जो अधिकार प्राप्त है वह उससे ले लिया जाय— अर्थात् मुद्रा सोन की हो और रुपया उसके प्रतीक का काम करे। 'दोनों के बीच की दर समय-समय पर सरकार निश्चित करती रहे और जब उसमें यथेष्ट स्थिरता आ जाय तब यह दर बराबर के लिए दो शिलिंग कर दी जाय।' उस समय बाजार में एक्सचेंज की दर १ शिलिंग ७ पेंस थी। दो शिलिंगवाले दिन इस समुदाय को अभी तक भूले नहीं थे।

भारत-सरकार के प्रस्ताव पर विचार करने के लिए लन्दन में एक कमेटी बठी, जिसके सन्ध्या में भारत-सचिव की कौंसिल और ब्रिटिश-सरकार दोनों के ही प्रतिनिधि थे। इस कमेटी ने एकमत हो अपनी राय उस प्रस्ताव के विरुद्ध दी। ब्रिटिश-सरकार के अर्थ-विभाग की ओर से इस प्रस्ताव पर जो टिप्पणी की गई थी (नवम्बर २४, १८७९) उसका कुछ अंग उद्धृत करने लायक है —

'भारत-सरकार का प्रस्ताव है कि चांदी के रुपए की इस समय जो

स्थान प्राप्त हुआ वह उससे छीन लिया जाय और उसे प्रतीक-मुद्रा बनाकर उसके और सोने की मुद्रा के बीच एक स्थायी सम्बन्ध सरकारी आदेश से स्थापित कर दिया जाय ।

‘पर यह व्यवस्था स्वाभाविक न होकर कृत्रिम होगी और इसकी सफलता के लिए सरकारी हस्तक्षेप अनिवार्य होगा । इस प्रकार के हस्तक्षेप से बहुत कुछ घुसाई होने का डर है ।

‘हो सकता है कि इस प्रकार रुपए की दर बाँध देने से भारत सरकार, अग्रज कमचारी और अग्रज व्यवसायी अपनी अपनी चिन्ता से मुक्त हो जाय और फायदे में रहे, पर आखिर इसका दाम चुकाना पड़गा भारत के किसानों को जिनके कज का बोझ (गहले इत्यादि का दाम गिर जान के कारण) और भी भारी हो जायगा और जिन्हें लगान या कर चुकाने के लिए (उपज के रूप में) आज जितना देना पड़ता है उससे कहीं अधिक देना पड़ेगा ।

भारत सचिव न दिसम्बर १८७९ में भारत सरकार को लिखा कि इस परिवर्तन की मजूरी नहीं दी जा सकती ।

लटिन मुद्रा सघ के सदस्य-देशों को अपनी हितरक्षा के लिए अब दूसरे ही प्रकार की कारवाई करनी पड़ी । चलन से सोना निकला जा रहा था, और उसकी जगह सस्ती चादी भरती जा रही थी । चूँकि उनके यहाँ चलन में चादी के सिक्कों का अनुपात बहुत बड़ा हुआ था वे अपनी मुद्रा प्रणाली में चादी का पूरा बहिष्कार करने में असमर्थ थे । पर आग के लिए उन्होंने चादी की टकसाल का दरवाजा सवसाधारण के लिए बन्द कर दिया । १८८० तक यूरोप में कोई भी देश ऐसा न रह गया था जहाँ सवसाधारण को यह अधिकार हो कि चादी टकसाल में ले जाकर उसके सिक्के ढलवा सके । मूल्य के मान के सिंहासन पर सिर्फ चीन और भारतवर्ष में चादी रह गई थी ।

कमेटी-का-प्रेम कमीशन, इनका सिलसिला बना ही रहा । दो अन्त-राष्ट्रीय सम्मेलन फिर पेरिस में हुए, और दोनों का उद्देश्य यही था कि चादी में स्थिरता लाने के लिए सब देशों की ओर से कुछ किया जाय ।

य एकमत न हो सके, इस कारण परिस्थिति में कोई अन्तर न पड़ा ।

१८७८-७९ में १८८४ तक चांदी ५१ पैसे के आसपास बनी रही, और फलत एक्मचेंज भी स्थिर रहा —

	चांदी का औसत दाम पैसे	औसत एक्मचेंज पैसे
१८७८—७९	५२ <sup>१</sup> / <sub>२</sub>	१९ ७६१
१८७९—८०	५१ <sup>३</sup> / <sub>४</sub>	१९ ९६१
१८८०—८१	५१ <sup>३</sup> / <sub>४</sub>	१९ ९४६
१८८१—८२	५१ <sup>३</sup> / <sub>४</sub>	१९ ८०४
१८८२—८३	५१ <sup>५</sup> / <sub>८</sub>	१९ ५२५
१८८३—८४	५० <sup>१</sup> / <sub>२</sub>	१९ ५३६
१८८४—८५	५० <sup>५</sup> / <sub>८</sub>	१९ ३०८

पर १८८६ में चांदी फिर नीचे गिरी और भारत-सरकार ने फिर अपनी कठिनाईयां का उल्लेख करते हुए एक्मचेंज बाधन को उद्घाटन में एक स्कीम ऊपरवाला के सामने रखा। पर इस बार भी उसका प्रयत्न निष्फल रहा, ऊपरवाला ने उसकी प्रस्ताव को नामजूर कर लिया। उन्होंने भारत-सरकार के प्रस्ताव को आलोचना करते हुए लिखा

‘इसमें मनेह नहीं कि अग्रज कर्मचारी-जम लोगो को इससे कुछ लाभ पहुंचेगा, पर साथ ही इसमें भारतीय किसान या करगता की बड़ी हानि होगी। चांदी का दाम गिरने से इधर भारतवर्ष के वाणिज्य-व्यवसाय की बड़ी उन्नति हुई है और ऐसा जान पड़ता है कि जनता को हानि की अपेक्षा लाभ अधिक हुआ है। ऐसी हालत में भारत सरकार का हस्तगत करके रुपए को वृत्तिसम मूल्य देना बहुत प्रायत्तिजनक है। हम इस प्रश्न पर केवल सरकार या उनके अग्रज कर्मचारियों के हित या सुविधा की दृष्टि से विचार नहीं कर सकते, हमें सब में अधिक तो यह देखना और विचारना होगा कि चांदी के गिरने का भारतीय जनता पर—उसकी व्यापारिक और औद्योगिक व्यवस्था पर—क्या असर पड़ा है।

१८८६ में एक शाही कमीशन, जिसके अध्यक्ष नाइ हासन थे चांदी और सोने के मन्बन्ध की आलोचना के लिए बैठा। इस कमीशन के १२ सदस्यों में एक सर इविड बार्बर थे, जो भारत-सरकार के प्रतिनिधि बहू



जा सकते थे। पर यह कमीशन भी एकमत न हो सका। छ मन्त्र्या, द्रत मुद्रा प्रणाली के पक्ष में राय दी पर बाकी छ की राय यह ठहरी कि द्रत (सोना या चादी) की जगह द्रत (सोना और चादी दोनों) की ग्रहण करना अधकार में कून के समान खतरनाक होगा। इस मत म के कारण कुछ भी न हो सका। भारत सरकार ने आगा की थी कि अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन से द्रत प्रणाली की स्थापना और चानी के प्रश्न का हल होजायगा पर वह आशा निराशा में परिणत हो गई।

उपर चानी नीचे गिरती ही गई और उसके साथ-साथ हमारी हुणरी की तर भी —

	चादा का औसत नाम	औसत अवसर्जन
	पस	पेंस
१८८५—८६	४८ $\frac{1}{2}$	१० २५४
१८८६—८७	४५ $\frac{3}{4}$	१७ ४४१
१८८७—८८	४४ $\frac{3}{4}$	१६ ८९८
१८८८—८९	४२ $\frac{1}{2}$	१६ ३७६
१८८९—९०	४२ $\frac{1}{2}$	१६ ५६६
१८ ० ९१	६८ $\frac{1}{2}$	१८ ०८६
१८९१—९२	४५ $\frac{1}{2}$	१६ ७३३
१८९२—९३	३९ $\frac{1}{2}$	१४ ९८५
१८९३—९४	३५ $\frac{1}{2}$	१४ ५४७

१८९१ में मुनन में आया कि अमेरिका चानी की समस्या पर विचार करने के लिए एक अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन का आयोजन कर रहा है। भाग्यवश में किसी को इस सम्मेलन में विषय आगा नहीं थी। यहाँ सरकार और अग्रज व्यवसायी यह सोचन विचारने लग कि अगर यह सम्मेलन भी पहले सम्मेलनों की तरह असफल रहा तो हमारा कतब क्या होगा। भारत सरकार ने इस सम्बन्ध में भारत-सचिव को लिखा (जन २१ १८९२) कि —

‘अगर यह स्पष्ट हो गया कि इस सम्मेलन में कोई सन्तोषजनक व्यवस्था होन वाली नहीं है, और यह भी स्पष्ट हो गया कि भारतवर्ष

घोर अमेरिका के बीच काई सम्झौता नहीं हो सकता ना हमारा प्रस्ताव है कि सब साधारण के लिए चांगी को एकमान का एकवाजी बन्द कर दिया जाय और चांगी का जगत् मान का गठानगी करने का नकारा को जाय ।'

सोने और चांगी के बीच का सम्झौता क्या है इस विषय में अपनी गप जोड़ते करते हुए भारत-सरकार ने लिखा कि एकमेव का एक समीचन या दर के धाम-धाम रचना वाला है जो नए व्यवस्था रक्त समय वाजार में है ।

२१ जन को लिखते हुए भारत सरकार ने भारत-मंत्रियों को विन्यास लिखा कि लाइसेंस चांगी के परिष्कार और मान के अंगीकार के संबंध में अनुसूत है और व्यापारिक में हम इस काम में एक प्रकार की उचित सहायता मिल सकता है ।

वास्तव में यह अचिन्त और असाध्य था । भारतवासियों के जो मन्त्र प्रतिनिधि हो सकते थे वे चांगी के परिष्कार के घोर विरोध में बसोंगे वे जानते थे कि सान की धाड़ में एक वसपानी एकमेव का ऊका करना चांत्त था । ब्रिटिश व्यवसायी भी जो रना में विप्रसन्न थे । एक उल्लेख सरकार के साथ था और उम्मेद नता था महीनत मक्की कम्पनी के मि० जेम्स मके जो बाद में बाद इवकेप के नाम में मन्सूर हुए । इसका धार में इन्वियन करेन्सी एमोमियशन' नाम में एक मस्या घडा की गई और पालमेष्ट के पास भजन के लिए एक आवेदनपत्र पर उनके प्रवारेण लोगों के दस्तखत कराए जाने लगे । दूसरा दल चांगी के परिष्कार के प्रस्ताव का विरोध था और इसमें रासी वसम याहम और हेंडमन, एण्डर्यूल गा वनेस-जस प्रतिष्ठित फर्म सम्मिलित थे । इन लोगों का धार में ६ फरवरी १८६३ को गवर्नर-जनरल के पास एक आवेदन पत्र भजा गया । उसमें कहा गया था —

'हम साग बनकन के व्यवसाय के बहुत बड़े अंग के प्रतिनिधि हैं और प्रान्त भर के उद्योग और हमारे व्यवसायी इस विषय में हमारे साथ हैं ।

'हम लोगों का मत है कि करेन्सी एमोमियशन एक्ट का विनिमय

मूल्य ऊचा कराने और ठहराने के लिए जो प्रस्ताव कर रहा है वह हानि कारक है जिससे सरकार की अपनी साख और इस देश के वाणिज्य व्यवसाय को खतरा है।

हम लोग इस बात के पक्षपाती नहीं कि रपए का मूल्य डावाडोल बना रहे या वह बराबर नीचे गिरता जाय पर हमारे विचार में उसे भी कही अधिक आपत्तिजनक है उसको पौंड गिलिंग-पस में कृत्रिम मूल्य प्रदान करना। हम यह कहते बिना नहीं रह सकते कि करेसी एसोसियेशन का बताया हुआ इलाज किया गया तो बीमारी और भी बढ़ जायगी और तरटू तरहू के उपद्रव होन लगेंगे।

'हम लोग अनुभवी व्यापारी होन का दावा कर सकते हैं और इस हिसियत से हम करेसी एसोसियेशन के अध्यक्ष के इस कथन का खण्डन करना चाहते हैं कि चादो के गिरन से इस देश के व्यापार को बड़ा धक्का लगा है और यहाँ एसी मन्गी आ गई है जसी पहले कभी नहीं। वास्तव में जो मन्गी है उसके कारण और ही है।

'हम जानते हैं कि सरकार की आर्थिक स्थिति चादो या एक्सचेंज के गिरन से चिंताजनक हो गई है—और उसके जिन कमचारियों को इसके नुकसान पहुँचा है उनसे हमारी पूरी सहानुभूति भी है। पर स्थिति का सुधारने के लिए न तो यह आवश्यक है न वाञ्छनीय, कि हम अपनी मुद्रा प्रणाली को ही—जो हमारे वाणिज्य-व्यवसाय का आधार है और जिनमें इस देश की धन सम्पदा इतनी बड़ी है—बिलकुल खण्ड दें।'

ऊपर जिन फर्मों के नाम लिख गए हैं उनके अलावा इस आवेदनपत्र पर क्लिवलैंड कम्पनी हाग्वेग हाथार्ड बैंकिंग कार्पोरेशन ल्याल माशल, डाक्टवियस स्टील बामर लॉरी जम्स डपस, डविड समून एंड कम्पनी आदि के भी हस्ताक्षर हैं।

भारतीय मस्याभा की ओर से भी एकमात्र बन्द धरन के प्रस्ताव का विरोध किया गया। कांग्रेस के मत का उल्लेख हम पीछे करेंगे यहाँ इतना ही कहना पर्याप्त समझते हैं कि कलकत्ता की इण्डियन एसोसियेशन और पश्चिम भारत का प्रमुख मस्या इण्डियन एसोसियेशन ने भी उस प्रस्ताव का ओर विरोध किया। इण्डियन एसोसियेशन ने अपने

वस्तुव्य में ठीक ही कहा —

भारत-सरकार की जो प्राथिक स्थिति हा रही है उसे सुधारन का सही तरीका ह फौजी खर्च में कमी करना जो रकम इंग्लण्ड में खर्च की जाती ह उसको घटाना अथवा कमचारियों की संख्या कम करके उनकी जगह भारतवासियों का भरती करना और—आवश्यक हा ता—एसी विन्धी वस्तुओं पर हलका-मा कर लगा रना जा यहा न तो जनता की आवश्यकताओं की पूर्ति क लिए आता ह न इस दंग क उद्योग घघों की तरक्की के लिए ।

वास्तव में सरकारी कमचारा बरन्मी एम्प्लियमन्ट में गिम्ण्टी का काम के रह थे । पर व उनमें से ही मन्नुष्ट न हुए । उनकी आर में और भी जिनने उपायों में आन्तानन किया जा सकता था किया गया । २१ जनवरी १८८३ का एक स्पुन्गन बड लाट (ना लन्सडाउन) में मा मिला । उनक माय सरकार का हमर्ी जाहिर करत हुए बड लाट न यह सूचित किया कि यद्यपि माग विषय उम समय विचारार्थित था तथापि भारत सचिव की आन्तानुमार यह निश्चिन हा चुका था कि फिम हाल जा कमचारी छुट्टी लकर विलायत जायग उनका बतन और बना १६३ पेंस क रट में मिलेगा । बाजार-र उम समय १४३३ पेंस था ।

सरकार की हमर्ी और भी आग गई । टकमाल बन्द हो जान क बा उमन गारे और अधगा कमचारियों को एक खाम तरह का भत्ता रना मन्नु किया जा एवमचज गिरने क कारण होनेवाली क्षति का पूर्ति क लिए था । यह भत्ता कद माल तक मिलता रहा । बाजार में वास्तविक एक्मवेंज रेट और १८ पेंस के बीच जो फक हाता वह ठह सरकार का और से मिल जाना जिनमें व माल में १००० पौंड तक विनायन भज सके । जिहें इनना न भजना पडता व भी भत्ता पाने क हकदार हात । हर माल इममें सरकार का एक बराड स्पण से अधिक खर्च होता रहा । कायम बराबर इस भन का विरोध करती रही ।

१ सितम्बर १८८२ का भारत सरकार क प्रस्तावों पर विचार करने क लिए एक कर्मी-बमेगी की नियुक्ति हुई । इसके अध्यक्ष थे नाड हंगन (जा उम समय लाड आन्तानर थे) और इसके बाकी मन्त्रों में

मि० कटनी सर आयर गाडले, जनरल स्ट्राची प्राप्ति थ ।

इसी बीच वह अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन भी बल्जियम की राजधानी म बठा । पर जिस राह और सम्मेलन जा चुक थ उसी राह यह सम्मेलन भो गया । इसकी असफलता का एक नतीजा यह हुआ कि चादी की टक साल बढ़ कराने वाले के आन्दोलन में और भी बल आ गया ।

इधर हंगल कमेटी की बैठकें लगन म होती रही और गवाहिया गुजरती रही । उन गवाहो म एक मात्र भारतवासी प्रांत स्मरणीय दाग भाई नौरोजी थ, और उहोन भारत सरकार के प्रस्ताव का विरोध ही किया । पर उनका साथ देने वाले कई अगरेज गवाह भी थ जिनम रासी ब्रन्स व मि० रासी मि० राबट ग्रिफिन ( जो वर्षों बोड आव ट्रड में बड कमचारी रह चुके थ ) यूनिवर्सल बैंक आव स्काटलण्ड के जनरल मनजर मि० चार्ल्स गडनर मि० विलियम फीलर सर फ्रांक फाब्र एडम प्रादि मुख्य थ ।

कमेटी की रिपोर्ट मर् १८९३ के अन्त में तयार हुई । उसका निबोध यही था कि भारतवर्ष चांदी का परित्याग कर दे—सबसाधारण के लिए टकसाल का दरवाजा बंद कर दिया जाय और हुण्डी की दर फिलहाल १६ पेंस कर दी जाय ।

गरज यह कि भारत सरकार का प्रस्ताव स्वीकार कर लिया गया । कमेटी न उसमें हेरफेर किया तो इतना ही कि हुण्डी की दर १८ पस न करके (यह हंग सरकार की ओर स सुझाई गई थी) उमन फिलहाल १६ पस कर देने की सिफारिश का । भारत सरकार न बहा था और कमेटी ने भी इसको दोहराया कि चांदी का परित्याग सोन के ग्रहण के उद्देश से ही किया जा रहा था ।

२० जून को भारत सचिव न तार-द्वारा भारत सरकार को टकसाल बन्द करने और नई व्यवस्था जारी करने के लिए मुनासिब कारवाई करने की इजाजत दी ।

२६ जून का बड साट की विधान सभा में इस विषय स सम्बंध रखन वाला वानून पास हुआ और उसी दम चांदी सिहामनबन्धन कर दी गई । सबसाधारण के लिए अब टकसाल का दरवाजा खुला न रहा—वहा चांदी

क मिचके डलवान का अविचार अब कवन सरकार को रह गया । साथ ही साथ इस बात की भी व्यवस्था का गई कि टकमान में जो कोई १६ पेंस प्रधान ७/२२४८ ग्रन गार्सिम माना दामिल कर उस वस्तु में एक रुपया मिल जाय ।

हाल कमटी ने जिम व्यवस्था का सिफारिश की था और जो अब कानूनन जारी की गई वह पाठ समय के लिए था । विचार यह था कि इसका अनुभव ही ज्ञान पर म्यायी व्यवस्था की जाय । एकमचेत्र प्रधान हुष्नी का तर क सम्बन्ध में यह बात स्वाम नीर से नाट कर लनी चाहिए । हाल कमटी ने स्पष्ट गणना में कहा था कि अगर परिस्थिति अनुकूल हो तो यह दर बढ़ाई जा सकता है । सरकार की ओर से विधान-सभा में कहा गया कि चार्ज के रूपए और मान के बाब जो सम्बन्ध म्यापित किया जा रहा है उसको अन्तिम निणय नही समझना चाहिए ।

कायम ने प्रमत्त-व-द्वारा इस बात पर जार किया था कि हाल कमटी की जो सिफारिश है वह सर्वसाधारण के मामलें रखी जाय और किसी भी प्रकार की कारवाई में पहले उस पर पूरी तरह से विचार हो ल । पर हमारा सरकार उनल समय के लिए भी ठहरन वाली न था ।

अब पण और विषय का स्थान मुनिए —

बार-बार सरकार की ओर से यह राना राया जाता था कि चार्ज गिन्न से हुष्नी की तर गिन्नी है और इसका नतीजा यह होता है कि जो रकम हमें विनायन भजनी जानी है उसके लिए महा अधिकाधिक रुपए जुगान पडते हैं, हमारा मासिक सकट बराबर बना ही रहना है और हम कभी यह निश्चयपूर्वक नही जान सकते कि हमारी परिस्थिति अब क्या रहगी ।

इसका जवाब यह था —

वास्तव में हमें इंग्लण्ड का जो कुछ देना पडता था उससे हमारा रक्तावण-मा होता था और अगर हम पराधान न होत तो तेन-स्ने की यह नोबत ही न जानी । उस जमान में यह मासाना रकम डड करोड पीण्ड से ज्यादा था और अगर एकमचेत्र की दर १६ पेंस पकडी जाय, तो उसके २२॥ कराट रूपए में अधिक हावे थ । इसमें बिजना ही एसी रकम

गामिल थी जो हम पर सिर्फ इसलिए लाद दी गई थी कि हम बचस थ, और इंग्लण्ड मनमानी जोर जुब्तुस्ती कर सकता था। अफगानिस्तान की तो बात ही क्या भवीसीनिया की लडाई का खच भी हमसे वसूल किया गया। स्पालीपुलाक-याय इससे ही समझ लीजिए कि क्या भवस्था थी। सबसे पहले देखन की बात तो यह थी कि भारतवष को जो कुछ देना पडता था उसमें यायत कहा तक कमी की जा सकती थी। फौजी खच का एक बडा हिस्सा इंग्लण्ड को देना चाहिए था क्योंकि जो फौज यहां थी वह कवल भारतवष की रक्षा के लिए नहीं बल्कि ब्रिटिश साम्राज्य मात्र की रक्षा और भनाई के लिए। मि० पिफिन के मनानुसार, भारत सरकार का आर्थिक संकट टालन या दूर करन के लिए मुद्रा प्रणाली में एस परिवतन की कोई आवश्यकता नहीं थी -- आवश्यकता थी तो खच घटान की भारतवष का बोझ हलका करन की। 'याय का तकाजा यह था कि भारत के खच में करीब छ करोड की कमी कर दी जाय और उसके बोझ का यह हिस्सा इंग्लण्ड अपन ऊपर ले ले।'

एक्सचेंज गिरन से सरकार की कठिनाई जरूर बन जाती मगर उस हद तक नहीं जो सरकारी बयानों में ली जाती। इस विषय में यह भी याद रखन की बात है कि चादी सस्ती होन और एक्सचेंज गिरन से हमार एक्सपोट (निर्यात) व्यापार और उद्योग घाघा की बड़ी उन्नति हुई और इससे सरकार की आमदनी भी बनी। १८७३-७४ में भारत-सरकार की आय चालीस करोड के लगभग थी। पर १८९१-९२ में यह ५० करोड से ऊपर पहुच गई थी। जो रकम विलायत भजनी पडती उसमें थोड़ी सी बढि हो गई तो उसके लिए चाणी काफी बलनाम की गई। पर उसी चाणी न दूमरी बार करोडों की आमदनी कर दी तो उस इसका कुछ भाग नहीं मिला। श्री रमेणचन्द्र दत्त न अपन प्रसिद्ध ग्रथ *Economic History of India* (भारतवर्ष का आर्थिक इतिहास) में लिखा है कि चाणी और एक्सचेंज गिरन से जब चावल और गहूँ में तजी घाती तब सेटलमण्ट (बन्नावस्तु) अफगर जमीन का लगान या माल बडा गेते और जब वाणिज्य-यापार बढन से व्यवसायियों की आय में बढि होनी तब इनकम टक्स अफगर टक्स बढ़ाकर अपन कतब्य का पासन

करत—घाटी के गिरने से सरकार का न कोई खास बठिनाई थी न नुकसान । १८११-१२ में समाप्त हानिवाले २८ वर्षों में व्यय से आय प्रायः ५ करोड़ अधिक रही । यद्यपि इस बात का प्रमाण है कि भारत-सरकार का आर्थिक सकट जितना कार्यात्मक था उतना वास्तविक नहीं ।

हिमाचल किताब में जो हानि लिखाई जाती वह २८ वर्षों के आधार पर कि अगर इतना खर्च ही मिलता या २४ वर्षों का खर्च ही विलायत भेजा जा सकता तो सरकार का खर्च इतना कम जगता पड़ता । उदाहरण के लिए १८६२-६३ में एकमचज के कारण हानिवाली हानि प्रायः ६८ करोड़ लिखाई गई थी—अर्थात् अगर ही मिलता ही दर आय में हानि तो उन साल इतने कम हुए ही भारत-सचिव का दृष्टियों का भ्रमना हुआ जाना । पर इस मिलान में क्या यह याद रखनी थी कि दो मिलानवाले जमानों में भारत-सचिव की मांग धारा से वहीं कम थी और सरकार के दूसरे खर्च में इस बड़े खर्च पर न ही ' भारत-सरकार की आर्थिक बठिनाई या सकट के कारण वास्तविकता थी या ना उसके लिए खादा या एकमचज नहीं बल्कि और ही बात जिम्मेवार थी ।

सरकार को हर जमान में अपने खर्च का आय के भीतर रखना चाहिए था । तब पाव पमारिए जनी नावा और । पर इस कठिन का समझ पालन न हुआ और वह लापरवाही के साथ हर तरफ पर पमारनी ही गई । सरकारी लक्ष्य में समाधान की तरह बढ़ाया गया जोड़ी तकत बनाने में अघातुय खर्च किया गया । पर अब आर्थिक बठिनाई उपस्थित हुई तब इसके लिए राशी ठहराई गई चाँही और खर्च का गिरा हुआ विनिमय मूल्य ।

घटा भंग के लिए यह माना जाया कि बिना कर्म-वृद्धि किए सरकार की आवश्यकता की पूर्ति नहीं हो सकती थी ता भी कर्म पढ़ा कि सरकार का जो करना चाहिए था उस काम को वह तयार न थी । विन्ती वस्तुना पर उस समय जो कर या ड्यूटी थी वह नहीं के बराबर थी । १८७५ में यह ड्यूटी ५ प्रतिशत कर दी गई थी । कर्ष के लिए साम रिषायत था । १८८० में नमक और शराब का छान बाकी चीजों पर से ड्यूटी हटा ली गई और इसके बाद कई साल तक बिदेसी



वस्तुएँ यहाँ बिना किसी प्रकार का कर लिए जाती रही। इनमें प्रधानतः कपड़ों का था। हशल कमेश ने अपनी रिपोर्ट में लिखा था कि आय वृद्धि के लिए अगर विदेशी वस्तुओं पर फिर से ड्यूटी लगा दी जाय तो इसका बहुत बड़ा विरोध होगा—बढ़ा तो यह जाता है कि यह काम लाकप्रिय होगा। पर कठिनाई यह है कि अभी हाल में ही रुपये पर भूँठी हटा ली गई है और अगर वह फिर से लगा दी गई तो इंग्लैंड में इसका बड़ा विरोध होगा। इंग्लैंड का विरोध स्वाभाविक था। उसका उद्देश्य था मचस्टर की मिला को अधिक-से अधिक सम्पन्न रखना। बार-बार उनकी भलाई की बातों पर भारत के हित का बलिदान किया गया। अगर भारत स्वतंत्र होना, और चाहे कि गिरन से सचमुच उसे कोई कठिनाई होनी तो वह इम्प्राट ड्यूटी बढ़ाकर बढ़ा ही आसानी से उस समस्या को हल कर सकता था।

यह हुई सरकार के सकेट का बात। अब अग्रज कमचारियों की कठिनाइयों का लीजिए।

कहने की आवश्यकता नहीं कि इन्हीं समयों में ऊँच से ऊँच वतन और ऊँच से ऊँच भत्त मिलते थे। कपिटल नामक पत्र ने अपने १२ जुलाई १८९२ के अंक में बहुत ठीक लिखा था कि 'अगर एक गाँधी कमीशन महा आकर जांच करे तो यह बात का बात में स्पष्ट हो जायगा कि जो सरकार में कामचारा सबसे ज्यादा गार जरूर मचा रहे हैं वे इम्प्राट पान के सबसे कम हकदार हैं। यहाँ तो जरूरत इस बात की है कि वेतन और भत्त नए तौर से मुकरर किए जाय क्योंकि कुछ तो बहुत ही कम पाते हैं और कुछ बहुत ही ज्यादा। सरकार में और कोई देण नहीं जहाँ वेतन इतने ऊँच हैं और चीज इतनी सस्ती। यह ध्यान में रखने की बात है कि यूरोप में १८८३ और १८९३ के बीच सोना महंगा होने के कारण दाम काफी नाब गिर गए थे। स्वयं का नहर खुलने से यूरोप का रस्ता पहले से छोटा हो गया था और ध्यान जान में सब कम पड़ता था। इससे भारतवर्ष में रेलों का जाल फैलता जा रहा था और व्यापारिक प्रतिभागिता बढ़ती जा रहा थी। ये सब कारण विदेशी वस्तुओं के दामों का

था, पर फिर भी बाहर से आनेवाली चीजें १८९२ में १८७३ का अपना समीचीनी। लन्दन के स्टेटिस्त्स नामक पत्र ने इन कमचारियों की मांग पर टीका करते हुए लिखा था—

‘इनका कहना है कि वतन का जो हिस्सा हमें यूरोप से आनेवाला चीजों पर खर्च करना पड़ता है उसमें मकान ३८ की वृद्धि हुई है। शायद इनका खयाल है कि यूरोप में रहनेवाले भारत की चीजों से बिलकुल अनभिज्ञ हैं। यह खयाल न आता कि यही बात कहने की घटना न करते। असलियत तो यह है कि यह वृद्धि नहीं बराबर हुई है।

फिर इनका कहना है कि वतन का जो हिस्सा हमें बिलायन भेजना पड़ता है उसमें भी नुकसान उठाना पड़ता है। पर अगर नुकसान ही भी तो भारत सरकार का इमम क्या दोष? वह तो कहेगी और बहुत ठीक कहेगी कि हमने तुम लोगों को जो कुछ दान का वाग किया था वह दे दिया। उसका जितना कमचारी है उनका वतन वह रूपों में चुका देती है। चाही कि गिरन से रूपए का एकमचेज-पर गिरता है तो वह क्या करे उसका लिए न वह जिम्मेदार है न वह उसका रोके रख सकता है।

चादी के विरुद्ध आंग्लो-भारतवादी का कहना था कि मौजूदा हालत में एकमचेज अस्थिर डावाडोल रहना है और यह व्यापार के माग में बाधक का काम करता है। पर हमने कहेगी कि सामान कई ऐसे उपाय हूँ पण किए गए जो और ही बात मानिल करनेवाले थे। अतः हम रिका के आस्ट्रिया आदि देशों के साथ—एकमचेज में अस्थिरता हालत हुए भी इन्फ्लेण्ड बड़े पैमाने पर व्यापार कर सका था और जितना यह उपाहरण पण किए उनका पूछना था कि जब एकमचेज की घटावदी यहाँ बाधक नहीं हुई तब क्या कारण है कि सिर्फ भारतवर्ष में हागी? रासी प्रंस नामक जर्मन-विश्वान कम्पनी के मानिक मि० स्टुपन रासी ने कमेटी ने पूछा कि इधर रूपए का दर में जो घटावदी हुई है, उससे आपकी अपन व्यापार में कोई नुकसान उठाना पड़ी है या नहीं? मि० रासी ने जवाब दिया कि नहीं कोई भी नहीं। उन्होंने यह तरीका भी बताया कि व्यापारी लोग जागिस से बचने के लिए काम में सावधान

घोर घाज भी लाते ह । मान लीजिए, हमें दो महीन बाद कुछ डालरो की जरूरत पड़गी । एक्सचेंज स्थिर होन कारण कोई नहीं कह सकता कि उन समय उन डालरो क लिए हम कितन रुपए देन पड़ेंग । पर हम इस विषय म निश्चित हो जाना चाहते ह । ऐसी अवस्था म हम फार बड घर्षात प्राग मिलनवाले डालर घाज ही बक से खरीद सग घोर समय घान पर उन्हें देकर भुगतान कर दग । अगर बक से प्राग क डालर मिलन म स्थित हुई तो हम सम्भवत यहा कुछ माल खरीत्कर अमेरिका में बच दग जिसमे हमें वहा समय पर डालर मिल जाय ।

सब पूछा जाय तो मुद्रा या विनिमय का प्रश्न सरकार या उनके कमचारिया या व्यापारियो का प्रश्न न हाकर इस देग की जनता का—यहा क कराडा किसान का—प्रश्न था । इस कम्न की कसौटी यही थी कि चादी या एक्सचेंज क गिरन स उस जनता का—उन करोडा किसानों का—लाभ हुआ ह या हानि ? अगर किमान अस उत्पात्क उससे लाभ स्थित हुए थ ता इससे यह सिद्ध था कि चादी हमारे देश के लिए हितकर थी और इसके सामन यह बात कोई महत्व पान लायक नहीं थी कि अगरेज कमचारी या व्यापारा उससे घाडी बहुत हानि उठा चुक थ और उससे अस तुष्ट थ ।

ऊपर कहा जा चुका ह कि यूरोप म दाम गिरते आ रहे थ । माना महंगा ही रहा था इसलिए जो दाम मान म दिए जात थ वे कम हो रहे थ । भारतवर्ष म चादी न होती घोर चादी का बाजार इस तरह न गिरता ता यहा भी दामा की यही गति होती । इससे किमान या दूसर उत्पात्क बड घाट में रहत । किसान को लगान या कर या मूद के रूप म जो कुछ देना पड़ता ह वह तक निश्चिन रकम हाती ह । यह रकम वह देता ह घपन गाड पसीन की कमाई से—घपन खत का घन्न या गन्ना बचकर । इसका दाम जितना ही अधिक मिले, उसके हक म उतना ही अच्छा । मान लीजिए कि जिस समय यूरोप में दाम गिर रहे थ उस समय हमारे रुपए क विनिमय मूल्य में स्थिरता थी ता उस हानत में हमारे यहा भी दाम उसा हिसाब स गिरत और हमारे किसान बड संकट म पड जात । पर हुआ यह कि चाँदी सस्ती हो बली—रुपए का विनि

मय मूल्य भी गिरता था—और द्रव्य समता हान का अर्थ है दामों का उठना, इसलिए दाम (सोने के गिरने पर भी) यहाँ ऊपर उठ रहे। साना महंगा होकर हमारे किसानों पर आघात करने जा रहा था पर चांदी न सस्ती होकर और बीच में पड़कर, उनको बचा लिया। इंग्लैंड में जिन्सा का दाम जहाँ १८६३ में १०० था वहाँ गिरते गिरते १८६३ में ६१ रह गया था। भारत में गल्ले का दाम जहाँ १८६३ में १०० था वहाँ १८९३ में १२९ था। अगर यहाँ चाँदी का रूपया न हाना और इसका मूल्य न गिरता तो यहाँ भी दाम ऊपर जान व बजाय इंग्लैंड की तरह नीचे गिरते।

विदेशी व्यापार के आकड़ भी यही सिद्ध करते हैं कि चांदी से हमारा लाभ हा हुआ।

१८७३—७४

निर्यात (एक्सपोर्ट)	५४ ९६ ०७ ८६० ६०
आयात (इम्पोर्ट)	३१ ६२,८४ ९७० ८०
आयात से निर्यात अधिक	२३ २४,२२ ८९० ८०

१८९२—९३

निर्यात (एक्सपोर्ट)	१०६ ५१ ५१ ६३० ६०
आयात (इम्पोर्ट)	६२ ६१ ६० ८३० ६०
आयात से निर्यात अधिक	४३,८० ६८ १०० ६०

भारतवर्ष में इम्पोर्ट (आयात) एक्सपोर्ट (निर्यात) पर निर्भर करता है। जब किसान अपना गल्ला बचकर ज्यादा रूपए पाने हैं तब वे विदेशी वस्तुओं पर भी ज्यादा खर्च करते हैं। एक्सचेंज गिरते रहने से इम्पोर्ट बहुत कम हो जाना चाँहिए था, पर असमिधन में यह प्राय हुआ हो गया। फिर भी कहीं-कहीं एसोसिएशन वाले समुह नहीं थे और यही कहते जाते थे कि व्यापार चौपट हो गया।

नीचा एक्सचेंज भारतवर्ष के लिए लाभदायक है या नहीं? इस प्रश्न का उत्तर देते हुए बलकृष्ण की मंगलूर कम्पनी एण्ड यूनिवर्सल मालिक मि० जॉर्ज यूस ने ( जो इण्डियन नेशनल बैंक के चीफ मैनेजिंग के प्रेसिडेंट हुए थे ) कहा था कि—

'हा यह अवश्य लाभदायक है। मैं यह उत्तर गहरी समीक्ष परीक्षा के बाद दे रहा हूँ।'

मि० यून का कहना था कि ब्रिटिश पूंजीपति यहां के उद्योग धंधों का गला घोट देना चाहते थे और इसी उद्योग से भारत सरकार के अगरेज कमचांगियो को आग खड़ा करके सारा धांदोलन थला रहे थे। इसमें खास हाथ लंबागायरवालों का था जो यहां की काटन मिलों को नष्ट कर डालना चाहते थे। चांदी के गिरन से इन मिलों को फायदा पहुंचा था और इनकी तरक्की हुई थी। १८७६-७७ में जहां ४७ काटन मिलें थी वहां १८९१-९२ में १२७ ही बची थी। इस बीच में स्पिण्डल (तबूट) १ १०० ११२ से ३ २७२ ९८८ और लूम (करघ) ९ १३९ से २४ ६७० ही चले थे। यहां की काटन मिल चीन के बाजार में भी मचस्टर से प्रतियोगिता करने लगीं थी और इससे व्यापार का काफी बड़ा हिस्सा उनके हाथ में आ गया था। नीचे के धावडों की दक्षिण -

इंग्लंड से सूता चीन गया—

	कीमत पाँड में
१८९०	१ ७९७ ०००
१८९१	१ ५०७ ०००

भारतवर्ष में सूता चीन गया—

	कीमत पाँड में
१८९०	१७ ५०७ ०००
१८९१	१९ ३९७ ०००

१८७६ ७७ में भारतवर्ष में जहाँ ७ ९२७ ००० पाँड सूता और १५ ५४४,००० गज कपडा चीन गए थे वहाँ १८९१ ९२ में प्रमाण १६१ ५५३ ००० पाँड और ७३ ३८४ ००० गज गए।

जापान भी उस समय यहां की मिलों के सूते का बड़ा खरोदार था। यह सब मचस्टर के लिए अमल्य था इसलिए उसकी मार से इस बात की भरपूर कोशिश हुई कि भारतवर्ष से चीनी की मुद्रा उठा ली जाय और रुपए की एकमचस्टर पर उस समय जो ऊंची-मे ऊंची हो सकती थी,

कर दी जाय। इस प्रकार एकमवत्र का उच्चा करने में भारतवर्ष की क्या क्षति हुई होगी या यत् बर्तन हुए गधाड़ की चान एगामिसन नामक मस्या न हगल कमरा का निवा था -

इस समय भारतवर्ष की मिल जत्र २२ ०० द ० का मूना रहा बचती है तत्र उसक १० ००० टाकर हात २। चीनवा १० ००० गोनर इमलिए त्त ३ कि व इमम कम म ब्रमा मूना म्य नयार नही कर सकने पर अगर एकमवत्र की २२ ८ पम कर ता गई गई ना भारतवर्ष की मिल का ता २२ की हा तरह २२ स्पए मिलम पर चीन क भरोगर का इमक लिए यहा १० ०० टाकर मूना पडगा। बहुत सम्भव है कि मूना इतना मगा हो जान पर चीनवा २२ की ही मिलें माल लें और भारतवर्ष क लिए स्थिति यह हो जाय कि या तो वह अपना दाम नाचा कर या इस व्यापार म हाथ धा बट।

गधाई क अलावा और म्याना न भो - जैसे हागकाग और सालान न—इस प्रस्ताव का विरोध किया कि भारतवर्ष से चांगी की मद्रा उठा ली जाय। उन म्गा में मा गहा का हयमा चलना था और इसका मूय कृत्रिम ही जान म वहा के उत्पादकों की भी हानि था। पर उनका आवेदन निवेदन मा अरण्यादत ही रहा।

## सोने का ग्रहण

मूल्य मापने के लिए पहले चादी का रुपया काम में लाया जाता था। स्वयसिद्ध मुद्रा होने के कारण १६५ ग्रन चांदी की सोने में जो कीमत हाती वही रुपए का कीमत थी। पर अब रुपए का वह स्वरूप न रहा। रुपया अब प्रतीक मुद्रा कर दिया गया। वह सोने का प्रतिनिधित्व करने लगा। १६५ ग्रन चांदी की कीमत सोने में चाहे जितनी कम हो पर वह १६ पस अर्थात् ७ ५३३४४ ग्रन सोने का द्योतक हो गई।

हज क्या रुपया जो कागज का चला ? गम न खा—रोटी तो गहू की रही। पर सब पूछिय तो चांदी का रुपया भी अब एक प्रकार का नाट ही था। साधारण नोट से उसमें फक था तो इतना ही कि यह नोट कागज का न होकर चांदी का था। मूल्य अब दोनों का ही कृत्रिम था।

चांदी की टक्काल बढ़ हो जान पर स्थिति यह थी—

(१) चांदी अब स्वयसिद्ध मुद्रा का मूल्य मापक नहीं रही।

(२) सरकार अपने को बचनबद्ध कर चुकी थी कि यह स्थान सोने को प्रदान किया जायगा।

(३) इस देश में चलन सिर्फ प्रतीक मुद्राओं का रह गया जिनमें कागजी नोटों के साथ चांदी के भी नोट थे।

(४) साधारणतः चांदी की एसी प्रतीक मुद्रा कानूनन एक हफ तक ही लेन देन के काम में लाई जा सकती है। अंगहरणाय इंग्लैंड में गिलिंग का सिक्का प्रतीक मुद्रा का काम करता था पर गिलिंग में एक पौंड से ज्यादा देने लेन की कोई भी कानूनन बाध्य नहीं था। पर यहाँ भारतवर्ष में रुपए पर एसी कोई कद नहीं लगाई गई—चाहे जितना देना पावना हो रुपए में लिया जा सकता था।

(५) अभी तक चमन में प्रत्यक्ष रूप से सोना नहीं घाया था। एक साल में या सरकारी खजान में सौंवरें १६ पेंस की दर से लिए जा

सकत था । पर उह दन-न का जनना कानूनन बाध्य नहीं थी ।

(६) सरकार इस दर म (अर्थात् ७५३३४४ दन सोना = १ रुपया) सान क वल्ल दर देन का तयार थी पर रुपए के बदले साना दन का नहीं । रुपए का विनिमय-मूल्य १६ पस बाध िया गया था इमलिए वह उममें ऊपर नहीं जा सकता था । जब ७५३३४४ दन सोना सरकार को दकर इमसे एक रुपया लिया जा सकता था तब कोई इमरे का एक रुपए क लिए उममें अधिक सोना क्याकर दता ? पर चूंकि सरकार न रुपए क वल्ले मोना नेन की कोई जिम्मेवारी गहा ला थी, उसका विनिमय-मूल्य १६ पस म नीचे गिर सकता था ।

(७) विनिमय मूल्य या एवमचज १६ पस कर िया गया था पर स्यायी रूप म नहीं । हमार गामक नेखना यह चाहत थी कि ऊ कस करवट बैठता ह । परिस्थिति अनबूल हुई तो उनका इरादा उसको धीर भा ऊंचा कर देने का था । मय के मान क लिए धरजी म स्टण्ड गन व्यवहृत होना ह । साना स्टण्ड कर देन का अर्थ है इन बात की व्यवस्था करना कि उन नेन के भुगतान के लिए लोगो को सोना मिल सक । पर इम समय यहा एमी कोई व्यवस्था नहा था । उधर चानी भी स्टण्ड की गह नही रह गई था । फिर यहा का स्टण्ड क्या था ? वास्तव म इस प्रश्न का उत्तर दना आसान नहा था । सर जॉन सबक नामक एक प्रसिद्ध बकर थी, जा १८८६ वाल साना चानी कमीशन क मम्बर रह चुके थी । उहान इम विषय में अपनी राय जाहिर करते हुए कहा था कि यहा का तत्कालीन स्टण्ड 'एवमचेंज स्टण्ड था । इमकी व्याख्या उहान इन गद्दो में की थी —

"जब कभी कोई सरकार ऐसे नोट (वे चाहे कागज के हों चाहे रुपए का तरह खादी के) जारी करती ह जो कानूनन सोने मे वल्ले नहा जा सकते, धीर उसकी कीमत ठहरान की जिम्मेवारी धरने ऊपर लेनी ह तब मेरी ममक म इस स्टण्ड को इमसे अछटा धीर कोई नाम न मिल सकन के कारण— 'एवमचेंज स्टण्ड' कहना चाहिए ।"

सर जॉन सबक इस प्रकार के स्टण्ड के विरोधी थी । उनकी त्याम प्रतिष्ठा यह थी कि इस प्रकार का व्यवस्था में करेती का धरना या बढ़ना



प्राकृतिक रूप से न हाकर मरवार की मर्जी के मुताबिक हुआ करेगा जो बड़ी भयंकर वस्तु होगी।

चांदी के पन्पानों बराबर यह कहते आ रहे थे कि जा लाग सोना सोना चिल्ला रहे हैं वे कपटी हैं और उनका उद्देश भारतवर्ष का सोना देना नहीं बल्कि हूडी की दर को ऊंचा करके रुपए का ही बराबर चलन में रखना है। मिस्टर राली ने अपने मन का स्पष्टीकरण करते हुए कहा था कि मेरा विश्वास है कि मोन के स्टण्ड के प्रश्न की धाड़ या तह में एक्सचेंज का प्रश्न है। अगर भारतवर्ष में मोन का स्टण्ड हो चले तथा मान और रुपए के बीच का एक्सचेंज दर काफी नीची हो तो मैं हार्गिज उस स्टण्ड का त्रियोत्र न करूंगा। अब धार धीरे यह स्पष्ट होना लगा कि सबकुछ हमारे साथ एक तरह का चाल चत्री गई था— हमको मोन का स्टण्ड देना का वादा मचाई के साथ नहीं किया गया था। जो हशल कमेटी के मम्बर रहे चुके थे उनका भी मोन के सम्बन्ध में अपना अपना विचार था। १८९८ में वधान देते हुए लाड फारर ने तो यह कहा कि 'अगर मेरा विश्वास यह न होता कि हशल कमेटी की रिपोर्ट भारतवर्ष को मोन का स्टण्ड दिलायगी तो मैं उस पर कभी स्तवित न करता। उनका कहना था कि यहाँ अभी तक मोन का स्टण्ड स्थापित नहीं हुआ है। उधर मि० कर्नी ने जो लाड फारर की तरह हशन कमेटी के मम्बर रहे चुके थे फर्माया कि—नहीं जब सरकार स्वमाधारण से लगान या कर के भगतान में मोन लेन को तयार है और रुपए की एक्सचेंज-दर १६ पेंस हो चकी है तब सम्झना चाहिए कि मोने का स्टण्ड स्थापित हो चुका। गरु से ही यहाँ की मुना प्रणाली को ऐसा रूप दिया गया कि वास्तविकता सामान्य से किसानों सम्झ में न आ सके और उसकी जटिलता की धार में हमारे वर्तमान जो दस्त-राजी चाहें कर सकें। जिस रोज हशन कमेटी की रिपोर्ट तयार हुई थी उस रोज एक्सचेंज की दर १४,६२५ पेंस थी। रिपोर्ट निकल जान पर २७ जून को यह दर एक दिन के लिए १६ पेंस हो गई पर वही टहर न सकी। १८९९ ६४ में मोन दर १४ ५४४ पेंस रही। यह दर बाजार की हासन पर निर्भर करती है। ऐसा न होता तो सर-

कार विधान-मात्र से प्र को घोर भी ऊंचा कर सकती थी। सरकार ने कानून पास कर दिया कि वह न गिरिग प्र वात का एक स्पष्टा र्गी पर वाजार को हानत एनी नहीं कि किमी का स्पष्ट क लिए मर कार क पास जाना पड और न गिरिग म कम में भी स्पष्टा मिल जाना ह तो सरकार का कानन कानन हो ग्यगा वह प्र चल न सकगी। यह जरूर है कि सरकार अपनी नीति नीति में परिवर्तन कर वाजार को हानत प्रन सकती = और वाजार का प्रपत पास धान क लिए मजबूर कर सकती =। पर यह अवस्था भा एक हद तक ही पर की जा सकती ह।

निसम्बर १८८० में कागम का अधिवेशन नागौर में हुआ और उसमें यह प्रस्ताव पास हुआ कि— भारत-सरकार ने कानन कानन कानून पास करके मवसाधारण क लिए चानी की टकमान का प्रवाजा बन कर दिया। इस पर यह कागम प्रयत्न म प्रकट करती = कारण कि स्पष्ट का मुख्य कृत्रिम और ऊंचा करके जनता पर परोम स्प म एक नया कर लगा दिया गया ह और इस कारवाई म हमारे व्यापार और उद्योग प्यों का—नासकर बपड का मिला का—बड़ी हानि पहुंची ह।

टकमान वं हो जान क वा चानी के दाम और एकमचेज की दर यह गहीं —

	घादा का प्रोमन नाम	प्रोमन एकमचेज
	पेंस	पेंस
१८९४-९५	२८.१	१३ १०१
१८९५-९६	२९.०	१० ६३८
१८९६-९७	२०.३	१५ ४५१
१८९७-९८	२७.६	१५ ३५५
१८९८-९९	२६.९	१५ ९७०

भारत में कई मान तक एकमचेज १६ पेंस म बढ़त नीचे रहा— अपनी सरकार चाहती थी कि स्पष्ट का माप १० पेंस दकर में अगर स्पष्टा स्पष्ट सस्ता बना रहा। अपनी नीति को अमकल हाने दस सरकार न

रुपए का अभाव या कमी करना शुरू कर दिया। रुपया डालना न डालना अब सरकार के बस की बात थी। उसने नए सिक्का की ढलाई बन्द कर दी जिससे बाजार में रुपए की टाट बटती गई। एक साल बन्द होने में पहले नई करेसा के रूप में हम प्रायः सात से नौ करांड रुपए की हर साल जरूरत पड़ती थी। सिक्के तो इससे भी ज्यादा चलते थे, पर उनमें से कुछ गला लिए जाते थे और उनका जवर इत्यादि बन जाने थे। जा सिक्का चलन में रह जाते उनकी तात्पर्य इतनी थी। हमारी जनसंख्या हमारा वाणिज्य-व्यापार हमारी तरह-तरह की आवश्यकताएं बढ़ रही थी और इसलिए यह आवश्यक था कि कर भी भी उही के अनुसार बढ़ती रहे। अगर स्वाभाविक रीति में वह बढ़ती तो १८६४ में १८६८ इन पांच वर्षों में कम से कम ४० करोड़ और रुपए नए सिक्कों के रूप में चलन में आ जाते। पर वास्तव में हुआ कुछ और ही। इतने समय में कुल पांच करोड़ रुपए के लगभग चलन में बढ़ पाए। सरकार प्रायः नए सिक्का डालती ही नहीं थी इसलिए पुराने सिक्का से ही सब को काम चढ़ाना पड़ता था। १८६३ में चलने फिरते रहनेवाले रुपयों की संख्या १३८ करोड़ बढ़ी गई थी। अगर यह संख्या ज्या की रफ्त बनी रहता तो भी हमारी आवश्यकताओं का पूर्ति के लिए अपर्याप्त होती। पर स्वाभाविक कारण—जैसे गयाकर और काम में लघाना जमीन में गाड़ दना इस देश से बाहर भेज दना— उस संख्या में ह्रास ही करने वाला था, इसलिए १८९७ की कृत के अनुसार यह केवल १२० करोड़ ठहरी थी। उस समय में जब कि रुपयों की आवश्यकता दिन दिन बढ़ रही थी सरकार ने उनकी ढलाई बन्द कर और उनकी लादाद कम कर उनका मूल्य बढ़ा दिया और एक्सचेंज फंड में १६ पैसे हो गया। पर पांच साल से कम में यह काम पूरा न हो सका।

यहां यह प्रश्न किया जा सकता है कि संवसाधारण के लिए एक साल जरूर बढ़े थी पर लोग सरकार को सोना देकर तो रुपया ले ही सकते थे फिर वह ऐसा क्यों नहीं करते थे? उत्तर यह है कि सोना लोग सरकार के पास तभी ले जाते जब और जगह बचन में अधिक लाभ न होता। जब तक एक्सचेंज १६ पैसे न हुआ सोना बाजार में सरकारी दर

म महंगा बिकता रहा। सरकार तो ७५३३४६ ग्राम मान के बदले एक रुपया लगी पर इतने मान का मुख्य बाजार में एक रुपए से अधिक था। ऊपर कहा जा चुका है कि दुर्लभ में स्ट्रैट मान का था और पौड गिलिंग पैस उस समय मान के दानक थे। फिर जब बाजार में एक्मचेज १६ पैस होता तो उसका अर्थ यही था कि उनमें सोने का मुख्य एक हुआ। अवश्य ही जब किसी का १६ पैस (माना) बचान में हा एक रुपया मिल जाना है तब वह १६ पैस (माना) देकर एक रुपया लेने को तयार न होगा। यही कारण है कि इतने मान तक का अचना माना ल जाकर सरकार में रुपए मागने न गया। इस बात का दूसरा तरह यह कह सकते हैं कि इतने समय तक एक्मचेज-नीति मरुत न हो सकी।

चांदी का कटाना पूरी करने के लिए अंग अमेरिका की भी कुछ घटनाओं का उल्लेख आवश्यक है।

जब १८६३ में भारत-सरकार ने अपनी टकमान बन्द करके चांदी का मुद्रा यहाँ न लाने का विधान किया तो अमेरिकी संसद विधान का मन्तव्य करके बाजार में चांदी खरीदना बन्द कर दिया। इससे चांदी और भा नीचे गिरा। तब का यह हाल रहा —

पैस—

१८६३	३५
१८६४	२८
१८६५	२६
१८६६	२०
१८६७	२३
१८६८	२६
१८६९	२३

१८६६ में चांदी अमेरिका में एक बार फिर राजनतिक अज्ञान का मुख्य विषय बन बठी। अंग के रिपब्लिकन चान्त थे कि इन विषय पर अंतरराष्ट्रीय समझौते की फिर चर्चा की जाय। पर डिमाण्ट अमक विगधी थे। उनकी भा। था कि अमेरिकी सरकार बिना अँगरेजों से किमा प्रकार का समझौता किए इतने मुद्रा प्रणामा दृष्ट कर ल और मान तथा

चादी के बीच १ १६ का सम्बन्ध स्थापित कर दे। प्रसिद्धेंट के चुनाव जात रिपब्लिकन पार्टी की रही और नए राष्ट्रपति न दोनो धातुओं के बीच सम्बन्ध निश्चित करने क उद्देश से इंग्लण्ड और फ्रांस क साथ पत्रव्यवहार शुरू कर लिया। फ्रांस की राय थी कि यह सम्बन्ध या अनुपात १ १५ हो, पर यहां भारत सरकार को यह मजूर न था। बाजार में उस समय (१८९७) यह अनुपात १ ३४२० था—अर्थात् प्राय ३४ भाग चादी एक भाग सोने का बराबरा करती थी। फ्रांस का बात स्वीकार करने का अर्थ होता चादी का मूल्य इतना अधिक कर देना कि १५॥ भाग चादी हा एक भाग सोने का बराबरी कर सके। साथ ही इसका अर्थ होता रुपए क एकसचज को अत्यधिक ऊचा कर देना—जो भारत सरकार की भी दृष्टि में सबया अनुचित था। अमेरिकन राष्ट्रपति क पत्रव्यवहार का कोई नतीजा नहीं निकला। इधर सोने के उत्पादन में बड़ी वृद्धि होने लगी थी और सोना सस्ता होने लगा था। लोग घाड़ ही समय में चादी को मूल से गए।

१८९८ में भारत सरकार ने एक प्रस्ताव भारत सचिव क सामने रखा, जिसका उद्देश था कज लेकर इंग्लण्ड में सोने का एक रिजर्व कायम करना और रुपए गला-गला कर चादी के रूप में बच देना। सरकार का कहना था कि चलन में रुपया आवश्यकता से अधिक है और एकसचज को १३ पेंस तक उठाने और वहां टिकाने के लिए इस माघिक्य या बाहुल्य को मिटा देना जरूरी है।

२६ अप्रैल को भारत-सचिव ने एक नई कर-सी कमेटी नियुक्त करके उस मादग दिया कि वह सरकार के प्रस्ताव पर विचार करे। इस कमेटी क अध्यक्ष सर हेनरी फीलर थे जो स्वयं भारत सचिव रह चुके थे। उनमें दूसरे सदस्यो में सर जान म्यूर, सर डेविड बाबर, लाड बल फर मि० कम्पबल आदि थे। अनुसंधान के लिए जो क्षत्र कमेटी का दिया गया था वह भारत सरकार के प्रस्ताव तक ही परिमित नहीं था। भारत-सचिव के आशुमानुसार यह भारतीय मुद्रा प्रणाली से सम्बन्ध रखनेवाली हर बात का अनुसंधान कर सकता थी और उसपर अपनी राय दे सकती थी।

कमठी के सामने मुख्य प्रश्न यह था —

(१) यहाँ का मान या स्टैण्ड माना है या चानी ?

(२) चानी और मान के बीच सम्बन्ध क्या है ?

बन्तरे गवाहों ने इस बात पर जोर दिया कि १८८३ में जो भूल हुई उसके लिए यह आवश्यक है कि चानी अपनी पुरानी जगह पर फिर से स्थापित कर दी जाय। कुछ गवाहों ऐसा भी था जो चानी को उसी स्थान में फिर से उसका पुरानी जगह पर लाने के पक्षपाती थे, जब कि अन्तरराष्ट्रीय समझौता ठाकराना घातुजा के सम्बन्ध में के लिए निर्दिष्ट है।

यह हुई चानी के पक्षपातियों की बात। सान के पक्षपाती भी दाँवों में विभक्त थे। एक दाँव चाहता था कि सान का मान ता ही साथ-साथ मोने के सिक्के भी चलने में हों। दूसरा दाँव चाहता था कि मान तो सान के रूप पर यहाँ उसके सिक्के न चलाए जाय।

गवाहों में इस धारणों भारतवासी थे—श्रायुत रमणचन्द्र दत्त, (कायस के भावी प्रसिद्ध) और बम्बई के पारसी व्यापारी मि० मरवान जास्नमजी। सान न ही सरकार का नीति की बड़ी आलाचना की।

चानी के पक्षपातियों का दलील यह थी कि उससे भारतवर्ष की कारा लाभ हुआ था और ऐसी वस्तु का परिष्कार हगिज न करना चाहिए था। १८६३ में परिष्कृत और भी उपायों में काबू में लाई जा सकती थी। इनके लिए मुद्रा प्रणाली में एक उलट पर का कोई आवश्यकता नहीं थी। इस बीच में यह अनुभव भी हुआ था कि इस क्षेत्र में सरकार की दस्त-गजी से क्या-क्या अपनय हो सकते हैं। व्यवस्था ऐसी हानी चाहिए कि गमाजवा आवश्यकताओं के अनुसार करमी मुद्रा की मात्रा स्वतः घटती बढ़ती रहे। पर यह प्रबंध जब सरकार अपने हाथ में लेती है तब यह घटना-बढ़ना उमकें इच्छानुकूल होने लगता है। फिर ता यह हो सकता है—जसा कि यहाँ हुआ था—कि हण्ट की मन्त्र जम्हूरत है, और सरकार उस मन्त्र से इनकार करती है। सान में स्पष्ट-मन्त्र का दुर्मिथ है और सरकार कहती है कि नही स्पष्ट का बाह्य है हम सिक्कों को चलने में निबाल कर मान जा रहे हैं। पर करणों का स्वतः

घटना-बन्तना तभी हो सकता है जब टक्साल का दरवाजा सबके लिए खुला रहे, जिसको मुद्रा की आवश्यकता हुई अपना सोना या चादी टक साल में ले गया और उसके सिक्के करा लिए। यहाँ भारतवर्ष में सोन की ढलाई की मात्रा कम थी इसलिए यह और भी आवश्यक था कि चादा की टकसाल फिर से खोल दी जाय। इससे सारी वृत्रिमता और तज्जनित दोष दूर हो जायग।

उस समय चाटी का दाम २७ और २८ पस के बीच था पर चाटी के पक्षपातियों का कहना था कि अगर टकसाल खाल की गई और यहाँ चाटी के सिक्के पूर्ववत् चलन लग तो बाजार शीघ्र ही ३० पस हो चकेगा। इसका अर्थ होगा १२ पेंस का रुपया। पर विपक्षी यह कहते कि इस बात की गारण्टी ही क्या है कि चादी या एक्मवज्र इससे भी नीचे न गिरेगा? मि० राली ने इस प्रश्न का उत्तर देते हुए कहा था कि सत्तार में सभी कुछ सम्भव है पर हम व्यापारी अनुभव से जानते हैं कि क्या सम्भव है और क्या असम्भव। जहाँ व्यावहारिक बातों की चर्चा हो वहाँ ऐसे प्रश्न उठाने से क्या लाभ? मि० डब्लु नामक दूसरे गवाह से भी यही प्रश्न किया गया और उनका उत्तर इस प्रकार था - हमारे स्कॉटलैण्ड में जब कभी कोई ऐसा सवाल करता है तब इसका जवाब एक लोकोविन के रूप में दिया जाता है। वह लोकोविन यह है कि अगर आम मान गिर पड़तो गानवाले पक्षियों के तम घुट जायग। पर बावजूद इसके वे पक्षी गाते ही जाते हैं।

लाड एल्डनहम इंग्लैण्ड के प्रसिद्ध बकर ध और बक भाव इंग्लैण्ड के गवर्नर रह चुके थे। उन्होंने अपने बयान में भारत सरकार की कारवाई की तीव्र आलोचना की और उसे जर्म तक बताया। लाड एल्डनहम इतने मुद्रा प्रणाली के पक्षपाती थे और सोन चादी का सम्बन्ध निश्चित करने के लिए चाहते थे कि फिर से अन्तर्राष्ट्रीय सम्झौते के लिए प्रयत्न किया जाय।

मि० राबर्ट वाकर नामक व्यवसायी भी ऐसा सम्झौता चाहते थे। उन्होंने अपने हज़ार में कहा -

मेरा विश्वास है कि भारत में चादी की टकसाल का दरवाजा फिर

म खाल देन का निश्चय होते ही कुछ ऐसी शक्तिया काम करने लगगी जो चाँदी के मूल्य को बढाय बिना न रहेगी । भारतीय टकसाल बन्द होन स पहले चाँदी का दाम २८ पैस स कभी नीचे नही गिरा था, और ऐसे निश्चयमात्र से ही उस नाम में तजी आ जायगी । चीन और अफ्रीका में भी चाँदी के उपयोग के लिए बहुत बडा धन ह ।'

सोन के पक्षपाती बड़ी कहल जाते थ जो टकसाल बन्द होन स पहले बार-बार कह चुक थ— चाँदी काफी खबल डायडोल अस्थिर, अव्य वस्थित साबित हो चुकी ह । एक्सचेंज को अपने माथ नीचे गिरा कर इसन उन सबको नुकसान पहुँचाया ह - और उनम भारत-सरकार का नाम सबसे पहले लेने लायक ह— जिहूँ रुपया विलायन भजना पडता ह ।' पर इससे आग मोने के सब पक्षपाती साथ जान को तयार न थ । कई हमें सोना किसी रूप म दना चाहता था कोई किसी रूप में । कुछ तो मोना नाममात्र को ही देनवाले थ ।

इन सबके सामन पन्ना सवाल यह था कि जो रुपए चलण म थ और जो प्रतीक मुद्रा बना दिए गएथ उनके बन्दे जनता की भाग हान पर सर बार मोना देने को तयार रहगी या नही ? सर जान सबके का कहना था कि जब तक सरकार बन्दे म सोना दन को तयार नही होती तब तक मान का मान या स्टडड माथक ना ही नही सकता । पर सोन के पक्षपातिया न एक स्वर से यही कहा कि अगर मोन के स्टडड की प्रतिष्ठा के लिए यह आवश्यक हो तब तो न होना बात न बजगी बामुरी । रुपयो के बन्दे सरकार मोना दने को बाध्य न हो इसी आधार पर सबने अपनी अपनी स्कीम पेश की । हा अगर किसी साल भारत की दनपारी ज्यादा हुई और उसके लिए भुगतान में मोना बाहर भजना आवश्यक हो गया तो इन स्कीम म इस बात की प्राय ध्यवस्था थी कि सरकार रुपए लेकर उस काम के लिए सोना द ।

घापम का मतभद विहायत इस बात पर था कि सोने के भीतर घसण में सोन के सिक्के रह या नही । मि० मकलियड सॉड नापसुक सर मम्पसल माण्ड्यू सर एडगर विस्किन जग भाग इस बात क पक्ष में थ । उनका कहना था कि जब तक सोन के सिक्के चलन में न हाण यही



की मुद्रा प्रणाली पूर्णतः स्वस्थ न हो सकेगी। मर एडगर विस्टन मित्र मरकार के मलाहकार रह चुके थे। उनका कहना था कि सिद्धांततः यह सम्भव है कि सोन का मान या स्टण्डे बिना सोन के सिक्के के चलन में हो, पर यह अपवात्स्वरूप है, और जिस मुद्रा प्रणाली में ऐसा व्यवस्था हो वह कभी उत्तम नहीं कही जा सकती। सोन के मान या स्टण्डे का आधार एसी व्यवस्था होनी चाहिए जिसमें आवश्यकतानुसार सोना बाहर से बाहर बरोक टोक जा सके और देश के भीतर भुगतान के लिए सोन के सिक्के का स्वच्छ व्यवहार हो सके। इस प्रकार की व्यवस्था उस व्यवस्था से अधिक प्रचलित और हिनकर है जिसमें सोन के लिए केवल प्रतीक मुद्रा काम में लाई जाती है। यह भी कहा जा सकता है कि जहां सोन का मान या स्टण्डे है पर चलन में सोना नहीं है वहां सरकार द्वारा नस्तु राजी विधायक रूप में हागी। पर इस प्रकार की नस्तु राजी बहुत ही बुरी चीज है। जो भी मुद्रा प्रणाली है वह सतत काम करनेवाली हानी चाहिए और सरकार द्वारा हस्तक्षेप कुछ खामपरिस्थितियों में ही—और वहां भाग्य में कम-हाना चाहिए। सोन के सिक्के के विरोधा यह कहा करते कि चलन में सोना अधिक काल तक नहीं ठहर सकता—लोग उसे दबाकर उठ जायेंगे। इनके उतर में मि० मकलियन का कहना था कि सोना इस देश के लिए कहीं नई चीज नहीं थी। सोन के सिक्के यहां मरिया तक चल चुके थे। १८५३ में पहली बार सोन के सिक्के यहां चलन में थे उनका तन्मानीया था बारह कराड पौंड। नहीं, भारतवर्ष का सोन के सिक्के का एसा लाभ या मोह नहीं है कि वह उन्हें चलन में रहने ही न दे।

सोन के सिक्के के विरोधियों में बगाल-बक के कमचारा मि० लिण्डम का नाम विशेष उल्लेखनीय है। यह इस विषय पर वर्षों से लिखत आ रहे थे और जब फील्डर कमेटी बठी तब उसके सामने इस हानि एक स्वीम रखा जो इनके नाम से मशहूर है। इनका स्कीम मशय में यह थी—

सोना मान या स्टण्डे कर दिया जाय पर चलन में सोन के सिक्के न हों। देश के भीतर एण और नाट करेणों का काम कर। सोन में एक कराड पौंड बत्र लेकर एक रिजव (कोय) वायम किया जाय

जिसका नाम गोल्ड स्टैंड रिजर्व है। रुपए की एकसेज-पर ऊपर और नीचे गाना आगे वाप दी जाय। जब किसीका रुपया की जरूरत हो तब वह लान म सरकार का स्टॉलिंग २ और १६, पैसे की दर म यहा उमस रुपए ल ल। कम विपरीत जब किसीका विलायत म स्टॉलिंग की जरूरत हो तब वह यहा रुपए कर १५, पस की दर म वहा सर कार स स्टॉलिंग ल २। १/००० म कम किसीका रुपए न मिले और १,००० स कम किसी का स्टॉलिंग न मिले। अगर किसी समय स्टॉलिंग की माग इतना अधिक हो कि राज्य वाला ही जान का पर गाना उस हालत में सरकार भारतवष म मिनन वाउ यथा का बुद्ध ह नक गना डाल और चानी को लदान भज कर वच २ और उमका स्टॉलिंग कर २।

इम स्कीम का स्वास उहा था भारतवष म करना क लिए मान का व्यवहार न होन गना और इमम इम बात पर बहुत जर शिया गया था कि सान का जा रिजर्व हा व न न म ही रह। मि० लिडम का कहना था कि लान म माना रहन म ब्रिटिश साम्राज्य क आर्थिक केन्द्र की मजबूती बना रहगा और वह रिजर्व का भारतवष में रखन क बट्टर विराधी थ।

पर उम समय भारत-सरकार का मत और ही था। उमक समय सम्म सर जम्म वम्लण्ड न इम स्कीम की आलोचना करत हुए कहा कि भारतवष में नई मुद्रा प्रणाला का सफलता क लिए यह घायल आवश्यक ह कि मत्रसाधारण का उमपर पूरा विश्वास हा। और उम विश्वास मन्गान क लिए यह घायल आवश्यक ह कि माने का रिजर्व इसी दर में रखा जाय। मार रिजर्व लन्दन में रखा गया और लोगों का यह स्वयान हा चला कि भारत मन्त्रि या व्यापारिया की माग पूरी करन में यह कभी भा गायब हो सकना ह ना विश्वास हगिज न जम सकगा। मर जम्म वम्लण्ड की एक शिष्या यह थी कि रिजर्व ६,००० मान दूर न रखकर भारतवष में रखा जाय तो उमकी मिवहार चाह जो हा वह हर हालत म ज्यादा मुफी साधिन हा सकना ह।

और सागान म इम स्कीम का आलोचनाक बनाया और इमकी कड़ी आलोचना की। इतना नवमे बडा दोष यह बनाया गया कि इमके

सरलता और स्वाभाविकता को तिलाजलि दे दी गई थी और सारी व्यवस्था जटिल-जटिल और कृत्रिम-से कृत्रिम बना दी गई थी। प्रायः सब कुछ सरकार के हाथ में या उसकी मर्जी पर छाड़ दिया गया था, और विशेष ध्यान इस बात का रखा गया था कि सोना यथासम्भव लान में ही केन्द्रित रहे।

यद्यपि फौलर कमेटी ने यह स्कीम स्वीकार नहीं की तथापि हमारे पासको की कारसाजी से दंग में जा मुद्रा प्रणाली प्रचलित हुई वह बहुत कुछ इसी स्कीम के अनुसार थी। इसीलिए इस विषय के इतिहास में लिण्डसे स्कीम को विशेष महत्व प्राप्त है।

कमेटी ने अपना निष्पत्ति देते हुए पहले तो भारत सरकार के प्रस्ताव को यह कह कर अस्वीकार्य बताया कि इस बीच में परिस्थिति बहुत कुछ बदल चुकी थी—एक्स्चेंज १९ पस तक पहुँच गया था और स्थिर हो रहा था—घर में समस्या नहीं रह गई थी—अगर रूपए चलने में निकाल लिए गए तो यहाँ मुद्रा सम्बन्धी स्थिति भयंकर हो जायगी और अगर उन रूपयों को गला कर बच दिया गया तो चादी और भी नीचे गिर जायगी जिससे चीन-जैसे चादी की मुद्रावाले देश और भारतवर्ष के बीच के एक्स्चेंज में हलचल सी उपस्थित हो जायगी।

चादी और सोने के बीच के प्रश्न पर कमेटी ने अपना फसला चादी के खिलाफ दिया और भारतवर्ष के लिए सोने को ही श्रयस्कर बताया। 'भारतवर्ष में मूल्य का मान या मापक सोना ही होना चाहिए—चाहे वह सोने के सिक्कों के साथ हो चाहे सोने के रिजर्व या कोष के।'

पर कमेटी ने उन सब स्वीमों को त्याग्य ठहराया जिनमें बिना सोने के सिक्कों के सोने का मान या स्टैण्डर्ड चलाने की बात थी। ऐसे सिक्के इस दंग में बहुत समय तक चल चुके थे और इतिहास से इस धातु की पुष्टि नहीं होना थी कि जैसे छलनी में पानी बाहर निकल जाता है वैसे ही इस दंग में चलने से सोने के सिक्के निकल जायेंगे। कमेटी की सिफारिश यह थी—

हम लोग इस बात का पक्ष में हैं कि इतिहास सावरन या गिनी का भारतवर्ष में भी चलने लाने लगें और लोग उमर-न-एन-को बाध्य कर

दिए जाय। साथ ही, ब्रिटिश टकमाल की मास्ट्रिनिया में जा तीन शाखाएँ हूँ उन्हें जिन शर्तों पर मानक सिक्के (सावरेन) ढालने का अधिकार प्राप्त हूँ उन्हीं शर्तों पर भारतवर्ष की टकसाला को भी ऐसे सिक्के प्रेषित रूप में ढालने दिया जाय। इसका फल यह होगा कि सब सावरेन समान होंगे और उनका चलन प्रष्ट ब्रिटेन में तथा भारतवर्ष में दोनों जगह होना लगेगा।

रूपयों के बारे में कमटी ने लिखा कि स्वयंसिद्ध मुद्रा सावरेन होगा, और रूपएँ प्रतीक मुद्रा का काम करेंगी। पर लेन देन में रूपयों का व्यवहार परिमित या नियंत्रित करना समभव नहीं। इसलिए इस विषय में प्रतीक मुद्रा स्वयंसिद्ध मुद्रा के ही समान होगी। कमटी ने अमेरिका का संयुक्त राज्य और फ्रांस इन दो देशों के उदाहरण देकर यह दिखाया कि वहाँ मानक का मान या स्टैंडर्ड या फिर भी चाहें जितना हद तक हो लोग चाहे के सिक्के चलने को बाध्य थे। कमटी का राय में भाव स्पष्टता केवल इस बात की थी कि रूपया का तादात्त जल्द से जल्द न बढ़ाई जाय, और उसकी सिफारिश थी कि जब तक चलने में सोने का परिमाण अत्यधिक नहीं हो जाता तब तक धार रूपएँ न ढाले जाय।

रूपयों के बन्द भारत सरकार माना करने का बाध्य है—एसा कोई सिफारिश कमटी ने नहीं की।

लकस्वज की स्थायी दर के सम्बन्ध में कमटी ने अपना निणय १६ पैसे के ही पक्ष में लिया। उसकी साम दलील यह थी कि मौजूदा दर यही है और यह प्रायः हद साम्य कायम है। इसको बन्द करके किसी भी दूसरी दर की इसकी जगह बिठाना—बन्द का बिगाड़ना, बन्द का उखाड़ना और अनिश्चितता के साथ व्यवहार करना होगा।

टकमाल बन्द करके जो परिस्थिति पैदा कर दी गई थी उसमें सरकार १६ पैसे ही बन्द करे, जो दर चाहता समय कर सकती और टिका सकती थी। सिक्कों की इलाई सब उतके हाथ की बात थी—उनकी तात्पर्य या संख्या कम करके या उनका मूल्य चाहें जितना उखाड़ कर सकती थी। सबाल सिर्फ यही था कि मार्गों का अपनी व्यवस्था के रूप में इसका क्या काम चुकाना पड़ेगा और इसमें कितना समय लगेगा? इतिम

ने यह सिफारिश करना मुनासिब समझा कि वह १६ के बजाय १५ पेंस कर दी जाय।

इधर चादी के पक्ष विपक्ष की बातें हो रही थी, उधर सोने का उत्पादन वेग से बढ़ रहा था और सोने में चीजों के दाम भी ऊँचे होने लगे थे। १८६८-६९ में दाम ऊँचे होने के कारण इस देश के माल की माग थन्की रही और एक्मपाट की उन्नति हुई। सोने के उत्पादन में इस वृद्धि के कारण मसार के मुद्रासम्बन्धी इतिहास में एक नए अध्याय का प्रारम्भ हो चुका था या होनवाला था। भारतवर्ष में भी अब काम चलने लग्य और कुछ समय बाद लोग १६ पस के नौपों को भूल से गए और उसीका स्वाभाविक समझने लग्य।

यहां भारत सरकार के प्रायः यय के विषय में कुछ कह देना आवश्यक है। लाड रिपन के जाने के बाद इस दश में कई नए टक्कम लगाए गए जिससे करणता का बोझ बहुत भारी हो गया। १८८२-८५ में सरकार प्रतिवष कर के रूप में जा कुछ ले चुकी थी उसको आधार मानकर स्व० गोखले ने अपनी एक स्पीच में लिखाया था कि १८८५-६८ इ. १४ सालों में सरकार ने जनता से १२० करोड़ अधिक लिया था। इसमें से ८० करोड़ तो फौजी खर्च में चला गया था और बाकी दूसरी मदों में। शिगा के लिए हमसे कुल एक करोड़ ही प्राप्त हुआ था।

पहले सरकार की ओर से कहा जाता कि एक्सचेंज गिरन से जो हानि होती है वह उसे स्वयं घटाने के प्रयत्न पर विचार भी करने नहीं देती। जब एक्सचेंज १६ पेंस कर दिया गया और सरकार की वह गहन समस्या हल हो गई तब लोगों को आशा होने लगी कि हमारा बोझ अब हलका कर दिया जायगा। पर उनका बोझ ज्यों का त्यों बना रहा और उनकी आशा निराशा में परिणत हो गई। रुपए की कीमत जब १२ और १३ पेंस के बीच थी तब सरकार को जिनना खर्च पड़ता था उसमें—रुपए की कीमत १६ पेंस होजाने पर—चार और पांच करोड़ के बीच की बचत होने लगी पर इस बचत का कई साल तक जनता को कोई लाभ न पहुंचा। अब सरकार की नीति यह हो चली कि प्रायः से व्यय पूरा होना ही पर्याप्त नहीं कहा जा सकता—प्रायः इतनी होनी चाहिए कि प्रतिवर्ष

व्यय पूरा कर देने के बाद खासी बचत रहे। १९०१ २ में समाप्त होने वाले पांच वर्षों में यह बचत १२ २६ करोड़ रुपए रही। श्रीयुक्त गोखले का कहना था कि अगर युद्ध और अकाल के कारण व्याप में वृद्धि न होती तो सरकार की आय उसकी आवश्यकता से प्रतिवर्ष प्राय ६॥॥ करोड़ रुपए अधिक होती।

इस विषय पर दूसरे अध्याय में खीर भी प्रकाश डाला गया है।

## आड से शिकार

फोल्ग कमेटी न बहुमत से जो सिफारिशें की थी उन सबको भारत सचिव न मजूर कर लिया। उन्हान अपन वक्तव्य में कहा कि—' इस रिपोर्ट के महत्व के अनुसार इस पर ब्रिटिश सरकार न ध्यानपूर्वक विचार किया ह। और हममें जो तथ्य और युक्तिया पग की गई ह उन्हें सारगर्भित मानती हुई वह इस नतीज पर पहुंची ह कि इसके उसूल मान लिए जाय और वे घमेल में लाए जाय। पर इतना बटु कर भारत सचिव और उनके सलाहकारा न रिपोर्ट को ताक पर रख दिया और उन उसूलो के ही खिलाफ काम करना शुरू कर दिया।

उहोने नई मुद्रा प्रणाली के संगठन या रचना में कानून से काम— उद्भूत काम—काम लिया और अपनी निरंकुशता प्राय अधुण रखी। जो कुछ करते रहे हुकमनामो या फरमानों के जरिए, जो उनके मुविधानुसार बदले जा सकते थे।

इस समय में कब कौन-सी घटना घटी इसका एक सक्षिप्त विवरण नीचे दिया जाता ह —

१८९९— एक एक्ट पास हुआ, जिससे लोग सॉवरेन या गिनी लेने देने की बाध्य हो गए। दर रही १६ पेंस = एक रुपया।

१८९९ १००३— भारतीय टकसालों में सॉवरेन डालने के सम्बन्ध में समझौते का जो प्रयत्न हो रहा था वह छोड़ दिया गया।

१९००— रुपयो की डलाई से जो मुनाफा होता उससे सन्धन में गोल्ड स्टण्डर्ड रिजर्व—भुवणनिधि या भुवण-कोष की रचना की गई।

१९०४— भारत-सचिव की घोर से एलान किया गया कि १६½ पेंस की दर से वह चाहे जितन की हुडी भारत-सरकार पर बचने की तयार रहेंगे।

१९०५— नोटों की पुन्नी के लिए जो बरेसी रिजर्व था उसकी घोर

स कुछ सोना बक भाव इंग्लैण्ड में रखा गया और यह विधान भी बना कि उस रिजर्व का एक हिस्सा लन्दन में कज या उधार दिया जा सकता।

१६०६—पहले यह व्यवस्था थी कि भारतवर्ष में सोना दनवाल का सरकार रूपए दे देती। अब यह व्यवस्था कर दी गई कि सिर्फ सोना क ब्रिटिश सिक्के दनवाल रूपए पा सकेंगे।

१६०७—गाल्ड स्टण्डड रिजर्व की एक गात्वा इस देश में खोली गई जिसमें रूपए रख जा सकते थे।

१६०८—कलकत्ता में लन्दन पर १५<sup>१</sup>/<sub>१००</sub> पस की दर में हुडिया बची गई और लन्दन में गाल्ड स्टण्डड रिजर्व से उनका भुगतान किया गया।

१९१०—दस और पचास रूपए के नोट प्रचलित भारतीय कर दिए गए और यह विधान बना कि सोना क ब्रिटिश सिक्का क बल नाटमिल सकेंगे।

१९११—सो रूपए क नोट भी प्रचलित भारतीय कर दिए गए।

१९१३—भारतीय मुद्रा प्रणाली की जाच के लिए एक गाही कमीशन नियुक्त हुआ।

अब फौलर-कमेटी की सिफारिशों को लेकर हम यह निम्नाना चाहते हैं कि सरकार द्वारा स्वीकृत हो जान पर भी क कदा तक प्रयत्न में लाई गईं। सबसे पहल साने क सिक्के का बान लाजिए।

कमेटी न सिफारिश की थी कि ब्रिटिश सावरन लेन-दान को लागू बाध्य कर दिए जाय। १८९६ में एक एक्ट क द्वारा यह विधान कर लिया गया। कमेटी की दूसरी सिफारिश यह थी कि जिन शनों पर ब्रिटिश गाही टकसाल प्रोस्ट्रुलिया में सावरन की बलाइ हान दगा ह वही शनों पर यहा भी होने दे। ब्रिटिश सरकार की ओर से या उसका अथ विभाग की ओर से इसका एसा विरोध हुआ कि यह सिफारिश सिफारिश ही रह गई। वास्तव में वह विरोध जाहिरा तौर पर नहीं किया गया। पर तरह तरह की जो प्रयत्नियां पग की गई उनसे उनका प्रयत्न भाव के सम्बंध में कोई सन्तुष्टि नहा रह सकता था।

पहल तो गाही टकसाल ने यहा बलाई की व्यवस्था प्राणिक विषय में प्रयत्न शरी, पर जब इनसे भी काम बनत न दगा तब प्रयत्न में ब्रिटिश अथ विभाग न यह कहना शुरू किया कि आखिर भारतवर्ष में सावरन



ढालन की ऐसी ज़रूरत ही कौन सी है ' १८६९ से १९०३ तक पत्र व्यवहार ही चलता रहा और अन्त में भारत सरकार ने हार मानकर यह प्रयत्न ही छोड़ दिया। हा उसकी धार से यह बराबर कहा जाता रहा कि हमारा लक्ष्य ज्यो कास्या बना हुआ है और हम आशा करते हैं कि हम किसी न किसी दिन सोन का सिक्का यहाँ ढाल सकेंगे। यहाँ यह कह देना आवश्यक है कि ब्रिटिश सरकार या ब्रिटिश शाही टंकसाल को हमारे माग में रोड़ अटकान का अवसर इसलिए मिल गया कि हम ब्रिटिश सॉवरेन की ढलाई की इजाजत मागते थे। अगर हम अपना ही कोई सिक्का—जैसे मोहर या अशरफी—ढालन की बात करत तो हमारे माग में वह कठिनाई उपस्थित न होती।

१६१० में सर विट्टलदास ठाकरसी न बड़ी व्यवस्थापिका सभा में इस आग्य का एक प्रस्ताव पेश किया कि भारतीय टंकसालों में सोन के भारतीय सिक्के ढालने की व्यवस्था की जाय। उन्होंने अपने भाषण में कहा—

' इस विषय में कभी कोई सन्देह नहीं रहा है कि हमारी मुद्रा नीति का लक्ष्य है सोने के सिक्के के साथ सोन का मान या स्टण्डर्ड। पर आज तक सोन के सिक्के की व्यवस्था न हो सकी। विलम्ब से इस देश की बड़ी हानि हो रही है और इस विषय की कठिनाई भी बढ़ती जा रही है। कहा जाता है कि इस देश के लोग इतने गरीब हैं कि यहाँ सोन के सिक्के चलाना बुद्धिमत्ता का काम नहीं। पर यह दलील लचर है। सोने के स्टण्डर्ड के लिए जब यहाँ के लोग गरीब नहीं तब, सोन के सिक्के के लिए क्याकर हो सकते हैं? इस समय तो यह अवस्था है कि हमारी सोन से जा भलाई हो सकती है नहीं हो रही पर जो बुराई हो सकती है वह हो रही है।

श्रीयुक्त गोमले ने इस प्रस्ताव का समर्थन करते हुए कहा कि मुद्रा प्रणाली ऐसी होनी चाहिए जिसका संचालन प्राकृतिक रीति में होता रहे—जिसमें सरकार का हस्तक्षेप या दण्ड नहीं के बराबर हो, और वह प्रणाली तभी हो सकती है जब फील्ड-नमटी की रिपोर्ट के अनुसार उसका आधार सोना कर दिया जाय।

सरकार की ओर से कहा गया कि अवश्य ही सारे प्रश्न पर फिर से विचार करने की जरूरत है और हम इस भारत-सचिव के सामने रखने जा रहे हैं। इस पर सर विट्टल दास ने अपना प्रस्ताव वापस ले लिया।

भारत सरकार ने भारत सचिव का लिखा और भारत-सचिव को फिर ब्रिटिश सरकार के अर्थ विभाग का दरवाजा बंद रखना पड़ा। पर इसकी मनावर्ति या भाव में कोई अंतर नहीं पड़ा था। फिर वही किम्सा शुरू हुआ। कहा गया कि भारत सरकार इस झूठे में क्या पढ़ना चाहती है? मावरन नालन के लिए हमारी दखलत जरूरी है। अगर भारत-सरकार का टकमाला का प्रबंध हमारे हाथ में ले लिया तो यह असुविधाजनक होगा और अगर मावरन नालन के लिए हमने अपनी गाथा बहा खोल दी तो इसमें खर्च बहुत ज्यादा पड़ेगा। भारत-सचिव की अपनी राय सार के सिवाय के पत्र में नहीं थी पर भारत-सरकार का आग्रह देखकर उन्होंने लिखा कि ब्रिटिश अर्थ विभाग की तरफ आपको मजूर न हो तो मैं यह इजाजत देने की तयार हूँ कि आप दस रुपए की अपनी मोहर नालना शुरू करें। भारत सरकार इस पर राजी हो गई। पर भारत-सचिव ने लिखा कि कुछ भी करने से पहले सब साधारण की राय दायर कर लेना जरूरी है। भारत-सरकार को यह बुरा-सा लगा और उसने जवाब दिया कि व्यवस्थापिका सभा में और उसके बाहर, इस विषय की बिजनी ही कर आलाचना हो चुकी है और यह स्पष्ट हो चुका है कि यहाँ का लोकमत जहाँ से इस प्रस्ताव का समर्थन करता है, बल्कि यहाँ तो यह पूछा जाता है कि जो इजाजत बनाया और घास्टलिमा की मिल चुकी है वह भारत को क्यों नहीं मिल रहा है? १४ फरवरी १९१३ को भारत-सचिव ने सूचित किया कि जो गांधी कमीशन नियुक्त हान जा रहा है वह इस विषय का भी अनुसंधान करेगा। भारत-सरकार अर्थ और कर का क्या सकते थी? फोर्जर-कमिटी की जो रिपोर्ट भारत-सचिव द्वारा स्वीकृत हो चुकी थी उसपर १४ साल बाद अब दूसरा कमीशन अपनी राय देने जा रहा था कि उस समय में सारा कहीं तक ठीक होगा।

रुपए का बचन जसा कि पहले कहा जा चुका है, १८० अंश

(३ ग्रॉस) होता है जिसमें खालिस चाँदी इस समय १६५ ग्रन थी। रुपए की नकली कीमत १६ पेंस थी, और असली कीमत इससे बहुत कम। जब चाँदी का दाम लंदन के बाजार में २४ पेंस होता तब सरकार को एक रुपया ढालन में प्राय ६ १८१ पेंस खर्च पड़ता। जब चाँदी का दाम ३२ पेंस होता तब यह खर्च १२ २४१ पेंस बँटता। असली और नकली कीमतों के बीच जो फर्क था उस सरकार अपना मुनाफा समझती थी।

फौलर कमेटी की सिफारिश थी —

‘रुपयों की ढलाई से जो मुनाफा हो वह सरकार की साधारण आय में शामिल न किया जाय। सोन में उसका एक खास रिजर्व रखा जाय और यह रिजर्व पेपर करेंसी रिजर्व या सरकारी रोकड़ से विलकुल भलग हो।

कमेटी की मन्ता यह थी कि यह रिजर्व सोन के रूप में रखा जाय और भारतवर्ष में ही रखा जाय। पर भारत सचिव के सलाहकारों ने सोन में ऐसे कागज को भी शरीक बनाया जिसका तबाखला सोन से हो सकता था। भारत-सरकार के तत्कालीन अर्थ सन्स्य सर एडवर्ड ला भी इसी मत के थे। हा लाड कजन स्वयं अप की एमी खचातानी के विरुद्ध थे और उहान भारत सचिव का लिखा भा कि हमें कोई ऐसी कारवाई नहीं करनी चाहिए जिससे किसी प्रकार की गलतफहमी फैले या लोगों का विश्वास उठ जाय। पर भारत सचिव ने उनकी एक न सुनी, और सरकार को भ्रान्त दिया कि रुपयों की ढलाई से जो मुनाफा हो वह आप नियमित रूप से हमारे पास भेज दिया करें। इस प्रकार गोल्ड स्टैण्डर्ड रिजर्व की स्थापना लन्दन में हुई। और उसमें सोन के अलावा स्टैलिंग कागज भी रहने लगे।

१६१३ साल ग्राही कमिशन ने कई गवाहों में इस विषय पर प्रश्न किए और यह जानना चाहा कि सोन से फौलर-कमेटी का सचमुच अभिप्राय क्या था। ऐसे गवाहों में मि० मार्चेंट मि० कोल और मि० रास के नाम उल्लेखनीय हैं। मि० मार्चेंट स्वयं फौलर-कमेटी के सदस्य रहे चुके थे। उन्होंने कहा कि जब इस विषय में लोगों के विचार बदल

गए ह और म स्वयं सोन की जगह स्टलिंग के व्यवहार का समर्थन करूंगा। पर जिस समय की यह बात ह उस समय ता मान स अभिप्राय वास्तविक सान से ही था। मि० कोल बक भाव इंग्लड के गवर्नर रह चुके थ। उन्होंने भी कहा कि प्रारम्भ भयदा विचार था कि सारा-बा-भारा रिजर्व सान म रखा जाय। मि० राम बगाल चम्बर क प्रतिनिधि स्वरूप गवाही देन गए थ। उनका वक्तव्य यह था—

'फाल्गुन-कमेटी की रिपोर्ट को भाषा बहुत स्पष्ट ह। उसकी सिफारिश थी कि यह रिजर्व पपर करेसी रिजर्व या सरकारी रोकड से बिलकुल अलग रखा जाय। इसका अर्थ यही हो सकता ह कि रिजर्व इसी देग में रहनवाला था। इंग्लण्ड म रखन की मंगा होती तो यह क्या सिखा जाता कि पपर करेसी रिजर्व और सरकारी रोकड म बिलकुल अलग?' वहा ता या ही यह रिजर्व अलग रहता। रिजर्व में खाली सोना रहे या नहीं इस सम्बन्ध म म कमेटी की इस सिफारिश का निष्कर्ष समझना है— एकमन्त्र का स्व गिरन का शर हा ता सरकार अपने पास के सान का कुछ हिस्सा विलायत भज द। म ता इसका अर्थ यही लगा सकता है कि जब सरकार क पास इस ंग म सोना हा तब वह उस विलायत जान द। फिर कमेटी की दूसरी सिफारिश यह थी कि जब सरकार के पास रिजर्व म काफी साना हा जाय और उसक खजान म भा सोना हो तब वह भारतवर्ष में अपना दनपारा सोन में चुका सकती ह।'

अर्थ का अर्थ कर—मृत्यु और माय की हत्या कर—भारत-सचिव न इस देग का साना विलायत मगाना और उसका मनमाना उपयोग करना शुरू कर दिया। इस धोखाधोगी न भारत सरकार को भी हुरान कर दिया।

१९०७ में 'रॉड इचरूप का अध्यक्षता में एक कमेटी इस देग म रला की उन्नति के लिए रुपए जुटान क प्रश्न पर विचार करन क लिए बठी। इसकी सिफारिश हुई कि 'उम साल रुपया की डरार्ड क मुनाफे' का दर

'दर अतल यह कोई मुनाफा नहीं था। जैसे बाणज के मोर्गे की पुश्ती के लिए करेसी रिजर्व था वैसे ही खादी क नोटो की पुश्ती क

करोड़ रुपया रेलों के मुधार में लगा दिया जाय । पर भारत सचिव इससे भी दो करोड़ घाग गए और उन्होंने निश्चय किया कि जब तक मोड स्टड्ड रिजर्व ३० करोड़ रुपए का नहीं हो जाता तब तक हर साल मुनाफ की आधी रकम रेलों में लगती रहे । उनका विचार था यह था कि रिजर्व ३० करोड़ हो जान पर सारी रकम उस काम में लगा दी जाय । भारतवर्ष में उनके इस निणय से बड़ा अमनोप फला और इसका काफी विरोध किया गया ।

भारत सरकार ने भी २४ जून १९०७ को तार द्वारा निवेदन किया कि रिजर्व का मोना अभी ऐसे काम में न लगाया जाय पर भारत सचिव ने उस पर कुछ भी ध्यान नहीं दिया और डेढ़ करोड़ से ऊपर रुपया रेलों में लगा ही दिया । साथ ही यह कहा कि जो निणय हा चुका है उसी के अनुसार घाग भी उपयोग होता रहेगा ।

भारत सरकार ने एक्सचेंज व गिरन की आगवा प्रकट करते हुए कहा था कि रिजर्व का ऐसा परिस्थिति के लिए अनुपुण रखा जाय । इसके उत्तर में भारत सचिव ने लिखा था कि डरने की कोई बात नहीं व्यापार की वर्तमान अवस्था और अपन पास के साधनों को देखते हुए मैं इस आशका को निमूल समझता हूँ ।

पर जो आसमान इतना साफ नजर आता था उसी में घनघोर घटा का उमडत दर न लगी । १९०७ में यहा अनावृष्टि रही । कुछ महीन बाद अमेरिका में एव भीषण आर्थिक मकट उपस्थित हो गया । यहा से एक्सचेंज बहुत कम हुआ । माग इस समय रुपए की नहीं स्टलिंग की थी क्योंकि कई कारणों से लाग यहा से रुपया विलायत भज रहे थे । एक्सचेंज गिरन लगा फिर भी रुपए का बदल सरकार ने सोना देने की तयार थी न स्टलिंग । बहुत कुछ आ मिलन के माग वह स्टलिंग देने की तयार हुई और भारत सचिव पर उलटी हुडी बचन लगी । एक्सचेंज तब

लिए गोल्ड स्टड्ड रिजर्व । रुपया अपनी नकली कीमत का कुछ हिस्सा अपन साथ लिए बनना था, पर बाकी कीमत की पुन्ती के लिए रिजर्व में सोना रखना जरूरी था ।

तक गिर कर १५,१ पस ले चका था। अब वह ऊपर उठने लगा। सरकार फिर एवमचक्र के लिए मोता रन का भा तयार हा गई। मितम्बर १९०८ तक परिस्थिति मूज चकी था इमलिए अब सरकार ने स्टर्लिंग बचना बन्द कर लिया। नम मकट के कारण विनायक में गाँड स्टड्ड रिजर्व से ८,०५८ ००० पौंड (११ पौंड = १५ रुपया) उठाना पया। जिस मद्रा प्रणाली का फोन्ड कमती न मिफारिग का था अगर वह शक्ती ना ज्योंती एवमचक्र एक हूँ स नाच गिरना लागी की रिजर्व में मोता मितन लगना घोर वे उस विलायत भ्रजकर अपना नता चकान लगत। तहाजा एवमचक्र एक हूँ स नाच न गिरता। पर जो मद्रा प्रणाली यहा प्रचलित थी उसमें एसा कोइ विधान नया था। मोता या स्टर्लिंग दना-न-दना सरकार की मर्जी की बात था। यह भा यान में रगन की बात ह कि गाँड स्टड्ड रिजर्व के पैस से विनायक में स्टर्लिंग कागज खरा कर रिजर्व में रख लिए गए थ। जब स्टर्लिंग की मांग गन गगी तब भारत-मन्चिव न कुछ समय तक उसका पूरा नहीं किया। बाजार का हालत खराब था। भारत-मन्चिव का नर नगा कि वह परिमाण में कागज बचन निकाले ता मालूम नहा दाम कहा तक गिर पडग।

१ अप्रैल १९०६ का भारत-सरकार ने फिर भारत मन्चिव का लिखा कि हपया की ठनाई का मनापा पूरा का पूरा रिजर्व में रखा जाय और इसका काफी बडा हिस्सा मोन में रने। उनके उम पत्र में कुछ अवतरण यहा देने लायक ह —

'रेन का उन्नति हम भी नखना चातन ह पर हमारा विन्वास ह कि दग का भलाद की नष्टि में उमकी मद्रा प्रणाली की मजबूती हम उन्नति में कती ज्यादा जरूरी ह।

जिस समय रिजर्व की मर्ति हूँ लाड कजन की सरकार की इच्छा थी कि यह मोन के रूप में यना रखा जाय। आपके पूर्ववती भारत-मन्चिव ने यह न होन लिया और रिजर्व एम कागज या गिकपुरिणीय में रखा गया जिनका कीमत इपर काफी गिर गई ह।

हम यह नहीं कहत कि मारा रिजर्व सान के रूप में यना रखा जाय यद्यपि यह बतना दना हमारा कतव्य ह कि इस नग में इस बात का जोरा

मे माग ह, पर हमारा यह प्रस्ताव जरूर ह कि रिजव का काफ़ी बड़ा भाग वहा सोने में रखा जाय । यह सच ह कि १६०८ में रिजव के कागज या सिक्कूरिटीज बचन से जो नुकसान हुआ ह उससे अधिक ब्याज स ग्राम दनी हा चुका ह । पर एसा संयोग हो सकता ह कि जिस समय हमारे लिए सिक्कूरिटीज बचना जरूरी हो उस समय साम्राज्य का हित उह न बचन में हो । परिस्थिति इतनी गम्भीर न भी हो ता भी कागज या सिक्कूरिटीज में रखन से रिजव के स्वच्छंद उपयोग म बाधा उपस्थित हो सकती ह । इस विषय पर महा के सभी पत्र लिख लोग सहमत ह कि जिस रूप में यह रिजव इस समय ह वह बहुत खतरनाक ह ।

'अबमर यह पूछा जाता ह कि जब दूसरे देग अपन अपन रिजव को—जो उनकी साल की भित्ति या आधार ह—सोन के रूप में रखत ह तब हम थोड से ब्याज क लिए अपन रिजव का सिक्कूरिटीज क रूप म रखकर इतनी बड़ी जास्तिम क्यों उठात ह ? इस समालोचना म बहुत कुछ सार ह और यह आपके ध्यान देन योग्य ह । हमारा खयाल ह कि अगर आप रिजव में अब और कागज या सिक्कूरिटीज रखना बन्द कर द तो इसका फल बहुत अच्छा होगा ।

पर भारत सचिव को यह स्वीकार न हुआ और उ लान सरकार का उत्तर दते हुए लिखा कि सिक्कूरिटीज बचने की जिम्मेवारी हमारी ह, और चाह जसी भी परिस्थिति हागी हम साग उसका सामना कर लेंगे । इस सम्बन्ध में मि० कोल की सम्मति उठान बनयोग्य ह —

१६०७-०८ में आर्थिक सक्कट का कद्र युवार्थ न हाकर लंदन होता तो भारत सरकार के लिए स्टॉलिंग कागज या सिक्कूरिटीज बचना असम्भव हो जाता । असम्भव से अभिप्राय यह ह कि नाम जो मिलना चाहिए, नहीं मिलता—गरागर जा कुछ देता वही रना पडता ।'

भारत-सचिव के निणय क आग भारत सरकार न मिर भुकाया पर इतना कह बिना उममे न रहा गया कि आपका यह निणय हम सब के साथ स्वीकार करते ह । भारत-सचिव न केवल १ ००० ००० पौंड सान क रूप में रखना मंजूर किया था ।

१६०६ में गोल्ड स्टण्डर्ड रिजव की एक ताखा इस दग म खोली

गई जिसम छ कराड रुपए रखन की व्यवस्था की गई। यह कुछ ऊट पलग-मा बात थी कि जिसका नाम स्वणतिथि हा उसमें रुपए रख जाय। पर भारत मन्त्रि यह भी एक चाल चल रह थ। करेन्सी रिजर्व में यह कानूनी व्यवस्था थी कि लन्दन में एक लक्ष म ज्यादा रकम मान में हा रखी जा सकती थी। मान लाजिए कि रुपया की माग हुई और लन्दन में भारत-मन्त्रि का माना मिला। अगर य रुपए करेन्सी रिजर्व स लिए गए तो वह माना उसी रिजर्व का सम्पत्ति नइ और भारत मन्त्रि को उस सोन के साथ मनमाना करन का अधिकार नहीं था। पर गोल्ड स्टण्डड रिजर्व में कानून का कोई एमा नियत्रण नहीं था। भारत-मन्त्रि जा चाहत कर सकत थ। इसलिए दस रिजर्व का यह गाथा उनक मुभीत क लिए खोला गई। छ कराड रुपए तक रम गाथा में यहा दिण जा सकत थ और इनके वन्दे विनायन में जा माना मिलता उसका भारत-मन्त्रि जिम प्रकार चाहते उपयोग कर सकत थ।

२१ मार्च १९१३ को गोल्ड स्टण्डड रिजर्व डम रुप म था —

	पौंड
सिक्कुरिटीज या कागज (वाजार दर स)	१५ ६४५ ६६९
रकम जा घोड समम क लिए उधार ली गई थी	१,००५ ६६४
	<hr/>
	१६ ९५१ ३३३
वक घाँव इण्ड में रखा हुआ मोना	१ ६२० ०००
	<hr/>
	१७,५७१ ३३३
भाग्नीय गाथा में छ करोड रुपए १६ पैस की दर से	४,००० ०००
	<hr/>

२२ ५७१ ३३३ पौंड

उस समय गोल्ड स्टण्डड रिजर्व-सम्बन्धी नीति यह थी कि जब यह २४ ००० ००० पौंड हो जाय तब इस विषय पर फिर स विचार हो कि रुपयों का इस्तेाई का मुनाफा और भू स होनवाला घामना सब की-सब इस रिजर्व में जमा की जाय या नहीं।

२१ मार्च १९१३ की दपर करेन्सी रिजर्व का यह हाल था कि पलन में कुल नोट ६८ ६७ करोड रुपए क थ। इनकी पूना के लिए रिजर्व



में य चीजें था —

भारतवप म रुपए	१६ ४५ करोड रुपए
' सोना	२६ ३७ " "
लन्दन में सोना	६ १५ " "
लन्दन में सिक्कूरिटीज	४०० " "
भारतवप में	१० ०० " "

६८ ९७ करोड रुपए

१८६२ में चलन म कुल नोट ३ ६९ करोड थ । १८९० में मह तादाद १५ ७७ करोड हा चली थी । नोटा के प्रधार में विशय वडि चादी की टक्काल बढ हो जान के बात हुई । इधर उनकी लोकप्रियता बढान के लिए विशय प्रबध किया गया और उनसे सम्बध रखने वाले विधान में कई सगोधन हुए ।

१८७५ से पहले रिजर्व में कुछ सोना रहना था पर चादी क मुकाबले जब सोना महगा हो चला तब उसका रिजर्व में आना बत हो गया । १८९३ में सोन और रुपए के बीच की दर बाधी गई और सरकार सोन के तले रुपए देने को तयार हुई । पर चूकि सोन की कीमत बाजार में ज्यान्त थी कोई रुपए लेने के लिए सरकार के पास अपना माना न ले जाता था । १८९८ म जब एक्मर्सेज १६ पम हो गया तब लोग सरकार को सोना देकर उसम रुपए देने तग । करसी रिजर्व में कम प्रकार सोना इकठ्ठा होने लगा । १९०० के आरम्भ में प्राय ७॥ करोड रुपए का सोना वहा इकठ्ठा हो चुका था ।

सोने को चलन में लाने के लिए कुछ प्रयत्न किया गया पर वह विगय सफल न हो सका । उस समय भारतवप के कुछ हिस्सों में अकाल पडा हुआ था और आर्थिक अवन्या सोने के चलन के अनुकूल नहीं थी । पर जब सोना चलन मे लीन कर सरकारी खजाने में आन लगा तब भारतवप में उसक चलन क विरोधी इसका यह अय लगाने लग कि यहाँ के लोग गरीब हान के कारण मान का व्यवहार नहीं कर सकने, उनके लिए रुपया ही विगय उपयुक्त ह, इत्यादि । वास्तव में उस साल

यहाँ का व्यवस्था मान के चलण व प्रतिकूल थी। इसके बाद फिर कभी सरकार की ओर से सोने को चलण में लाने के लिए कोई खास उद्योग नहीं किया गया।

भारत में करेसी रिजर्व का सारा सोना इसी देश में रहता था। १८९८ में अस्थायी रूप में कुछ सोना लाने में रखा गया। पर यह व्यवस्था कुछ ही समय बाद स्थायी कर दी गई। कारण यह बताया गया कि वहाँ चांदी खरीदने के लिए सोना खरीदना जरूरी था। बाद में यह विधान बना कि करेसी रिजर्व का सोना सरकार लाने में या इस देश में जहाँ चाह रख सकता थी। भारत मंत्रिषद इस रिजर्व का भी काफी सोना लाने में रयन लग।

१९०५ के विधानद्वारा सरकार का यह अधिकार लिया गया कि वह करेसी रिजर्व का एक निश्चित भाग स्टैबिलिज्ड मिन्स्युरिटीज में रख सकती है। पहले इसकी हद दो करोड़ रुपए थी। १९११ में वह चार करोड़ कर दी गई। सारा हिस्सा जो मिन्स्युरिटीज में था और लाने में रखा जा सकता था १४ करोड़ था।

गोल्ड स्टैण्डर्ड रिजर्व और करेसी रिजर्व के अलावा भी सरकार के हाथ में कुछ रुपए रहते थे, जिसे सरकारी रोकड़ कहते थे। यह रोकड़ भारतवर्ष और लाने वाला जगह रखी जाती थी।

व्यवस्था यह थी कि लाने में कम-से-कम ४०००००० पौंड रहें और भारतवर्ष में कम-से-कम ८०००००० पौंड। नए साल के आरम्भ में भारतवर्ष में प्रायः १००००,००० पौंड रखना पड़ता था। ध्यान रख मिला कर १६०००,००० पौंड। वास्तव में अब कहाँ कितनी रोकड़ थी यह नीचे की तालिका में स्पष्ट होगा —

३१ मार्च	लाने में पौंड	भारतवर्ष में पौंड	कुल जोड़ पौंड
१९०८	४६०३०८६	१०,८५१४१३	१७३५८,६९९
१९०९	७६८३८६८	१०००५४८३	१८०१९,३८१
१९१०	१०३९०९४	१०२६५४२८	२५००४,५२०
१९११	१६,६६६६६०	१३५६६०००	१००६३,९१०
१९१२	१८३६०,०१३	६२,२३६,६८६	३०,६६६,७०२

स्पष्ट है कि रोकड़ बाकी जितनी होनी चाहिए थी उससे कहीं ज्यादा थी और इसका कारण यह था कि लन्दन का हिस्सा बढ़ते-बढ़ते प्रायः तिगुना होन लगा था। जहाँ ४ ००० ००० पाँड पर्याप्त था वहाँ १८ ०००, ००० पाँड से भी अधिक जमा रहता था।

आखिर इतना रुपया आता कहाँ से था ? इसका उत्तर है—बजट की बचत से। हर साल 'घय से आय अधिक' हानी और जो बचत होती वह लन्दन मंगा ली जाती।

१८६८-९६ से बचत होना गुरु हुआ था और प्रथम महाममर के आरम्भ तक होता ही गया। पहले दस वर्षों में जो बचत हुई वह ३७½ करोड़ रुपए थी। १९१० और १९१४ के बीच २० करोड़ की और बचत रही। यह भारत-सरकार के बजट की बात है। प्राणिय सरकारों की बचत इसमें शामिल नहीं है।

श्रीयुक्त गोखले के बजट-सम्बन्धी भाषणों में सरकार की इसलिये काफी निंदा मिलती है कि वह हर साल टक्स के रूप में जरूरतसे ज्यादा लोगों से वसूल करती और अधाध-ध खच करन के बाद जो कुछ बच रहता उसे शिक्षा और स्वास्थ्य सम्बन्धी कामों में न लगा कर और कामों में लगा देती। बजट बनाते समय घाय का तखमीना जानबूझ कर कम किया जाता। खच पर किसी प्रकार का नियंत्रण था ही नहीं। यूरोपियन कर्मचारियों की सख्या बढ़ती ही जाती थी पर यह सब होना पर भी जख बचत होती और सरकार से उनका कुछ हिस्सा शिक्षा प्रचार या स्वास्थ्य सुधार जैसे कामों के लिए मांगा जाता तब उत्तर मिलता कि इसमें से कुछ भी मिलना असम्भव है।

श्रीयुक्त गोखले ने अपने एक भाषण में दिखाया था कि १८६८-६९ और १६०८-०६ के बीच भारत-सरकार का खच—समान की तुलना समान में करन पर—बास करोड़ रुपए बढ़ गया था। इस बीच में कुछ टक्स माफ कर लिए गए थे सही पर उसका असली कारण यह था कि एकमर्चेज ऊँची होने के कारण विलायत जानेवाली रकम में काफी बचत होने लगी थी। ५ मार्च १६१० को श्रीयुक्त गोखले का बड़ी व्यवस्थापिका सभा में एक भाषण हुआ, जिसमें उन्होंने कहा —

प्राय छ साल से मे लगातार कोशिश करता आ रहा हूँ कि सरकार को जो बचत होनी है वह प्रांतीय सरकारों को सफाई जैसे काम पर खर्च करने के लिए दे दी जाय। दो साल की बात है कि तत्कालीन अध्यक्ष मर एडवर्ड बकर न्यूनिंसिपलिटिया द्वारा सफाई पर खर्च होने के लिए करीब पचास लाख रुपए दिए थे। मेरी सारी अपीलें का कोई नतीजा निकला तो वही। उसका छोटा-बड़ा तो कहना होगा कि मेरा प्रयत्न निष्फल रहा।

सरकार का कहना था कि भारतवर्ष जस जस में प्राय-व्यय का तन्मयीना बहुत कठिन काम है—हमें बड़ी सावधानी से काम लना पड़ता है इस सावधानी के कारण अगर बचत रह जाती है तो हम इसके लिए अपराधी नहीं ठहराए जा सकते पर उम बचत का उपयोग सबसे पहले बजट के लिए होना मनासिब है। बजट बनाने का काम विलायत में पड़ता, इसलिए यह रकम भी वहीं भेजी जाती। अगर कुछ समय के लिए इसकी आवश्यकता नहीं भी हुई तो कहा जाता कि इस व्यापारियों को उपहार देकर कुछ ब्याज उपजाया जा सकेगा।

लन्दन में भारत-सचिव का रुपया बैंक धाव इंग्लैंड में जमा रहता था। यह इस बैंक में कम-कम पांच लाख पौंड बराबर रकम को बाध्य था। इसलिपत में वह रखन इससे ज्यादा था। इस रुपए पर वह कुछ भी ब्याज पान के हक्कार नहीं थे। पर यह बैंक इंडिया ऑफिस (भारत-सचिव का विभाग) का रुपया पसा जमा रकम के अलावा भी उसका कुछ काम कर लिया करती—इसके लिए इस जो कमीशन या पुरस्कार मिलता वह साल में ६६ ००० पौंड होता था। सब मिला कर इस बैंक को इंडिया ऑफिस से साल में प्राय ८६ ००० पौंड अर्पित १० ६०,००० रुपए का लाभ था। चेम्बरलेन-कमीशन के सामने इंडिया ऑफिस की धीरे से धीरे धाले गयाहो न भी स्वीकार किया कि यह रकम बहुत बड़ा धी और भारत वर्ष को यह सोना बहुत महंगा पड़ रहा था। पर उनका कहना था कि इंडिया ऑफिस साधारण है। कानूनन यह दूसरी बैंक से अपना काम करती नहीं सकता धीरे जब बैंक धाव इंग्लैंड में अनुमति-विनय करता है कि कमीशन प्रदाए सब बैंक साफ इनकार कर देती है। वास्तव में बैंक धाव

इंग्लण्ड इडिया आफिस की बवसी का नाजायज फायदा उठा रही थी।

इडिया ऑफिस लन्दन में रुपया उधार देने का काम करता था। कहा जाता है कि इस विषय में वह ईस्ट इडिया कम्पनी की बताई हुई राह पर चल रहा था।

इडिया ऑफिस की ओर से एक खास प्लान लेन देन के इस काम की देखता था। ऐसे लोगों की एक लिस्ट रखी जाती जिन्हें रुपया उधार देने में कोई जोखिम नहीं थी। अगर कोई व्यक्ति या फर्म अपना नाम इस लिस्ट पर चढाना चाहता तो उस दररवास्त करनी पडती। यह दर खास्त इडिया ऑफिस की फाइनेंस कमेटी की सिफारिश हो जाने पर मजूरी के लिए भारत सचिव के पास जाती। जिनकी साख ऊंची होती है ही इस लिस्ट पर आ सकते थे।

जिस फाइनेंस कमेटी का यहा जित्त किया गया है उसके चेयरमन या अध्यक्ष इधर कुछ वर्षों से लन्दन के लाड इचक्केप या सर फलिवस गुस्टर जैसे बड़े व्यापारी होते आ रहे थे। लेन-देन के काम में इस चेयरमन का बहुत बड़ा हाथ रहता और भारत सचिव प्रायः इन्हीं के कहन के अनुसार चलते थे।

बज मिक्चुरिटीज पर लिया जाता था पर कुछ खास बकों को बिना जमानत के ही दे दिया जाता। बक भाव इंग्लण्ड की ओर से गवाही देने वाले मि० कोल न चेम्बरलेन कमीशन से कहा था कि उनके यहा यह प्रथा नहीं थी और बड़ी-से-बड़ी बक को भी मिक्चुरिटीज देने पर ही रुपया उधार मिल सकता था। बज लेनेवालों में दो बनी बकें एसी थीं जिनसे लॉड इचक्केप और सर फलिवस गुस्टर स्वयं सम्बद्ध थे। उस समय ऐसे ममालाचकों की कमी नहीं थी जिन्होंने इन दोनों पर पम्पात का दोषा रोपण करते हुए यह कहा कि इनका एक हाथ बज देना था और दूसरा लेता था। पर लॉर्ड इचक्केप ने अपनी और सर फलिवस गुस्टर की सफाई में कहा कि उन्होंने उन बकों के साथ जरा भी रियायत नहीं की थी।

इण्डिया ऑफिस के दलास मि० होरेरा स्कॉट थे। उनसे पहले उनके पिता इस पद पर रह चुके थे। ब्याज से जो आमदनी होती उसपर पांच प्रतिशत के हिसाब से मि० स्कॉट को दलासी मिलनी थी। १९१०-११

में उनकी दलाली १६ ००० पौंड अर्थात् २४० ००० रुपए हुई थी। इस पर टिप्पणी करते हुए प्रसिद्ध अर्थशास्त्री केस ने लिखा था— जब पहले पहल यह मालूम हुआ कि बड़ लाट का छोड़ भारत सरकार की धार से सबसे अधिक वेतन का पुरस्कार पानवाला इण्डिया आफिस का यह दलाल है तब लोग आश्चर्य चकित हो गए। मजा यह कि इस प्लान को अपना पूरा समय इण्डिया आफिस के काम के लिए ही लगाया पड़ना उसका अपना भी व्यवसाय है, और वह उसे भी दखता भाजता है।

मान्योलन उठान पर मि० स्कॉट की प्लानी घटा हो गई। फिर भी इससे उसकी आय आठ हजार पौंड अर्थात् १२० ००० रुपए के लगभग थी। भारत सरकार की ओर से स्कॉट (कागज) की धरान विक्री करने के लिए उन्हें १४०० पौंड अलग मिलना था। समझावना का कहना था— और बहुत ठीक बतना था कि घटा प्लान पर भी इण्डिया आफिस के प्लान की प्लानी बतल ग्याना थी। उन-उन बगोड़ों का होता था और व्याज का दर बाजार का हानत पर निर्भर करनी थी। दलाल की काय कुशलना से धारमनी से बतना ग्याना पर नया पड सकता था कि उसे इस पमान पर पुरस्कार दिया जाय। पर इण्डिया आफिस एमी सलाह पर अब ध्यान देनवाला था ?

भारतवष का जो रुपया लान के व्यापारिया को इस प्रकार उधार दिया जाता वह कभी कभी २७ फराइ के बगैव पहुँच जाता था। व्याज की दर कभी कभी इतनी नीची होनी कि बक बाव इलण भी हैरान हो जाती। इस बात को सब स्वीकार करते थे कि लान का मगपा और लान का व्यापार दोनों का इण्डिया आफिस की इस महाशनी से बहुत लाभ था।

पर भारतवर्ष का रुपया भारतवर्ष के काम न हो सकता था। यही सरकार की नीति इतनी संकीण थी कि बड़ी-मे-बड़ा बक के लिए भी उधार लेना सामग्य नहीं था। १८९६ और १९०६ के बीच कुछ घंटे बार बेकी ने सरकार से बज्र लिए— प्रत्येक बार २० से ४० लाख रुपए के बीच। १९०६ और १९१२ के बीच लेन-दान का काम हुआ ही नहीं। व्यापारियों का यही प्राय उँचे व्याज पर रुपया मिलना। ८ प्रतिशत

यहां के लिए साधारण दर थी। जब कभी लोग सरकार से कहते कि रुपया सस्ता बरके वाणिज्य व्यापार और उद्योग घघा की उन्नति में सहायता पहुँचाइए तब उन्हें उत्तर मिलता कि यह सहायता पहुँचाना हमारा काम नहीं। बाजार को अपने परो पर खड़ा होना चाहिए और भारतीय पूँजी ऐसे कामों में लग सके इसका प्रबन्ध करना चाहिए।' भारतवर्ष का धन लदा के लिए था भारतवर्ष के लिए नहीं।

भारत सचिव भारत सरकार पर जो हुण्डी किया करते वह वॉसिल बिल कहताती थी। भारतवर्ष में आयात (इम्पोर्ट) की अपेक्षा यहां से निर्यात (एक्सपोर्ट) अधिक हान के कारण स्टैलिंग की अपेक्षा रुपए की मांग प्रायः अधिक रहती थी। रुपए चान्नेवाले लोग विलायत में भारत सचिव को सोना या स्टैलिंग देकर उसके भारत सरकार के नाम हुण्डी ले सकते थे और हुडी बनाकर उसके रुपए कर सकते थे। इसके लिए कायदा यह था कि रुपए चाहनेवालों का टांडर देना पड़ता—अर्थात् यह बताना पड़ता कि वे किस दर से उसे खरीदन को तयार ह। फिर भारत सरकार की धोर से यह सूचित किया जाता कि किसकी दर मजूर हुई है और किसको कितने की हुण्डी मिलेगी। तार-द्वारा जो हुडी की जाती उसके लिए भारत सचिव १५½ पेंस से नीची रेट को किसी भी हालत में मजूर करने को तयार नहीं थे।

उस समय रुपए प्राप्त करने के दो तरीके थे एक तो यह कि भारत सरकार का यहां माना लिया जाय और एक्सचेंज-दर से बन्ने में रुपए लिए जाय दूसरा यह कि भारत-सचिव से हुडी खरीदकर उसके रुपए कर लिए जाय।

विलायत से या दूसरे देश से सोना लान में कुछ खर्च जरूरी था। विलायत से यह खर्च (अहाज का भागा ब्याज की हानि और धीमा) १६ पेंस (सोना) पीछे २ पेंनी पड़ता था—अर्थात् सोना लानवाले को एक रुपए की कीमत १६½ पेंस पड़ती थी। एसी हालत में उस अगर हुडी द्वारा एक रुपया १६½ पेंस में ही मिल जाता तो वह जब सोना खरीदने और यहां भजन वाला था? भारत सचिव की नीति बराबर यह रहती थी कि कम-से-कम सोना भारतवर्ष जाय। इसलिए यह इस

हुण्डी की दर प्रायः इतनी नीचा रहते थे कि लोग रुपय के लिए सोन के बजाय इसी हुण्डी का उपयोग कर । उह विलासत में अपन काम के लिए रुपए पस की जरूरत हा या न हा वह हुण्डी बनत ही रहत थे बल्कि उहोन यह एलान कर गवा था कि १६२२ पस की दर स ता वाइ जितने की चाहे, हुण्डी ले सकना ह । भारत सचिव सोन का लन्तन स यहा माना राक कर हा सन्तुष्ट नहा थ । और दगा स भा जब सोना यहा मान लगता तब वह लनेवाल को एसी दर से हुण्डा बच दत कि उसक लिए सोना लन्तन भज दना और हुण्डा बुनाकर यहा रुपए कर लेना अधिक लाभदायक हा जाता ।

भारत सचिव की ओर स कहा जाता कि आधिर सान को एक न एक दिन लदन माना हा ह — रुग्णा की खानिर चाणी खरीदन के लिए या एक्सचेंज को गिरन में बवान के लिए — फिर क्या उसके जान आन में पसे का अपभ्यय हान लिया जाय ? वहतर यह ह कि सोना लदन में ही बना रहे और उसे उधार कर भारत सचिव कुछ व्याज भी उप जात रहे । इसका जवाब य था —

(१) रुपयो के लिए चाणी खरीदन का जरूरत इसलिए पडती थी कि हमारे शामक हम वह सच्चा गोल्ड स्टण्डड (सान का मान) देने को तैयार नहीं थे जिसकी सिफारिश फोर्डर-कमटी न की थी और जिस देना स्वयं भारत-सचिव न स्वीकार कर लिया था । अगर चलन में सोन के सिक्के होत तो चांगा के इन सिक्को का न एसा भावश्यकता होनी, न एसी बहुतायत ।

(२) एक्सचेंज का गिरना बहुत दूर का बान या सम्भायना थी । भारतवर्ष में इम्पोट स एक्सपोर्ट ज्यादा हान के कारण स्टेलिंग स रुपए की माग ज्यादा रहता ह । कभी कभी साल एसा सयाग हा जाता ह कि एक्सपोर्ट स इम्पोट बड जाता ह और स्टेलिंग का माग बड जान के कारण एक्सचेंज की गगा उलटी बहने लगता ह । पर एस धरमर बहुत कम हुए हे । अधिकारियों को एक्सचेंज के गिरने की फिक ता इतनी थी कि उसको रोकन के लिए साल-ब मास लन्तन में साला इकट्ठा करत जाते थे । पर महासमरजसी परिस्थिति का उह कारी भा बिन्ता नहा ।



थी, जिसमें न सोना मिल सकता था न सिक्यूरिटीज या कामज ही बचे जा सकते थे ।

(३) व्याज तो भारतवप में भी उपजाया जा सकता था, बल्कि यहाँ इसका गुजाइश बिलायत से ज्यादा थी । पर जहाँ मुद्रा प्रणाली की वास्तविक मित्ति या आधार का प्रश्न हो वहाँ तो सब से पहल यह देखना चाहिए कि वह सुरक्षित किस प्रकार रह सकेगी । उसके सुरक्षित रहने से ही हम सुरक्षित बन रहेंगे । थोड़े से व्याज के लिए इतनी बड़ी जोखिम उठाना वहाँ का बुद्धिमत्ता थी ? पर लन्दन में साना इम्लट की भलाई के खयाल से रखा जा रहा था—भारतवप को व्याज के रूप में कुछ लाभ कराने के उद्देश से नहीं ।

लन्दन में चानी खरीदने का कारण लन्दन का पक्षपात था । वहाँ का बाजार बहुत ही छोटा है । चार दलालों के गुट या टाली को लन्दन में चांदी का बाजार समझना चाहिए । भारतवप में लोगों की मांग थी कि चांदी के सिक्के टूट कर जाय और उनपर विचार होने के बाद चांदी बम्बई में खरीदा जाय । सर गापुरजी भरोचा के कथनानुसार यह नगर संभवतः संसार में चांदी का सबसे बड़ा बाजार था । पर इंडिया आफिस का लन्दन से बाहर चानी खरीदना मजूर न था । सर गापुरजी चम्बरलैन कमांडर के मन्वर थे । उन्होंने एक गवाह की जिरह करत हुए कहा था कि १९०४-०५ में कन्ट्रोलर-जनरल में मुझे चानी का एक बड़ा फाइल मिला पर भारत सचिव ने भाग के लिए एसी खरीदगी की मनाही कर दी । पारसाल लन्दन में जिस भाव धारणा खरीदा गई उससे बम्बई में दो ऐंसे सस्ता खरीदी जा सकती थी । तमाशा यह था कि लन्दन में जा चांदा खरीदी गई थी वह भारतीय व्यापारियों की थी । पर भारतवासी भारत-सरकार को भारतवप में अपना चानी न बच पाते थे ।

एक बार प्रायः ९ करोड़ रुपए की चानी लन्दन में समुयल मोट्यू कम्पनी (दलाल) की मार्फत खरीदी गई । सि० मोट्यू—जो बाद में भारत-सचिव हुए थे, उस समय इंडिया आफिस में अड्डर सेक्रेटरी थे, और उसी कूल-परिवार-में थे जा उस कम्पनी का मालिक था । उनका विपक्षिया न इस चीज को देखकर हाउस ऑफ़ कॉमन्स में काफी हो-हल्ला

मचाया और किन्ती हा एसी बाता पर प्रकाश डाला जिनसे पक्षपात का सन्देह हुए बिना न रह सकता था ।

सोन का उत्पादन इधर काफी बढ चला था और यह वृद्धि इस प्रकार हुई थी —

	टन
१८६०	१७७
१८६५	२९०
१९००	३७७
१९०५	५७७
१९१०	६७४

सोन में दाम भी बढ चले थे और बढत ही जा रहें थे । भारतवर्ष में भी दाम ऊंचे हो रहे थे । एसी अवस्था में जसा कि पिछले अध्याय में कहा जा चुका है — लोग चाणू को स्वयमिद्ध मुद्रा बनाने का पक्षपाती न रह गए । चेम्बरलैन-कमान्डर के सामने सिर्फ एक गवाह न यह भाग पण का था कि अन्तर्राष्ट्रीय समझौता बनके इस देश में चाणू को उसकी पुरानी जगह फिर न दी जाय ।

सोन में दामों की अयोग्यता का कारण भी कुछ विस पत्रों का—गामकर श्रीगोखल का—मन यह था कि रुपए चलण में आवश्यकता से अधिक थे । उनका कहना था कि 'सोने के सिक्के, आवश्यकता न रहने पर, निकल जाते हैं (जम निर्यात के रूप में), पर रुपए निकल नहीं सकते उह गलत है लाभ नहीं भुगतान के लिए उन्हें विशेष भजना समभव नहीं । या तो वे लौट कर बका में या सरकारी खजाने में जा जाय या चलण में बने रहेंगे । पर इस देश में बक-व्यवसाय की सभी व्यवस्था उन्नति नहीं हुई है, इसलिए रुपए जल्दी लौटने नहीं सोगे के ही पास बने रहने हैं और समा पर अपना असर डालते रहते हैं । इस विषय का अनुमान करने के लिए १९१० में एक छोटी सी कमेटी बनी थी जिसके अध्यक्ष १ मि० व० एत० दत्त थे । इसकी राय यह ठहरी कि रुपए की बढि आवश्यकता के अनुसार ही हुई थी और उनकी बढि एसा बहुतायत न थी । हा बका में उधार मिलने से अब

बड़ी सङ्कलियत हो चली थी, और हमका असर दामो पर बेशक पडा था।

चेम्बरलन कमीशन की सिफारिशो का जिक्र करन से पहले परिस्थिति का सिंहावलोकन कर लेना आवश्यक ह —

(१) इस समय सावरेन (गिन्नी) और रुपया दोनों ही चलण में थ, और लाग दोना को ही लेने-देने को बाध्य थ।

(२) सरकार रुपए क बदले सोना देने को कानूनन बाध्य नहीं थी पर एब हए तक वह सोना देन को तयार रहती थी।

(३) सरकार सावरन के बदले १६ पस की दर स रुपया देन को बाध्य थी, पर धातु के रूप म सोन के बदले नहीं।

(४) भारत-सचिव १६½ पेंस की दर से चाहे जितन की हुण्डी भारत-सरकार के नाम बेचने को तयार रहत थे। भारत-सरकार भी भारत-सचिव के नाम उलटी हुण्डी बचना स्वीकार कर चुकी थी पर १५¾ पेंस से नीची दर स नहीं। एसी हालत में एक्मचेंज न तो १६½ पेंस से ऊपर जा सकता था, न १५¾ पेंस स नीच।

(५) चलण म विशपता रुपया की थी। करेंसी रिजर्व और सर-वार क हाथ के रुपयो को छोड बाकी रुपयो का चलन १९१२ में २०० करोड कूता गया।

सान के सिक्को का प्रचार बन्द रहा था। ३१ मार्च १९१३ को समाप्त होनवाले १२ वर्षों में प्राय ९० करोड के सावरेन सावजनिक चलण में गए। इन बारह वर्षों में चांदी के रुपए भी प्राय ९० करोड ही ढले। सोन के चलण का रफ्तार १९०९ के बाद तजी स बढन लगी थी। ३१ मार्च १९०९ और ३१ मार्च १९१३ के बीच ४५ करोड के सावरेन सावजनिक चलण में गए। यह तो नहीं कहा जा सकता कि सब के-सब सावरेन चलण में मौजूद थ पर चेम्बरलेन-कमीशन की रिपोर्ट न भी यह बात स्वीकार की थी कि लेन-देन के काम में सावरेन अधिक भा रहा था—खास कर बम्बई, मंग्युवन प्रांत, पंजाब और मद्रास के कुछ हिस्सों में।

सोन का यह प्रचार या उपयोग हमारे शासको की अनिच्छा हाते हुए भी होन लगा था। हमारे शासन-गृन्थर की तो बराबर यह चप्टा

रहती थी कि सोना लाने में भारतवर्ष आन न पावे । पर फिर भी कुछ न कुछ साना आना ही रहता था और करमा के रूप में सावरेन के उपयोग का बढ़ना कुछ भी आश्चर्यजनक नहीं था ।

त्रिस विगुद्ध गान्ड स्टण्ड का मुक्ता-मान की फौलर कमरा न गिरा रिश की थी वह हमें न दिया गया । उसकी जगह दिया गया गान्ड एक्सचेंज स्टण्ड जिसकी मिफारिश मि० लिण्टस ने की थी और जो उस समय अस्वीकृत कर दिया गया था । इस स्टण्ड के अनुसार मूल्य का मान या मापक साना हा था—एक रुपया वास्तव में ७५३३४४ ग्रन सोन का प्रतीक या प्रतिनिधि था—पर हमारा अपना काम साने का सिक्का नहीं था और रुपए का मूल्य सरकारी व्यवस्था पर निर्भर करता था । सान का रिजव यहां से सान समुद्र पार विलायत में रखा दिया गया था और भारत-मन्त्रि अपना नाति रानि एसा रगत था कि कम से कम सोना भारतवर्ष आन पावे ।

भारत-सरदार का अपना मत था सान मन्त्रि से भिन्न था पर वह परतत्र होन के कारण लावार थी । भारत-मन्त्रि लान के पूजीपतिया के हाथ की कठगुनली था । उह वही करना पडता था जो इंग्लण्ड के हिन के अनुकूल था निमसे इंग्लण्ड का भन्तर् निर्दिचन था ।

१७ अप्रिल १९१३ का एक रायल कमीशन भारतीय मुद्रा प्रणाली के हर पहलू पर विचार करन के लिए नियुक्त हुआ । इसमें अध्यक्ष थे मि० फास्टन चम्बरलन जो वाश में भारत-मन्त्रि और परराष्ट्र-मन्त्रि हुए थे । कमीशन के दूसरे मन्बरा में साड फवर सर गापुरी भरावा, सर फ्रान्सेट कबल और अध्यापक वन्स थे । इसक सेक्रेटरी थे सर वसिल ब्लेनेट जो वाश में भारत के अय सन्स्य हुए ।

पिछली कमिटिया की तरह इस कमीशन की भी साग कारवां सलन में ही हुई । इसकी रिपोर्ट २४ फरवरा १९१४ का ब्रिटिश सरकार के पास भेजी गई । इसक एक मन्बर सर जम्म बाबा ने सान के प्रचार के सम्बन्ध में बीरो से अपना मतभंग प्रकट किया था । रिपोर्ट में अध्यापक (वतमान सांड) बेम का रिजव था जना सरस्था पर एक ना था ।

कमीशन ने अपनी रिपोर्ट में यह स्वाकार किया कि कितनी हा बाडा

में वस्तुस्थिति फौलर कमेटी द्वारा स्वीकृत स्कीम में मिला थी। यहाँ की मुद्रा प्रणाली का आधार था ता मि० लिण्डस का प्रस्ताव जो कमेटी द्वारा अस्वीकृत हो चुका था पर कमेटी के बताए हुए मांग का अवलंबन न करने के लिए कमीशन न अधिकारियों का किसी प्रकार की निंदा नहीं की बल्कि उम्मा कहना था कि जो कुछ हुआ था अच्छा ही हुआ था।

कमीशन को सिफारिशों में कुछ तास बातें य थी —

(१) यह निश्चित हो जाना चाहिए कि भारतीय मुद्रा प्रणाली का लक्ष्य क्या है। १८६८ की कमेटी का राय थी कि इस दश में सोने के मान की सफलता के लिए सोने का सिक्का आवश्यक है। पर पिछले १५ वर्षों के इतिहास से इस धारणा की पुष्टि नहीं होती।

(२) चरण में सोने के उपयोग को प्रोत्साहन देना भारतवर्ष के लिए हितकर न होगा।

(३) सोने के सिक्के की यहाँ ढलाई की कोई आवश्यकता नहीं। पर भारतीय जनता सचमच इस चाहती है और भारत सरकार इसका खर्च करने को तयार है ना सिद्धांततः कोई आपत्ति नहीं हो सकती। हाँ जो सिक्का ढाला जाय वह भावरेण होना चाहिए।

(४) एमसचज की पुश्ती के लिए रिजर्व में काफी सोना और स्टैलिंग रहना चाहिए।

(५) गोल्ड स्टैण्ड रिजर्व की अभी कोई हद नहीं बांधी जा सकती।

(६) रुपया को ढलाई से जा मुनाफा हो वह पूरा का पूरा इसी रिजर्व में जमा किया जाय।

(७) इस रिजर्व में इस समय जितना सोना रखा जाता है उससे अधिक रखने का जरूरत है।

(८) गोल्ड स्टैण्ड रिजर्व बढ़ाने में ही रहना चाहिए।

(९) सरकार का माफ़ तौर से यह जिम्मेवारी अपने ऊपर ल लेनी चाहिए कि जब कभी स्टैलिंग का भारतवर्ष में मांग होगी तब वह भारत सचिव के नाम १५३९ पेंस की दर से ढूँडी बचन को तयार रहगी।

(१०) भारत-सरकार के हाथ में जब कभी बचत का रुपया है तब उसे प्रसिद्धता बचा को उधार देने का नियम सा कर लेना चाहिए। किन्

गनों पर रूपया उधार दिया जाय यह निश्चित हो जाना चाहिए ।

(११) इस समय हम किंसा स्टेट या सेण्ट्रल (कन्द्रीय) बैंक का स्थापना के पक्ष या विपक्ष में कुछ भी नहीं कह सकें पर इतना हम ध्वन्य कहेंगे कि यह विषय मनुष्यवृत्त - और इस पर विनियमों की एक छोटी-सी कमटी द्वारा विचार होना का आवश्यकता है ।

इण्डिया फाइनस का फाइनेन्स कमटी के दो चयनित और एक मेम्बर एसी बनें स सम्बन्ध रहे चुके थे अतः इण्डिया फाइनस में इनके का सराकार रहता था । यह बात ममालाचका द्वारा आपत्तिजनक बतलाई जा चुकी थी । इसपर कमिशन ने धपना राय यह दी कि एक सम्बन्ध के कारण किसी प्रकार का पक्षपात ना साबित नहीं होना पर भारत-सचिव का चाहिए कि जहाँ तक हो सके एमा ममालाचना या गिकायत के लिए कोई मौका ही न दे ।

इण्डिया फाइनस के दस्तावेज का त्रिम अनुन पर खाली हो जाता था उसका कमिशन समझने न कर सका । उसकी सिफारिश थी कि कुछ समय बाद इस प्रश्न पर फिर से विचार किया जाय ।

बैंक ऑफ इंग्लैंड के विषय में उमन खान खान इतना भी कहा कि हम लोग के विचार में इण्डिया फाइनस और इस बैंक के सम्बन्ध का नई भित्ति पर रखने का समय था गया है ।

कमिशन की रिपोर्ट सरकार के विचाराधीन हो जा कि अगस्त १९१८ में प्रथम महाममर छिड़ गया । अब यह निश्चय हुआ कि जब तक पानि स्थापित नहीं होती तब तक कारवाई मुसतबा रहे ।

## लेने के देने

महासमर के कारण भारतवर्ष का जा अधिक लाभ होना चाहिए था नहीं हुआ बल्कि गहरी हानि हुई। परतंत्रता के फलस्वरूप उसे लेने के देने पड़ गए।

भारत में हमारे व्यापार का धक्का सा लगा और काम-काज बहुत कम हो चला। एक्सचेंज में कमजोरी आत लगी जिमको रोकने के लिए सरकार ने भारत सचिव के नाम उलटी हुण्डी योजना शुरू किया। लोग वकील स अपन अपन रूपए उठाने लग। पहले दो महीने में ही सेविंग्स बैंक डिपॉजिट में छ करोड़ की कमी हो चली। सितम्बर से अक्टूबर १९१४ तक दो करोड़ की और कमी हुई। बाद में परिस्थिति सुधरी और डिपॉजिट बढने लग। शुरुआत में घबराहट के भार लागे नोट भी तजा से भुनाने लग। ३१ जुलाई १९१४ और ३१ मार्च १९१५ के बीच नोटों का चलण प्रायः दस करोड़ कम हो चला। पर इसके बाद अवस्था सुधरने पर नोटों का चलण फिर बढने लगा और बढ़ता ही गया। जुलाई १९१४ के आत में सोने का भाग बढ चली और सरकार के हाथ से प्रायः १ करोड़ ००० ००० पाँड का साना निकल गया। ५ अगस्त का सरकार ने साना देना बन्द कर दिया। उसके बाद नोटों के बाल सिर्फ रूपए मिल सकते थे।

भारतवर्ष की करेन्सी और एक्मचेंज पर महासमर का क्या असर हुआ उसे बताने से पहले यह बताना आवश्यक है कि इंग्लैंड में अन्न साना और स्टर्लिंग दाना दो चीजें हैं चली उनकी समानता जाता रही। हमारा जितना धन विलायत में जमा था और जिस हम अरावर साना मानते आते थे, सब स्टर्लिंग कागज रह गया।

इंग्लैंड तथा अन्य मित्र-राज्यों का इस समय भारतवर्ष से बहुत कुछ माल मिल सकता था और वह मिलने भी लगा।

एकमपाट के भाग में कई कठिनाया थी। जहाज कम मिनत य  
 आर्थिक प्रतिबंध के कारण जिनना माल जा सकता था न जा पाता था।  
 फिर भी एकमपाट में कमी नग हुई बन्धि १९१६ १७ में बढ़ि हा लोन  
 लगी। दूसरी धार बाजार में कम माल आन गया क्याकि जमना आम्ब्रिया  
 हगरी जम दगा में ता कुछ आ न नहा सकता था और दूसरे त्यों में भी  
 आन में कई तरह का फकावत था। फिर भी नाम ऊंच हान के कारण  
 जा कुछ आया उमका कामन मन्गममर के पूत्र जमा ही बना रही।  
 १९१४ १५ में १९१८ १९ तक तम मान का जिनता रम्पाट हुआ उमम  
 हर माल प्राय ७६ कराट र्पात अधिक का एकमपाट हुआ। यह का  
 असाधारण बात नहीं था पर माता चांग पहल की अण्या बटून कम  
 आए इसलिए और दगा में इमाग पावना पहल में बनी अधिक हा चना।  
 नडाई में पहले पाच वर्षों में यना १८० कराट के माना चानी आए थे।  
 पर इन पाच वर्षों में कुच ४६ करोट के आए। मानाना औसत प्राय  
 ११ कराड बठा।

भारतवय में हा उम समय इगक इगन और पूत्र अफ का में नलाई  
 के लव के रूपए मगाए जात थे। पात्र का बतन आति चान सदाई  
 के सामान खरीदन और गामन-मम्बधी मारा ध्यम बुकान के लिए इन  
 रूपयों की जरूरत पडती थी। इन रूपयों के बल भारत सरकार विना  
 पत्र में ब्रिटिश सरकार में स्टनिग पाती थी। १९१४ और १९१९ के  
 बीच इस प्रकार के लव का जा २४०,०००,००० पौंड हा चुका या  
 और लव जारा हा या भारतवय में अमरिका और ब्रिटिश गनिवेगा की  
 धार से उन तिनों कराडा के मान खराए गए थे इसके लिए भी गाम  
 व्यवस्था करनी पडी थी।

इन सब धारतों से महा करेगा के भाग बडन सी और टकमानों  
 में रूपय का इलाई जार गार से हान लगी। अग्रत १९०४ और मार्च  
 १९१६ के बीच जब करेगी की भाग बाधा अन्दी थी, प्राय १८०,  
 ०००,००० स्टर्डड घौम चानी करणए इल थे। पर अग्रत १९१६ और  
 मार्च १९१९ के बीच प्राय २००,०००,००० स्टर्डड लौग चाना का इस  
 काम में उपयोग हुआ।



३१ मार्च १९१४ को प्राय ६६ करोड के नोट चलण में थे । ३० नवम्बर १९१९ को यह तादात्त प्राय १८० करोड हो चली थी । नोट बढ़ते गए पर उनकी पुष्टी के लिए करेसी रिजर्व में जो सोना चादी रख जाते थे उनका अनुपात घटता गया । महासमर से पहले कानून था कि रिजर्व में मिक्चरिटीज या बागज अधिक से अधिक १४ करोड रुपए के रख जा सकते थे । धीरे धीरे यह हद्द बढ़ाकर १२० करोड कर दी गई जिसमें २० कराड के बागज भारत सरकार के रख जा सकते थे बाकी ब्रिटिश सरकार के । ३० नवम्बर १९१९ को नोटों के चलण की पुष्टी इस प्रकार थी —

	करोड रुपए
धानी (रुपए)	४७
सोना	३३
बागज	१००
	<hr/> १८०

नोटों के सम्बन्ध में दूसरी गई बात यह हुई कि १९१७ में डाई रुपए के धीरे १९१८ में एक रुपए के नोट जारी किए गए । ३१ मार्च १९१९ को डाई रुपए के नोट प्राय १ करोड ८४ लाख के धीरे एक रुपए के नोट प्राय १०१ करोड के चलण में थे ।

पहले सरकार की नीति यह रहती थी कि नोट मुनान के लिए सब साधारण की हर तरह का मुविधा दी जाय । महासमर में यह नीति काम न रह सकी । बागज की पुष्टी बागज से करके नोट बढ़ाए जा रहे थे इसलिए लोगो का मनो में वह विश्वास न रह गया था जो पहले था । लोग रुपए मांगते थे । १९१६ १७ में प्राय ३८ करोड धीरे १९१७ १८ में २८ करोड रुपए चलण में गए । १ अप्रैल १९१८ को रिजर्व में कुल १०११ करोड रुपए रह गए थे — अर्थात् महासमर से पूर्व कम-से-कम जितना रिजर्व में रखना निरापन्न समझा जाता था उससे प्राय आठ करोड कम । मार्च और अप्रैल १९१९ में महासमर-सम्बन्धी परिस्थिति कुछ चिन्ता जनक हो चली जिसका नतीजा यह हुआ कि लोग नोटों को इतना मुनाने लगे । जून के पहले सप्ताह में रुपए कुल प्राय चार करोड रह

गए थे। इस बीच में सरकार न अमरिका से कुछ चांगी एन की व्यवस्था कर ली थी और वह चांगी अब आन भा लगी। इसक फलस्वरूप परिस्थिति में सुधार होन लगा।

सरकार नोटा के बदले रूपए लेन के लिए सब जगह बाध्य नहीं थी पर आम तौर से दिया करता थी। पर यह सुविधा अब न रही। रेल या स्टीमर-द्वारा सिक्के का जान पर प्रतिबन्ध लग गया। डाक-द्वारा भी अब कोई उहे कही न भज सकता था। करेन्सी आफिसो में सरकार नाटो के बदले रूपए देन का अब भी बाध्य थी। पर वना भा अब मह विधान कर लिया गया कि एक आदमी का एक ही दिन इतन में ज्यादा रूपए न मिल सकेंगे। इन प्रतिबन्धों और रकावटों के कारण चलन में रूपयों का स्थान नाट ग्रहण करत गए। पर नोटा पर एसी हालत में बढ़ा लगना स्वाभाविक था। कुछ समय तक तो वनी वही यह बढ़ा १६ प्रतिशत तक रहा।

हम स्वाधीन होत और दूसरों के हाथ मान बचत या ननक लिए कुछ खर्च करते तो हम उनमें बचावकी स्थिति-जमे बागजी रूपए में न बचाव चादी या सोन में कराते। घड़ी भरक लिए यह मान लें कि हमारे लेनदार चादी या सोना लेन में असमर्थ होते और हम फिर भी उनके साथ कारोबार करना चाहते तो हम यह व्यवस्था कर सकते थे कि उन्हें कुछ समय के लिए अपना रूपया कज दें। पर हम ये पराधीन और इस पराधीनता के कारण हम दाम या भुगतान अपनी इच्छा या सुविधा नहीं बल्कि इंग्लण्ड की इच्छा और सुविधा के अनुसार लेन की विवण थे। यहाँ से घना हमन जो सोना जमा कर रखा था वह तो बागज हो ही गया अब इंग्लण्ड हम में जो कुछ लेन लगा उसका दाम भी बागज में ही चुकान लगा। करेन्सी रिजर्व की जोशासा स न में थी उसमें स्थिति के बागज रख दिए जाने और उनके मह इधर नोट निकाल लिए जाने। दोनों और परतबाजी थी।

महासमर छिड़ते ही आम प्रत्यक्ष लेन न सोन के निर्माण पर प्रतिबन्ध लगा लिया। मोना बाहर जा सकता था तो उर्मा हास्त में अब बिना मोना लिए किसी देश का काम चलनेवासा न था। १९१७-१८ में

भारतवर्ष में जापान और अमेरिका से कुछ सोना इस कारण आया था कि उह वहा माल खरीदना था और उस समय भारत सचिव से हुडी मिलने में कठिनाई थी। जब सोना दुलभ हो चला तब चादी की माग बढ़ी। पर चादा का उत्पादन १९१४ से ही कम होन लगा था। १९१० से १९१३ तक तमाम दुनिया की खानो से २२८,५५२ ००० औंस चादी निकली थी। १९१४ म १९१७ तक कुल चादी १७८ ०७५ ००० औंस निकली। इस कमी का खास कारण यह था कि मेक्सिको में राजनतिक अस्थिरता के कारण चादी का उत्पादन बहुत घट गया। इधर ब्रिटिश साम्राज्य और चीन आदि देशो की ओर से माग कही-से कही बढ़ गई। इसका नतीजा यह हुआ कि चादी महंगी हो गई। १९१५ में जा दाम २७। पेंस था वह अगस्त १९२७ में ४३ पेंस और एक ही महीना बाद ५५ पेंस हो चला था।

अमेरिका कनाडा और ग्रेट ब्रिटेन न चादी के दाम की घटावडी को रोकन की कुछ खास व्यवस्था की जिससे चादी का दाम कुछ समय तक अस्थिर और प्राय एक डालर बना रहा। मई १९१८ और अप्रैल १९१९ के बीच लन्दन में दाम ४७।।। और ५० पेंस के बीच रहा। मई १९१९ में अमेरिका और ग्रेट ब्रिटेन न चादी के बाजार से अपना अपना नियंत्रण उठा लिया जिसका नतीजा यह हुआ कि लन्दन में दाम फौरन ५८ पेंस हो गया। उसके बाद भी दाम बढ़ता ही गया और १७ दिसम्बर को ७८ पेंस तक पहुँच गया था।

चौथे अध्याय में कहा गया है कि जब चादी का दाम लन्दन बाजार में २४ पेंस होता तब एक रुपए की चादी की कीमत ६ पेंस से कुछ ऊपर होता। इसी प्रकार जब चादी का दाम ४३ पेंस हो गया तब रुपए की चादी की कीमत १६ पेंस के पास पहुँच गई अर्थात् चादी इतनी महंगी हात ही रुपए की अगली कीमत उसकी नकली कीमत के पास पहुँच गई। और जब चादी और भी महंगी हुई तब १६ पेंस में रुपया देना सरकार के लिए असम्भव हो गया।

बचाव के लिए सरकार न एवमर्चेंट को ऊँचा करना शुरू कर दिया।

२८ अगस्त १९१७ का टा० टा० का दाम १६३ पेंस से १७ पेंस कर लिया गया। उसका कुछ ही दिन बाद यह विनपति निकला कि भारत सरकार के नाम हुई की दर अब चाँदी के दाम पर निर्भर करेगी। १७ अगस्त १९१९ का दर १८ पेंस कर दी गई और १३ मई १९१६ तक यही दर रहा। अमेरिका ने चाँदी के बाजार पर स नियंत्रण उठा लिया, इस कारण चाँदी और भा महंगा हो चला और हुए की एकमूर्त-दर अब २० पेंस कर दी गई। उसका बाद ज्यादा ज्यादा चाँदी तब जाती गई यह दर ऊँची हुना गई। इसका मरानिब य ध —

१० अगस्त १९१८	२२ पेंस
१५ सितम्बर	२४ पेंस
२२ नवम्बर	२६ पेंस
१० दिसम्बर	२८ पेंस

३ सितम्बर १९१७ का चाँदी का व्यापारिया-द्वारा इम्पाट बन्द कर लिया गया। एकमपाट पर भा प्रतिबंध लगा लिया गया—बिना सरकार से लाइसेंस प्राप्त किए कोई माना या चाँदी के निर्यात इस देश से बाहर नहीं भज सकता था।

इम्पाट रोक गया था इस उद्देश से कि जो चाँदी समार में उपलब्ध थी उसका कोई हिस्सा भारतवर्ष के व्यापारियों के हाथ लगन न पावे। एकमपाट इसलिए रोक गया था कि लाग सिद्धियों का गला कर या या ही बाहर भजना न शुरू कर दें। २९ जून १९१७ के बाद तो चाँदी का मानक मिश्रण का और किसी काममें ले घाना भी जूम करार दे लिया गया।

चाँदी की कमी के कारण सरकार अदना साने का स्टाक भा बढान लगा। २९ जून १९१७ के बाद जा माना विदेश से आता उस मगानवाल को सरकार के हाथ बचाना पड़ता। अगस्त १९१६ में राज्य मिष्ट अथवा ब्रिटिश टकसाल की एक गाया बम्बई में माली गई और वहा सॉवरेन डाल जान लग। इसमें पहल कुछ एंगी मोटरों यहा की टकसालों में डाली जा चुकी थी जो प्राय हर बात में सौरन के ममान थीं। अथवा

१९१९ में रायल मिण्ट की यह शाला उठा दी गई ।

ऊपर कहा जा चुका है कि महासमर छिड़ते ही सरकार ने सावरेन देना बन्द कर दिया था । बाजार में सावरेन की कीमत बन्द चली और १५) से ऊपर रहन लगी । कानूनन सावरेन की कीमत अब भी वही १५) थी और सरकार उसके बदले १५) देन को ही बाध्य थी । सावरेन एसी हालत में करेसी के काम न आ सकत था । फिर भी रुपया का इतनी कमी हो रही थी कि दो बार सरकार का इस देश के कुछ हिस्सा में किसानों से माल खरीदन के लिए कई करोड़ के सोन के सिक्के (साँवरेन और देशी मोहरें) दन पड़े ।

गाति स्थापित हो जाने पर अमेरिका ने ६ जून १९१९ से सोन के एक्सपोर्ट की स्वतंत्रता दे दी । दक्षिण अफ्रीका और आस्ट्रिया का सोना भी बाहर जान के लिए स्वतंत्र हो गया । इसलिए इस दंग में सोन की आमद बढ़ चली । भारतवर्ष लन्दन में और अयन भी सोना खरीदन लगा । १५ मितम्बर १९१७ के बाद भारत सरकार इम्पोटर को सोन का दाम इस हिसाब से देने लगी कि हुडी की दर का घटा बढ़ी के अनुसार सोन की जा कीमत हा वह उम मिल जाया करे ।

अगस्त १९१९ के घात में भारत सरकार ने यह घोषित किया कि हर पल्लवारे उसकी आर से सोन की बिक्री की जायगी । इस बिक्री का नताजा यह हुआ कि बाजार में सोन का दाम गिर पडा । १५ अगस्त १९१९ को दाम था ३२ १२ रुपए तोला । २२ मितम्बर को यह गिर कर २७ रुपए रह गया था । फिर दाम में कुछ तजी आई और अक्टूबर के अन्त तक वह २६ १२ रुपए ताला हा चला । फिर कुछ ही दिन बाद वह गिर कर २८ ५ रुपए तोला रह गया । जब दाम ३२ १२ रुपए तोला था तब एक साँवरेन की कीमत २० ६ रुपए थी । जब दाम २८ ५ रुपए तोला रह गया तो साँवरेन की कीमत थी १७ ११ रुपए ।

चाँदी-सम्बन्धी परिस्थिति को बाव में लाने के लिए सरकार ने हर तरह की तदबीर की, पर चाँदी की कमी बनी ही रही और अन्त में उसे ब्रिटिश सरकार की माफत अमेरिका का दरवाजा खटखटाना पडा । अमेरिका के पास रिजर्व में बहुत कुछ चाँदी पड़ी हुई थी और उसने

उसका एक हिस्सा भारत-सरकार को देना स्वीकार कर लिया। २३ अगस्त १९१८ को वहाँ इसके लिए पिटभन एक्ट नामक विधान बना जिसका आशय था कि वहाँ की सरकार दूसरी सरकारों को इस रिजर्व में से ३५०,०००,००० चाँदी के डालर तक चाँदी बच सकती है। भारत को इसमें से २००,०००,००० ग्राम चाँदी मिली जिसका दाम प्रति औंस (स्वामित्व चाँदी) १०१' सेंट चुकाना पड़ा। यह चाँदी मिल जाने से भारत-सरकार का बहुत बड़ा मकट टल गया। समय-समय पर वह बाजार में भी चाँदी खराबती रही। सब मिला कर उमन ५३८,००५,००० औंस (स्टड्ड) चाँदी संगठो।

३० मई १९१९ को एक कमेटी की नियुक्ति हुई जिसके अध्यक्ष मि० बविगटन स्मिथ थे और जिसके एकमात्र भारतीयवासी सदस्य थे मि० लालबा मरवान जी दनाल। कमेटी को यह पचना था कि भारतीय प्रणाली पर महामर का क्या असर हुआ है—उस प्रणाली में कौन से हेरफेर की जरूरत है और किस प्रकार वहाँ के गौन्ड एक्मचेंज स्टड्ड में स्थिरत्व या स्थायित्व लाया जा सकता है। उस समय एक्मचेंज की दर २० पेंस थी।

२० दिसम्बर १९१९ को कमेटी की रिपोर्ट तयार हुई और भारत सचिव के पास भजी गई। मि० दलाल कमेटी का रिपोर्ट में महमन न हो सके और उहाँन अपन विचार चलग ही एक नोट में प्रकट किए।

कमेटी की खाम सिफारिश यह हुई कि रुपए की एक्मचेंज-दर मानने में बाध दी जाय और यह दर २४ पेंस (मोना) हो। इस हिमाज से सॉवरेन की कीमत १५) रु बजाय १०) होती। १८७३ से पहले एक्मचेंज का जो रट था उसे फिर से ले खान के लिए ऊँच एक्मचेंज क पण पातियों की दृष्टि में यह अवसर अनुपम था—इस हाथ से जान देना परदे सिरे की मूनना होती।

मि० दलाल ने इस धीगाधीगी का जोरों से विरोध किया। उन्होंने अकटप युक्तिगो ने यह प्रमाणित कर दिया कि एक्मचेंज की दर (१६ पेंस) में किसी प्रकार का परिवर्तन न होना चाहिए था।

कमेटी ने जिस दर की सिफारिश की थी वह थी २४ पेंस (माना)।

उस समय इंग्लैंड में मान का स्टैंड या मान नहीं था—नोटों के बदले सोना मिलना बंद हो गया था। सोना और स्टैलिंग दोनों दो चीजें हो रही थी। एक सौ ग्राँस खालिस सोना हो तो उसके ४२५ सावरेन ढाले जा सकते हैं—नायन यह कहना ठीक होगा कि ढाले जा सकते थे। पर १७ नवम्बर १९१९ को जो भाव था उसके अनुसार एक सौ ग्राँस खालिस सोना का दाम प्रायः ५४४ पौंड स्टैलिंग (कागजी) होता था। एक पौंड स्टैलिंग (कागजी) अब तक सावरेन के बराबर न होकर  $\frac{५३५}{४२५}$  अर्थात् ७८ सावरेन (सोना) के बराबर था। इसीको दूसरी तरह यो कह सकते हैं कि एक सावरेन (सोना) अब  $\frac{४२५}{५३५}$  अर्थात् १२८ पौंड स्टैलिंग (कागजा) के बराबर था। कमटी १ रुपए का स्टैलिंग से न बाधकर सोना से बाधन का सिफारिश की। २४ पस (साल) का अर्थ २४ पेंस स्टैलिंग नहा बल्कि इससे कहीं अधिक था।

एकमचेज को उठाने के पक्ष में दलील यह दी गई थी और दी जा रही थी कि चांदी का दाम ४३ पेंस से ऊपर हो जाना पर रुपए का प्रतीक मुद्रा रहना असम्भव था इसलिए रुपए का चलन में बाधन रखने के लिए उसकी एकमचेज टर को काफी ऊँचा रखने की जरूरत थी। भविष्य के सम्बन्ध में भी कमटी की धारणा थी कि चीजा के नाम नीध गिरनेवाला न था—और चांदी का दाम इतना ऊँचा रहनेवाला था कि रुपए की कीमत २ गिलिंग अर्थात् २४ पेंस (सोने में) से कम रखने से उसके चलन से निवृत्त जान का अर्थान्त घातु के रूप में विक्रय जान का डर था। साइबन्स आर्थिक विषय में बड़ दूरदर्शी मान जाते हैं। उन्होंने भी दो गिलिंग जसी ऊँची दर का समर्थन इस आधार पर किया कि संसार में चीजा के दामा के गिरने की कोई सम्भावना न थी—बल्कि सम्भावना यह थी कि दाम और भी ऊपर चढ़ेंगे। कहा गया कि इस महंगी की ध्यान में रखते हुए यह और भी जरूरी था कि रुपए की एकमचेज टर काफी ऊँची हो—जिससे भारत देश में महंगा की भीषणता कुछ हद तक कम हो सके।

वास्तव में—जसा कि मि० दलाल ने अपने वक्तव्य में कहा था—चांदी की तेजी ही एकमचेज की दर में वृद्धि का एकमात्र कारण नहा हो सकती था क्योंकि अधिकारियों की मंशा थी कि चांदी सस्ती हो

जाय तो भी एकसेजें १६ पेंस में काफी ऊंचा रखा जाय ।

पर जो श्लीन दी गई थी उसका मि० श्लान क गणों में जवाब यह था—

“महाममर की समाप्ति हो जाने पर भी चांगी क एकसपाट पर प्रतिबंध बना गया । अगर यह प्रतिबंध हटा दिया गया होता तो चांगी में इतनी तेजी न आता । भारतवर्ष आसानी से दूसरे देश के हाथ अपनी चांगी का एक सिक्का बच सकता था । इसका चांगी क नाम पर अच्छा अर्थ पड़ता । चांगी का एकसपाट हट जाने में और जो चांदी बच सकता था उसका चांगी का अयोग्य बन जाने से ही इस बाजार में आग लग गई ।

अगर यह मान भी लिया जाय कि चांगी का एकसपाट हान लायक न था तो भी लड़ाई क समय उसका नाम बन्द के कारण एकसेजें की उठाना मनामिब न था । भारत मविब का चांगी था कि जितन रुपय की उच्च जरूरत होती उनका भारत-सरकार के नाम हुन्नी करके इस काम में हाथ म्वाच लने—ध्यापारी अपना दना चांदा न भजकर, और जिस तरह चुका सकते चवान ।

जब तक समार मात्र में सान क एकसपाट पर प्रतिबंध था तब तक धाड समय क लिए एकसेजें में कुछ बढ़ि गायद अनिवाय-मा थी, पर जब अमेरिका न ६ जून १९१६ में प्रतिबंध हटा लिया और दक्षिण अफ्रीका का साना भा १० जुलाई १९१६ में लन्दन के बाजार में ब गक-टोक बिचन लगा तब कोई भी कारण न हो सकता था कि एकसेजें की दरना २० पेंस में २० पेंस कर दिया जाय ।

‘गोले और रुपय के बीच की दर जो बायम था वह महाममर क समय उठा भी गई । पर महाममर के बाद जो कुछ किया गया वह उसमें भी अनुचित था । गान्धि म्वापित हो जाने पर परिस्थिति बल ग गई । सडाई क कारण बड पमान पर शानेवाल तरह-तरह के लच की अर्थ कोई जरूरत न रह गई । । ध्यापार के लिए रुपय की माग अत्यन्त थी, पर यह माग पूरी करने में कहीं अधिक आवश्यक यह था कि यहा की जनता के मुना-मम्बर्था अधिकार की रक्षा की जाय मून्य का जा मान था लन्दन कर दिया गया था उस अविकल रहन दिया जाय । हर



हालत में—पर खास कर शान्ति स्थापित हो जान पर—चाहिए यह कि व्यापार उस मान या स्टण्डड के पीछे चले—न कि यह कि मान या स्टण्डड ही व्यापार का मनुवर्ती बन जाय। अगर उस स्टण्डड को बदल बिना व्यापार की माग पूरी नहीं की जा सकता थी तो 'मुनासिब या कि वह माग पूरी न की जाय यह हर्गिज मुनासिब न था कि माग तो पूरी की जाय और स्टण्डड को उठा दिया जाय।'

रुपया स्वयं हमारी मुद्रा प्रणाली में मूल्य का कोई मान न था। यह मान या स्टण्डड १६ पेंस जवलि ७ ५३३४४ ग्रन सोना था। रुपया कागजी नोट की तरह उसका प्रतिनिधि मात्र था। अगर चादी महगी हो गई थी तो सरकार को चाहिए था कि मान या माप दण्ड को ज्या का-स्यो' रखते हुए रुपए में चादी का परिमाण कम कर देनी या नए रुपए ढालती

'मान या मापदण्ड के लिए जिस धातु का उपयोग होता था वह महगी हो रही थी, इसलिए मान या मापदण्ड ही बदल दिया जाय—यह प्रस्ताव कितना अनुचित था यह नीचे के उदाहरण से स्पष्ट हो जायगा। नापन के गज को लीजिए। यह १६ गिरह या तीन फुट का होता है। मान लीजिए कि कहीं गज नापन के लिए रंगम का फीता काम में लाया जाता है (सोतह पेंस के लिए एक रुपए की तरह)। अचानक रंगम महगा हो गया और गज के लिए उसका उपयोग असम्भव है। ऐसी दशा में क्या बाले क्या करेंगे? अवश्य ही रंगम की जगह यह और किसी वस्तु का उपयोग करने लगेंगे जो रंगम से सस्ती हो। थोड़ी देर के लिए मान लीजिए कि इस विषय का नियंत्रण सरकार करती है और उसने रंगम की जगह सूत के व्यवहार की आज्ञा न देकर यह आज्ञा दे दी कि १६ अंगुल के बजाय अब २४ अंगुल का एक गज सम्भ्रा जायगा। ऐसी आज्ञा या विधान का एक फल यह होगा कि जो किसीको एक गज देने के लिए बाध्य है उसे १६ की जगह अब २४ अंगुल नाप कर देना होगा। एक्सचेंज रट बढ़ा देने का मतौजा भी ठीक ऐसा ही हुआ। पहले जो किसीको १) देने को बाध्य था उसे अब ७ ५३३४४ पेंस की जगह ११ ३००१६ पेंस सोना (या इसी हिसाब से अपने लत